ISBN: 978-93-5659-166-0

रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान



- राजीव अग्रवाल
- सुरेश कुमार द्विवेदी
- नेहा सिंह

रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान

राजीव अग्रवाल

डीन—शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,झाँसी

(उत्तरप्रदेश)

सुरेश कुमार द्विवेदी

एम०ए०(संस्कृत),एम० एड०

नेहा सिंह

बी०एल०एड०

रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान

राजीव अग्रवाल

सुरेश कुमार द्विवेदी

नेहा सिंह

E-Book संस्करण–2022

मूल्य: ₹99

ISBN: 978-93-5659-166-0

प्रकाशक:

नेहा सिंह

विकास नगर, अमानपुर, कर्वी, जिला–चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड–210205

मो.न.–8115873400

ई-मेल–manshisingh131998@gmail.com

प्राक्कथन

ऋषियों-महर्षियों की परम पवित्र तपस्थली भारत भूमि पर सदैव सन्त महात्माओं, महायोगियों, धर्माचार्यो, महापुरुषों का अवतरण होता रहा है। यहाँ धर्म पर आधारित शिक्षा भारतीय जीवन का आवश्यक अंग एवं संस्कृति की आधार शिला रही है। धार्मिक शिक्षा से लोगों में अच्छे संस्कार उत्पन्न होते रहे हैं और संस्कृति हमारी चेतना को परिष्कृत करती रही है। इससे हमारे आचार-विचार व व्यवहार भी परिष्कृत होते रहे हैं।

प्राचीन धार्मिक शिक्षा में धर्माचरणों, संस्कारों, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चरित्र, पारस्परिक संवेदनाओं एवं स्थापित नैतिक आदर्शों के लिए भी पर्याप्त स्थान रहा है। उसके महत्व को इस रूप में माना गया है कि उसका उद्देश्य तत्कालीन समाज एवं परिस्थितियों में चरित्र-निर्माण, धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति, सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन व्यावहारिक व सामाजिक जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति एवं भावी पीढ़ी के नव-निर्माण में निहित रहा है। हमारे महापुरुषों की प्रेरणा से भारतीय संस्कृति के मूल संस्कारों से सम्पन्न ब्रह्मचर्यव्रती विद्यार्थियों ने महामानव होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की और अपने ज्ञान ज्योति से विश्व को अलोकित किया।

वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक "**रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान**" है। इस पुस्तक को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में अध्ययन की पृष्ठभूमि, भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, शिक्षा के क्षेत्र में स्वयंसेवी संस्थाओं का योगदान, प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमांकन एवं शोध विधि पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में शोध समस्या से सम्बंधित कतिपय शोध अध्ययनों का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय में स्वामी विवेकानन्द तथा रामकृष्ण परमहंस का संक्षिप्त परिचय, रामकृष्ण मिशन की स्थापना एवं उद्देश्यों के विषय में अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक दर्शन का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में शिक्षा के क्षेत्र में रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक योगदान का वर्णनकिया गया है।

षष्ठअध्याय में रामकृष्ण मिशनके प्रयागराज स्थित केन्द्र में संचालित गदाधर अभ्युदय प्रकल्प के विषय में विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है।

सप्तमअध्याय में शोध के निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गयाहै।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित हैं। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है; जब तक की वह जनसामान्य के लिए सुलभ ना हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक मानव समाज के कल्याण के लिए सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थसूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक हैं। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक- 30/06/2022

पता - अतर्रा

राजीव अग्रवाल

सुरेश कुमार द्विवेदी

नेहा सिंह

विषयानुक्रमणिका

5.1 प्रस्तावना

5.2 रामकृष्ण मिशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में परिचालित कार्य

5.3 आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्य

5.4 भारत में रामकृष्ण मिशन के प्रमुख शैक्षिक संस्थान

5.4.1 रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ देवघर

5.4.2 रामकृष्ण मिशन स्टूडेन्ट्स होम मद्रास

5.4.3 बगलौर और कलकत्ता में स्टूडेन्ट्स होम

5.4.4 रामकृष्ण मिशन आश्रम, सरगाछी

5.4.5 सिस्टर निवेदिता गर्ल्स स्कूल, कोलकाता

5.4.6 रामकृष्ण मिशन शारदा विद्यालय, मद्रास

5.4.7 रामकृष्ण मिशन विद्यालय, कोयंबटूर

5.4.8 रामकृष्ण मिशन आश्रम सरिशा, पश्चिम बंगाल

5.4.9 रामकृष्ण मठ त्रिशूर, केरल

5.4.10 रामकृष्ण मिशन आश्रम शिलांग, मेघालय

5.4.11 रामकृष्ण मिशन का केरला के हरिजनों के बीच कार्य करना

5.4.12 रामकृष्ण मिशन आश्रम, नरेन्द्रपुर

5.4.13 रामकृष्ण मिशन सारदापीठ, बेलूर

5.4.14 रामकृष्ण मिशन बॉयज होम, रहरा कलकत्ता

5.4.15 रामकृष्ण मिशन विद्याशाला, मैसूर

5.4.16 रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द कॉलेज, मद्रास

5.4.17 रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, गोलपार्क, कोलकाता

5.4.18 विवेकानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन एक्सीलेंस, हैदराबाद

तालिका सूची

चित्र सूची

1.1 प्रस्तावना

वर्तमान की जड़ अतीत में होती है। भारत के अतीत का गौरव वर्तमान को उज्ज्वल करता हुआ उसके भविष्य को भी आकर्षक बना रहा है। प्राचीन भारत का निर्माण राजनैतिक , आर्थिक अथवा सामाजिक ने होकर धर्म क्षेत्र में हुआ। भारतीय संस्कृति धर्म की भावनाओं में ओत-पोत है। हमारे पूर्वजों ने जीवन को एक व्यापक दृष्टिकोण से और **सर्वभूते हितेरतः** होना ही अपना कर्त्तव्य समझा। भारत ने केवल भारतीया का ही विकास नहीं किया बल्कि उसने चिरमानव को जन्म दिया और मानवता का विकास करना ही उसकी सभ्यता का एक मात्र उद्देश्य हो गया।

विश्व की समस्त ज्ञान विधाओं का मूलोद्गम स्त्रोत भारत भूमि ही है। मनुष्य की प्रतिभा सर्वप्रथम विश्व के जिन वाङ्मयों के रूप में पुष्पित हुई है , उनमें प्रमुख हमारे वेद हैं। वैदिक कालीन शिक्षा ही हमारी भारतीय संस्कृति की परिचायिका है। प्राचीन भारत से मनुष्य की शिक्षा का उद्देश्य था आदर्शमय जीवन बनना। आदर्श की प्राप्ति करना संसार की सभी विभूतियों से उच्चतर समझा जाता था। भारत के सम्पूर्ण साहित्य , विज्ञान और कला सृजन ही उसके उत्कृष्टता का प्रमाण है।

भारतवर्ष की पुण्य भूमि युगों-युगों से महापुरुषों के आविर्भाव में कृतार्थ होती रही है , आज भी हो रही है और निश्चय ही भविष्य में भी होती रहेगी। हमारे देश में फैली बुराइयों , कुरीतियों रीति-रिवाजों को खण्ड-खण्ड कर भारतीय जनता का उत्थान करने में रामानुज , दयानंद सरस्वती और राजाराम मोहनराय जैसे अनेकों महापुरुषों ने अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया था। ऐसे ही एक विरले महान महापुरुष थे-स्वामी विवेकानन्द जी। जिस समय हमारी मातृभूमि ब्रिटिश हुकूमत के पांवों तले रौंदी जा रही थी , भारतीय जनता अंग्रेजों के अत्याचारों के साथ-साथ जातिवाद , छुआछूत, ऊँच-नीच जैसी बुराईयों की चक्की में पिस रही थी, ऐसे विकट काल में जनता को एकता का पाठ पढ़ाने के लिए सभी धर्मों की धार्मिक पुस्तकों के मर्म के माध्यम से स्वामीजी ने सम्पूर्ण भारत ही नहीं , वरन् विदेशों में भी अपनी अमृतवाणी द्वारा उपदेश दिए।

उन्होंने अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस जी के उपदेशों द्वारा सम्पूर्ण विश्व के लोगों को बताया कि शिक्षा का सच्चा अर्थ क्या है ? और त्याग व बलिदान की क्या परिभाषा है ? उन्होंने मानवीय समाज को जीवन के प्रत्येक पहलू पर अपनी अमृतवाणी में व्याख्यान दिए। उन्हें सही और गलत , श्रेष्ठ व निम्न में भेद बताया। ऐसा करने के लिए उन्होंने सभी धर्मों के आचार्यों की प्रशंसा के साथ-साथ आलोचना का भी सहारा लिया। वास्तविकता तो यही है कि स्वामी विवेकानन्द जी साधारण विचारक नहीं थे , बल्कि चलता-फिरता ज्ञान-कोष थे। उनके विचारों से भारतीय जनता ही नहीं , वरन् पाश्चात्य जगत भी बेहद प्रभावित हुआ था। उन्होंने ज्ञानकाण्ड को कर्मकाण्ड से अलग कर उसकी तात्विक मीमांसा की थी और उसे विकसित किया था। उन्होंने न केवल अपने देश का बल्कि दुनिया भर का इतिहास और दर्शन खंगाल डाला था।

'गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ' ने स्वामी जी के विषय में **'रोमां रोलां'** को पत्र में लिखा था कि ''यदि तुम भारत के विषय में जानना चाहते हों , तो विवेकानन्द का अध्ययन करो।''

''गुरू ज्ञान से निकला प्रकाश पुंज जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण और व्यक्तित्व के विकास की राह को रौशन करता है।''

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन का उपरोक्त कथन मानव जाति के विकास का मुख्य आधार है। मानव समस्त प्राणियों में बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ है , उसमें ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान की क्षुधा तृप्त करने की असीम अभिलाषा व क्षमता रहती है। वह विधि विषयों का अध्ययन , उनकी मीमांसा, अन्वेषण, विश्लेषण करने में असीम आनन्द का अनुभव प्राप्त करता है। ज्ञान द्वारा वह अपने लोक-परलोक के ऐहिक , लौकिक व धार्मिक जीवन तथा अपने व्यक्तित्व को सुधारने की आकांक्षा रखता है। आज का सामाजिक परिवेश द्रुत गति से परिवर्तित हो रहा है जिसके कारण सामाजिक समरसता के मुद्दे एवं मानव मूल्यों व कार्यकुशलता के निर्माण की समस्या जटिलता बनती जा रही है। इस बिन्दु को अपेक्षित गम्भीरता के साथ आलोचनात्मक चिंतन के घेरे में लाना है, जिससे मानव समाज को एक नये शैक्षिक आयाम की प्राप्ति हो सके।

मानव की उत्पत्ति के समय से ही यह प्रमाण मिले हैं कि जितनी भी उन्नति या प्रगति मानव जाति ने की है, वह उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ही सम्भव हो सकी है। मानव संसार के समस्त प्राणियों में उत्कृष्ट माना गया है। भाषा , चिन्तन, सृजनात्मकता, सहयोग, सामाजिक एवं व्यावसायिक लालसा जैसी मूल प्रवृत्तियों से अलंकृत मानव निःसंदेह रूप से सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य की इन्हीं सब मूल प्रवृत्तियों एवं अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास की प्रक्रिया को हम शिक्षा के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। शाब्दिक व्युत्पत्ति के आधार पर शिक्षा का तात्पर्य सीखने-सिखाने एवं बालक या मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों गुणों एवं क्षमताओं को बाहर निकालने तथा वाह्य शक्तियों के विकास की सकारात्मक प्रक्रिया से है।

परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत सत्य है। मानव स्वभावतः एक गतिशील प्राणी है अतः मानव समाज में सदैव परिवर्तन होता रहता है। किसी भी व्यवस्था या किसी भी समाज में समय सापेक्ष परिवर्तन आवश्यक है। समय के साथ हो रहे हर परिवर्तन के प्रति जागरूक न रहने वाला समाज भविष्य में अपना अस्तित्व खो देता है। समाज परिवर्तन सापेक्ष बनाने का सबसे प्रमुख साधन है शिक्षा , क्योंकि शिक्षा ही समाज को प्रत्येक परिवर्तन में समायोजित होने योग्य बनाती है। इसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार , चरित्र, आचरण, मनोवृत्ति, भावनाओं आदि में जो परिवर्तन होते हैं, उनके कारण व्यक्ति सुसंस्कृत एवं सभ्य जीवन व्यतीत करने की क्षमता के विकास के साथ-साथ अग्रोन्मुखी तथा परिवर्तनुकूल समाज का निर्माण भी करता है। शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जिससे मनुष्य अपने को परिवर्तनशील वातावरण में समायोजित करने में सक्षम होता है।

1.1.1 शिक्षा : विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है , तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्रायः कम होती है। धीरे-धीरे जब

बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नये अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरूप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य , अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार , विद्यालय समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक , माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किये जाते है जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक , व्यावसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है , जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है। ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित , चिन्तक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे। क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा , शासक-प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे। शुद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे। इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिन्तन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया। सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं , वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरूषार्थ स्थापित किये गये जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक है-ब्राह्मण-मोक्ष , क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शुद्र-धर्म। कालान्तर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणतत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ। जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च स्तर पर विद्यमान है , चाहे वह राजनीति में हो , शिक्षा में हो; या शासन में हो , यह

राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितान्त आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा सके, और इस सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके।

1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास

भारत में शिक्षा के प्रति रूझान प्राचीन काल से ही देखने को मिलता है। प्राचीन काल में गुरूकुलों, आश्रमों तथा बौद्ध मठों में शिक्षा ग्रहण करने की व्यवस्था होती थी। तत्कालीन शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा, तक्षशिला एवं वल्लभी की गणना की जाती है। मध्यकालीन भारत में शिक्षा मदरसों में प्रदान की जाती थी। मुगल शासकों ने दिल्ली , अजमेर, लखनऊ एवं आगरा में मदरसों का निर्माण करवाया। भारत में आधुनिक व पाश्चात्य शिक्षा की शुरूआत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल से हुई।

1.1.2.1 प्राचीनकाल में शिक्षा

भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा , मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी। यह व्यक्ति के लिये नहीं बल्कि धर्म के लिये थी। भारत की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परम्परा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है। डाॅ 0 अल्टेकर के अनुसार , वैदिक युग से लेकर अब तक भारतवासियों के लिये शिक्षा का अभिप्राय यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का स्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यों में यह हमारा मार्ग आलोकित करती है।

प्राचीन काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व दिया गया था। भारत ‘विश्वगुरु’ कहलाता था। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा को प्रकाशस्रोत , अन्तर्दृष्टि, अन्तर्ज्योति, ज्ञानचक्षु और तीसरा नेत्र आदि उपमाओं से विभूषित किया है। उस युग की यह मान्यता थी कि जिस प्रकार अन्धकार को दूर करने का साधन प्रकाश है , उसी प्रकार व्यक्ति के सब संशयों और भ्रमों को दूर करने का साधन शिक्षा है। प्राचीन काल में इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षा व्यक्ति को जीवन का यथार्थ दर्शन कराती है तथा इस योग बनाती है कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके जो कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारंभिक रूप हम ऋग्वेद में देखते हैं। ऋग्वेद युग की शिक्षा का उद्देश्य था तत्वसाक्षात्कार। ब्रह्मचर्य , तप और योगाभ्यास से तत्त्व का साक्षात्कार करने वाले ऋषि, विप्र, वैघस, कवि, मुनि, मनीषी के नामों से प्रसिद्ध थे। साक्षात्कृत तत्त्वों का मंत्रों के आकार में संग्रह होता गया वैदिक संहिताओं में , जिनका स्वाध्याय , सांगोपांग अध्ययन, श्रवण, मनन और निदिध्यासन वैदिक शिक्षा रही।

विद्यालय 'गुरुकुल', 'आचार्यकुल', 'गुरुगृह' इत्यादि नामों से विदित थे। आचार्य के कुल में निवास करता हुआ , गुरुसेवा और ब्रह्मचर्य व्रतधारी विद्यार्थी षडंग वेद का अध्ययन करता था। शिक्षक को 'आचार्य' और 'गुरु' कहा जाता था और विद्यार्थी को ब्रह्मचारी , व्रतधारी, अंतेवासी, आचार्यकुलवासी। मंत्रों के द्रष्टा अर्थात् साक्षात्कार करने वाले ऋषि अपनी अनुभूति और उसकी व्याख्या और प्रयोग को ब्रह्मचारी , अंतेवासी को देते थे। गुरु के उपदेश पर चलते हुए वेदग्रहण करने वाले व्रतचारी श्रुतर्षित होते थे। वेदमंत्र कंठस्थ किए जाते थे। आचार्य स्वर से मंत्रों का परायण करते और ब्रह्मचारी उनको उसी प्रकार दोहराते चले जाते थे। इसके पश्चात् अर्थबोध कराया जाता था। ब्रह्मचर्य का पालन सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य था। स्त्रियों के लिए भी आवश्यक समझा जाता था। आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करने वाले विद्यार्थी को नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहते थे। ऐसी विद्यार्थिनी ब्रह्मवादिनी कही जाती थी।

यज्ञों का अनुष्ठान विधि से हो , इसलिए होता , उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा को आवश्यक शिक्षा दी जाती थी। वेद , शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, ज्योतिष और निरुक्त उनके पाठ्य होते थे। पाँच वर्ष के बालक की प्राथमिक शिक्षा आरंभ कर दी जाती थी। गुरुगृह में रहकर गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता उपनयन संस्कार से प्राप्त होती थी। 8 वें वर्ष में ब्राह्मण बालक के , 11 वें वर्ष क्षत्रिय के और 12वें वर्ष में वैश्य के उपनयन की विधि थी। अधिक से अधिक यह 16, 22 और 24 वर्षों की अवस्था में होता था। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्यार्थी गुरुगृह में 12 वर्ष वेदाध्ययन करते थे। तब वे स्नातक कहलाते थे। समावर्तन के अवसर पर गुरुदक्षिणा देने की प्रथा थी। समावर्तन के पश्चात् भी स्नातक स्वाध्याय करते रहते थे। नैष्ठिक ब्रह्मचारी आजीवन अध्ययन करते थे। समावर्तन के सम ब्रह्मचारी दंड, कमंडलु, मेखला आदि को त्याग देते थे। ब्रह्मचर्य व्रत में जिन-जिन वस्तुओं का निषेध था अब से उनका उपयोग हो सकता था। प्राचीन भारत में किसी प्रकार की परीक्षा नहीं

होती थी और न कोई उपाधि ही दी जाती थी। नित्य पाठ पढ़ाने के पूर्व ब्रह्मचारी ने पढ़ाए हुए पाठ को समझा है और उसका अभ्यास नियम से किया है या नहीं , इसका पता आचार्य लगा लेते थे। ब्रह्मचारी अध्ययन और अनुसंधान में सदा लगे रहते थे तथा वाद-विवाद और शास्त्रार्थ में सम्मिलित होकर अपनी योग्यता का प्रमाण देते थे।

भारतीय शिक्षा में आचार्य का स्थान बड़ा ही गौरव का था। उनका बड़ा आदर और सम्मान होता था। आचार्य पारंगत विद्वान , सदाचारी, क्रियावान, निःस्पृह, निरभिमान होते थे और विद्यार्थियों के कल्याण के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। अध्यापक , छात्रों का चरित्र निर्माण, उनके लिए भोजनवस्त्र का प्रबंध , रुग्ण छात्रों की चिकित्सा , शुश्रूषा करते थे। कुल में सम्मिलित ब्रह्मचारी मात्र को आचार्य अपने परिवार का अंग मानते थे और उनसे वैसा ही व्यवहार रखते थे। आचार्य धर्मबुद्धि से निःशुल्क शिक्षा देते थे।

विद्यार्थी गुरु का सम्मान और उनकी आज्ञा का पालन करते थे। आचार्य का चरणस्पर्श कर दिनचर्या के लिए प्रातःकाल ही प्रस्तुत हो जाते थे। गुरु के आसन के नीचे आसन ग्रहण कर सुसंयत वेश में रहना , गुरु के लिए दातौन इत्यादि की व्यवस्था करना , उनके आसन को उठाना और बिछाना , स्नान के लिए जल ला देना , समय पर वस्त्र और भोजन के पात्र को साफ करना, ईधन संग्रह करना, पशुओं को चराना इत्यादि छात्रों के कर्त्तव्य माने जाते थे। विद्यार्थी ब्रह्ममुहूर्त में उठते थे और प्रातः कृत्यों से निवृत्त होकर , स्नान, संध्या, होम आदि कर लेते थे। फिर अध्ययन में लगे जाते थे। इसके उपरांत भोजन करते थे और विश्राम के पश्चात् आचार्य के द्वारा दिए गये पाठ का अध्ययन करते थे। सायंकाल समिधा एकत्र कर ब्रह्मचारी संध्या और होम का अनुष्ठान करते थे। विद्यार्थी के लिए भिक्षाटन अनिवार्य कृत्य था। भिक्षा से प्राप्त अन्न गुरु को समर्पित कर विद्यार्थी मनन और निदिध्यासन में लग जाते थे। वेदों का अध्ययन श्रावण पूर्णिमा को उपाकर्म से प्रारंभ होकर पौष पूर्णिमा को उपसर्जन से समाप्त होता था। शेष महीनों में अधीत पाठों की आवृत्ति , पुनरावृत्ति होती रहती थी। विद्यार्थी पृथक् पृथक् ग्रहण करते थे , एक साथ नहीं। प्रतिपदा और अष्टमी को अनध्याय होता था। गाँव, नगर अथवा पडोस में आकस्मिक विपत्ति से और शिष्टजनों के आगमन से विशेष अनध्याय होते थे। अनध्याय में अधीत वेदमंत्रों की पुनरावृत्ति और विषयांतर का अध्ययन निषिद्ध न थे। विनय के नियमों का उल्लंघन करने वाले विद्यार्थी को दंड देने को परिपाटी थी।

पाठ्यक्रम के विस्तार के साथ वेदों और वेदांगों के अतिरिक्त साहित्य , दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण और चिकित्साशास्त्र इत्यादि विषयों का अध्यापन होने लगा। टोल पाठशाला , मठ और विहारों में पढ़ाई होती थी। काशी , तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वलभी, ओदंतपुरी, जगछल, नदिया, मिथिला, प्रयाग, अयोध्या आदि शिक्षा के केंद्र थे।

1.1.2.2 मध्यकाल में शिक्षा

मध्यकाल में मुस्लिम काल के शिक्षाविदों , धार्मिक व्यक्तियों, चिन्तकों व विचारकों का ध्यान शिक्षा की ओर गया। क्योंकि बिना अरबी भाषा के ज्ञान को प्राप्त किए आम मुसलमान न तो 'कुरान' को पढ़ या कंठस्थ कर सकता था , न शासन के नियमों को समझ सकता था और न ही मुहम्मद साहब द्वारा दिखाये गये मार्ग पर विधिवत् चल सकता था। उसके जीवन में शिक्षा का बड़ा महत्त्व था। इस काल में इस्लामी शिक्षा का सर्वांगीण विकास हुआ। शिक्षा का मुख्य आधार धर्म था।

भारत में तुर्की सत्ता की स्थापना के उपरान्त मुसलमानों ने शिक्षा के प्रसार हेतु अनेक प्रकार की संस्थाओं जैसे कि मकतब , मदरसे, खानकाहों की स्थापना की। मुसलमान परिवारों में शिशु की शिक्षा 'विस्मिल्लाह खानी' या मकतब संस्कार से प्रारम्भ होती थी। शिशु की आयु जब 4 वर्ष, 4 माह, 4 दिन की हो जाती थी तो उसके माता-पिता को धूमधाम से विस्मिल्लाहखानी के अक्षर बोध का संस्कार मौलवी या काजी द्वारा सम्पन्न करवाते थे। इस अवसर पर शिशु से वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'आलिफ' तख्ती पर लिखवाया जाता था। इसके बाद सम्पन्न परिवारों में शिशु को प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिए शिक्षक नियुक्त किये जाते थे। इन शिशुओं का ज्ञान वर्णमाला कुरान के पाठ सुलेख व्याकरण आदि विषयों तक ही सीमित रहता था। इसके पश्चात् कुछ बड़े होने पर उन्हें साहित्य इतिहास तथा नीति शास्त्र इत्यादि विषयों का अध्ययन करना पड़ता था। वे पदनामा, आमदनामा, गुलिस्तां, बोस्तां, हार-ए-दानिश तथा सिकन्दरनामा का अध्ययन करते थे , जो विद्यार्थी उसके उपरान्त शिक्षा नहीं ग्रहण करते थे उन्हें मुंशी तथा जो उच्च शिक्षा ग्रहण करते थे , उन्हें मौलाना, मौलवी या फाजिल की पदवियाँ दी जाती थी जो विद्यार्थी केवल अरबी की शिक्षा प्राप्त करते थे उन्हें कुरान के अतिरिक्त मुहम्मद साहब की जीवनी से सम्बन्धित ग्रन्थ कुरान की टीकाएँ तसउफ्फ

दर्शन तथा अन्य विषयों का अध्ययन करना पड़ता था। इस काल में शिक्षा प्रणाली में शिक्षा संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान था। सम्पन्न परिवारों के घरों की बैठकों में परिवार व आस-पास के शिशु प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इस बैठक को 'मकतब' कहते थे। इस मकतब के शिक्षक के भरण पोषण का उत्तरदायित्व उस परिवार पर ही रहता था जिन परिवारों के बच्चे वहाँ शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। वे भी इसकी आर्थिक सहायता करते थे। शिक्षा का दूसरा केन्द्र मदरसा था। राज्य द्वारा स्थापित मदरसों को राज्य की ओर से वित्तीय सहायता मिलती थी ताजुल मआसिर के रचयिता हसन निजामी के अनुसार मुहम्मद गोरी ने अजमेर में अनेक मदरसों की स्थापना की। भारत में यह मदरसे अपने ही ढंग के थे। लखनौती में मुहम्मद बिन मुहम्मद गोरी के नाम पर दिल्ली में मुइज्जी मदरसें की स्थापना की। इसी नाम का एक मदरसा बदांयु में स्थापित हुआ। रजिया ने नासिरिया मदरसे की स्थापना दिल्ली में की। वामिनहाज को उसका आचार्य नियुक्त किया। कड़ाके कवि मुतहर ने अपनी दीवान में लिखा है कि फिरोजशाह ने अनेक मदरसों की स्थापना की उसने स्वयं दिल्ली के हौज-ए-खास के पास फिरोजशाही मदरसा देखकर उसका वर्णन किया। जलालुद्दीन रूमी इस मदरसे के प्राचार्य थे वे कुरान को सात नियमों में पढ़ सकते थे तथा 14 विधाएं जानते थे। हदीस के 5 प्रसिद्ध संग्रहों का उन्हें ज्ञान था। यहाँ के विद्यार्थियों को तफसीह , फिकह व हदीस पढ़ाया करते थे। सिकन्दर लोदी ने मथुरा व नरवल में मदरसों की स्थापना की। इसी काल में उसने सम्भल में मदरसा स्थापित किया तथा वहाँ शेख अब्दुल्ला को प्राचार्य नियुक्त किया। इसी प्रकार देश के विभिन्न भागों में मुसलमान अमीरों व शासकों ने अनेक मदरसों की स्थापना की। सुबह-उल-असह के लेखक के अनुसार केवल दिल्ली में हजारों मदरसे थे। जिनमें से एक हजार मदरसे शफियों तथा हनफियों के थे।

शिक्षा का तृतीय महत्त्वपूर्ण केन्द्र सूफी सन्तों की खनकाह थी। अजमेर में शेख मुइउद्दीन चिश्ती की खनकाह दिल्ली में शेख निजामुद्दीन औलिया की खनकाह सीदी मौला की खनकाह शिक्षा के सुप्रसिद्ध केन्द्र थे। दिल्ली व उसके समीप लगभग दो हजार खनकाह सूफी सन्तों की थी। जहाँ देश विदेश से विद्यार्थी सूफी मत व आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इस काल में प्रत्येक शहर में उपरोक्त तीन प्रकार की शिक्षा संस्थाएँ थी। इस काल में विद्यार्थियों को राज्य की ओर से वित्तीय सहायता तथा वजीफे दिये जाते थे। उनके

पाठ्यक्रम में कुरान , हदीस, तसुउफ्फ, तफसीर, ज्योतिशास्त्र, दर्शन, गणित, फिकह, न्याय-शास्त्र, हदीस, काव्य-शस्त्र, व्याकरण, प्राकृतिक दर्शन, धर्मशास्त्र सुलेख इत्यादि अनेक विषय हुआ करते थे। विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए देश-विदेश से अध्यापक व दार्शनिक आते रहते थे।

12वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में तुर्क आक्रमणकारियों ने हिन्दू मंदिरों , बौद्ध विहारों तथा विश्वविद्यालयों पर आक्रमण कर शिक्षा के इन महान केन्द्रों को विध्वंस कर दिया। तुर्की आक्रमणकारियों का झंझावात निकल जाने के उपरान्त एक बार पुनः मठो , मंदिरों, पाठशालाओं, टोली में 'हिन्दु शिक्षा' दी जाने लगी। प्रारम्भिक तथा उच्च शिक्षा टोली में दी जाती थी। यहाँ विद्यार्थी 8 वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक अध्ययन किया करते थे। हिन्दू परिवारों में बालक की शिक्षा 5 या 6 वर्ष की आयु में प्रारम्भ होती थी। इस काल में हिन्दू शिक्षा के महान केन्द्र बनारस , मिथिला, नदिया, कश्मीर, विक्रमशिला, गुजरात आदि थे। बनारस वेदान्त संस्कृत साहित्य व व्याकरण की शिक्षा का महान केन्द्र था। इस काल में शिक्षा का महत्त्व केवल उच्च वर्ग व मध्यम वर्ग में ही था। इस काल में शिक्षा एवं साहित्य की अत्यधिक प्रगति हुई। दिल्ली के सुल्तानों में लगभग सभी पढ़े-लिखे थे। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से किसी न किसी प्रकार से शिक्षा को प्रोत्साहन देते रहे।

1.1.2.3 आधुनिक काल में शिक्षा

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्मप्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों से डाली गई। उन्होंने कई विद्यालय स्थापित किए। प्रारंभ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा। धीरे-धीरे कार्यक्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढ़ाए जाते थे। रविवार को विद्यालय बंद रहता था। अनेक शिक्षक छात्रों की पढ़ाई अनेक श्रेणियों में कराते थे। अध्यापन का समय नियत था। साल भर में छोटी बड़ी अनेक छुट्टियाँ हुआ करती थीं।

प्रायः 150 वर्षों के बीतते बीतते व्यापारी ईस्ट इंडिया कंपनी राज्य करने लगी। विस्तार में बाधा पड़ने के डर से कंपनी शिक्षा के विषय में उदासीन रही। फिर भी विशेष कारण

और उद्देश्य से 1780 में कलकत्ते में 'कलकत्ता मदरसा' और 1791 में बनारस में 'संस्कृत कालेज' कंपनी द्वारा स्थापित किए गए। धर्मप्रचार के विषय में भी कंपनी की पूर्वनीति बदलने लगी। कंपनी अब अपने राज्य के भारतीयों को शिक्षा देने की आवश्यकता को समझने लगी। 1813 के आज्ञापत्र के अनुसार शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चय किया गया। किस प्रकार की शिक्षा दी जाए, इस पर प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों में मतभेद रहा। वाद-विवाद चलता चला। अंत में लार्ड मेकाले के तर्क वितर्क और राजा राममोहन राय के समर्थन से प्रभावित हो 1835 ई0 में लार्ड बेंटिक ने निश्चय किया कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य और यूरोपीय इतिहास, विज्ञान, इत्यादि की पढ़ाई हो और इसी में 1813 के आज्ञापत्र में अनुमोदित धन का व्यय हो। प्राच्य शिक्षा चलती चले , परंतु अंग्रेजी और पश्चिमी विषयों के अध्ययन और अध्यापन पर जोर दिया जाए। पाश्चात्य रीति से शिक्षित भारतीयों की आर्थिक स्थिति सुधरते देख जनता इधर झुकने लगी। अंग्रेजी विद्यालयों में अधिक संख्या में विद्यार्थी प्रविष्ट होने लगे क्योंकि अंग्रेजी पढ़े भारतीयों को सरकारी पदों पर नियुक्त करने की नीति की सरकारी घोषणा हो गई थी। सरकारी प्रोत्साहन के साथ साथ अंग्रेजी शिक्षा को पर्याप्त मात्रा में व्यक्तिगत सहयोग भी मिलता गया। अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार के साथ साथ अधिक कर्मचारियों की और चिकित्सकों, इंजीनियरों और कानून जानने वालों की आवश्यकता पड़ने लगी। उपयोगी शिक्षा की ओर सरकार की दृष्टि गई। मेडिकल , इंजीनियरिंग और लॉ कालेजों की स्थापना होने लगी। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए ज्योतिबा फुले ने 1848 में एक स्कूल खोला। यह इस काम के लिए देश में पहला विद्यालय था। लड़कियों को पढाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने कुछ दिन स्वयं यह काम करके अपनी पत्नी सावित्री को इस योग्य बना दिया। उच्च वर्ग के लोगों ने आरंभ से ही उनके काम में बाधा डालने की चेष्टा की , किंतु जब फुले आगे बढ़ते ही गए तो उनके पिता पर दबाव डालकर पति-पत्नी को घर से निकालवा दिया इससे कुछ समय के लिए उनका काम रूका अवश्य , पर शीघ्र ही उन्होंने एक के बाद एक बालिकाओं के तीन स्कूल खोल दिए। स्त्री शिक्षा पर ध्यान दिया जाने लगा।

1853 में शिक्षा की प्रगति की जाँच के लिए एक समिति बनी। 1854 में बुड के शिक्षासंदेश पत्र में समिति के निर्णय कंपनी के पास भेज दिए गए। संस्कृत , अरबी और फारसी

का ज्ञान आवश्यक समझा गया। औद्योगिक विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना का प्रस्ताव रखा गया। प्रांतों में शिक्षा विभाग अध्यापक प्रशिक्षण , नारी शिक्षा इत्यादि की सिफारिश की गई। 1857 में स्वतंत्रता युद्ध छिड़ गया जिससे शिक्षा की प्रगति में बाधा पड़ी। प्राथमिक शिक्षा उपेक्षित ही रही। उच्च शिक्षा की उन्नति होती गई। 1857 में कलकत्ता, बंबई और मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित हुए।

मुख्यतः प्राथमिक शिक्षा की दशा की जाँच करते हुए शिक्षा के प्रश्नों पर विचार करने के लिए 1882 में सर विलियम विल्सन हंटर की अध्यक्षता में भारतीय शिक्षा आयोग की नियुक्ति हुई। आयोग ने प्राथमिक शिक्षा के लिए उचित सुझाव दिए। सरकारी प्रयत्न को माध्यमिक शिक्षा से हटाकर प्राथमिक शिक्षा के संगठन में लगाने की सिफारिश की। सरकारी माध्यमिक स्कूल प्रत्येक जिले में एक से अधिक न हो ; शिक्षा का माध्यम माध्यमिक स्तर में अंग्रेजी रहे। माध्यमिक स्कूलों के सुधार और व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार के लिए आयोग ने सिफारिशें की। सहायता अनुदान प्रथा और सरकारी शिक्षा विभागों का सुधार , धार्मिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा, मुसलमानों की शिक्षा इत्यादि पर भी आयोग ने प्रकाश डाला।

आयोग की सिफारिशों से भारतीय शिक्षा में उन्नति हुई। विद्यालयों की संख्या बढ़ी। नगरों में नगर पालिका और गाँवों में जिला परिषद् का निर्माण हुआ और शिक्षा आयोग ने प्राथमिक शिक्षा को इन पर छोड़ दिया परंतु इससे विशेष लाभ न हो पाया। प्राथमिक शिक्षा की दशा सुधर न पाई। सरकारी शिक्षा विभाग माध्यमिक शिक्षा की सहायता करता रहा। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही रही। मातृभाषा की उपेक्षा होती गई। शिक्षा संस्थाओं और शिक्षितों की संख्या बढ़ी , परंतु शिक्षा का स्तर गिरता गया। देश की उन्नति चाहने वाले भारतीयों में व्यापक और स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता का बोध होने लगा। स्वतंत्रताप्रेमी भारतीयों और भारतप्रेमियों ने सुधार का काम उठा लिया। 1870 में बाल गंगाधर तिलक और उनके सहयोगियों द्वारा पूना में फर्ग्युसन कॉलेज, 1886 में आर्यसमाज द्वारा लाहौन में दयानंद ऐंग्लो वैदिक कालेज और 1898 में काशी में श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा सेंट्रल हिंदू कालेज स्थापित किए गए।

1894 में कोल्हापुर रियासत के राजा छत्रपति साहूजी महाराज ने दलित और पिछड़ी जाति के लोगों के लिए विद्यालय खोले और छात्रावास बनवाए। इससे उनमें शिक्षा का प्रचार हुआ और सामाजिक स्थिति बदलने लगी। 1894 से 1922 तक पिछड़ी जातियों समेत समाज के सभी वर्गों के लिए अलग-अलग सरकारी संस्थाएं खोलने की पहल की। यह अनूठी पहल थी उन जातियों को शिक्षित करने के लिए , जो सदियों से उपेक्षित थीं , इस पहल में दलित-पिछड़ी जातियों के बच्चों की शिक्षा के लिए खास प्रयास किये गए।

1901 में लार्ड कर्जन ने शिमला में एक गुप्त शिक्षा सम्मेलन किया था जिसमें 152 प्रस्ताव स्वीकृत हुए थे। इसमें कोई भारतीय नहीं बुलाया गया था और न सम्मेलन के निर्णयों का प्रकाशन नही हुआ। इसको भारतीयों ने अपने विरुद्ध रचा हुआ षडयंत्र समझा। कर्जन को भारतीयों का सहयोग न मिल सका। प्राथमिक शिक्षा की उन्नति के लिए कर्जन ने उचित रकम की स्वीकृति दी , शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की तथा शिक्षा अनुदान पद्धति और पाठ्यक्रम में सुधार किया। कर्जन का मत था कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही दी जानी चाहिए।

लार्ड कर्जन ने विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा की उन्नति के लिए 1902 में भारतीय विश्वविद्यालय आयोग नियुक्त किया। पाठ्यक्रम , परीक्षा, शिक्षण, कालेजों की शिक्षा , विश्वविद्यालयों का पुर्नगठन इत्यादि विषयोंपर विचार करते हुए आयोग ने सुझाव उपस्थित किए। इस आयोग में भी कोई भारतीय न था। इस पर भारतीयों में क्षोभ बढ़ा। उन्होंने विरोध किया। 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय कानून बना। पुरातत्व विभाग की स्थापना से प्राचीन भारत के इतिहास की सामग्रियों का संरक्षण होने लगा। 1905 के स्वदेशी आंदोलन के समय कलकत्ते में जातीय शिक्षा परिषद की स्थापना हुई और नेशनल कालेज स्थापित हुआ जिसके प्रथम प्राचार्य अरविंद घोष थे। बंगाल टेकनिकल इन्स्टीट्यूट की स्थापना भी हुई। 1911 में गोपाल कृष्ण गोखले ने प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य करने का प्रयास किया। अंग्रेज सरकार और उसके समर्थकों के विरोध के कारण वे सफल न हो सके। 1916 तक भारत में पाँच विश्वविद्यालय थे। अब सात नए विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। 1921 से नए शासन सुधार कानून के अनुसार सभी प्रांतों में शिक्षा भारतीय मंत्रियों के अधिकार में आ गई।

अगले शासन सुधार के लिए साइमन आयोग की नियुक्ति हुई। हर्टाग समिति इस आयोग का एक आवश्यक अंग थी। इसका नाम था भारतीय शिक्षा की समस्याओं की सागोपांग जाँच करना। समिति ने रिपोर्ट में 1918 से 1927 के प्रचलित शिक्षा के गुण और दोष का विवेचन किया और सुधार के लिए निर्देश दिया।

1930-1935 के बीच संयुक्त प्रदेश में बेकारी की समस्या के समाधान के लिए समिति बनी। व्यावहारिक शिक्षा पर जोर दिया गया। इंटरमीडिएट की पढ़ाई के दो वर्षों में से एक वर्ष स्कूल के साथ कर दिया जाए , जिससे पढ़ाई 11 वर्ष की हो। बाकी एक वर्ष बी 0ए0 के साथ जोड़कर बी 0ए0 पाठ्यक्रम तीन वर्ष का कर दिया जाए। माध्यमिक छह वर्ष के दो भाग हों- तीन वर्ष का निम्न माध्यमिक और तीन वर्ष का उच्च माध्यमिक। अंतिम तीन वर्षों में साधारण पढ़ाई के साथ साथ कृषि, शिल्प, व्यवसाय सिखाए जाएँ। समिति की ये सिफारिशें कार्यान्वित नहीं हुई।

1937 में शिक्षा की एक योजना तैयार की गई जो 1938 में बुनियादी शिक्षा के नाम से प्रसिद्ध हुई। सात से 11 वर्ष के बालक बालिकाओं की शिक्षा अनिवार्य हो। शिक्षा मातृभाषा में हो। हिंदुस्तानी पढ़ाई जाए। चरखा , करघा, कृषि, लकड़ी का काम शिक्षा का केंद्र हो जिसकी बुनियाद पर साहित्य, भूगोल, इतिहास, गणित की पढ़ाई हो। 1945 में इसमें परिवर्तन किए गए और परिवर्तित योजना का नाम रखा गया 'नई तालीम'। इसके चार भाग थे- (1) पूर्व बुनियादी, (2) बुनियादी, (3) उच्च बुनियादी और (4) वयस्क शिक्षा। हिंदुस्तानी तालीमी संघ (भारतीय शैक्षिक संघ) पर इसका संचालन भार छोड़ दिया गया।

1945 में द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होते होते सार्जेंट योजना का निर्माण हुआ। छह से 14 वर्ष की अवस्था के बालकों तथा बालिकाओं के लिए अनिवार्य शिक्षा हो। जूनियर बेसिक स्कूल, सीनियर बेसिक स्कूल, साहित्यिक हाईस्कूल और व्यावसायिक हाईस्कूल की पढ़ाई 11 वर्ष की अवस्था से 17 वर्ष की अवस्था तक हो। इसके बाद विश्वविद्यालय में प्रवेश हो। डिग्री पाठ्यक्रम तीन वर्ष का हो। इंटरमीडिएट कक्षा समाप्त कर दी जाए। पाँच से कम अवस्था वालों के लिए नर्सरी स्कूल हो। माध्यम मातृभाषा हो।

1.1.3 वर्तमान काल में शिक्षा की समस्याएँ

वर्तमानकाल में उपस्थित शैक्षिक समस्याओं को जानना व अंकित करना आवश्यक है ये समस्याएँ निम्न है-

1.1.3.1 ब्रिटिश नीति का प्रभाव

- शिक्षा एक प्रकार की बौद्धिक अभियांत्रिकी जैसी होती है। अंग्रेजों ने इस बात को समझकर इसका प्रभावशाली उपयोग किया और जरूरी तरीकों का इस्तेमाल करते हुए शिक्षा के उद्देश्य, उसकी विषयवस्तु, उसकी प्रक्रिया और उपयोग को ऐसे साँचे में ढाल सकने में समर्थ हो गये कि हमारे पास जो कुछ ज्ञान के रूप में था उसकी स्मृति का लोप शुरू हो गया। उसे अप्रासंगिक ही नहीं करार दिया , बल्कि हम उसे हिकारत की नजर से देखने लगे।
- धीरे-2 भारतीय ज्ञान परम्परा बोझ और ग्लानि का कारण बनती गई। उसे अतीत या इतिहास की वस्तु मानते हुए ज्ञान के संग्रहालय को सुपुर्द करने योग्य मान लिया। उसे कभी-2 पूजनीय जरूर माना जाता रहा है, पर अक्सर उससे छुटकारा पाने में ही भलाई समझी जाने लगी।
- यह सब जिस तरह से हुआ और जिस मजबूती से स्थापित किया गया वह अद्भुत किस्म का सफल बौद्धिक उपनिवेशीकरण था , जिसके जाल से निकलना असंभव सा हो गया।

1.1.3.2 पश्चिमी अन्धानुकरण

आधुनिक होने की जरूरत तो स्वाभाविक है , पर इसके रास्ते अपनी परम्परा से भी निकलते है। परम्परा सिर्फ पुराने को ज्यो का त्यो ढोना नहीं है , जैसा हम अक्सर मान बैठते है, उसमें जो पहले से है उससे आगे जाना भी शामिल है। इस तरह परम्परा आधुनिकता के विरूद्ध नहीं है। साथ ही आधुनिकीकरण को हमने सिर्फ पश्चिमीकरण मान लिया और बिना किसी आलोचना और समीक्षा के परम्परा और आधुनिकता को परस्पर विरोधीमान लिया।

परम्परा यानी भारतीय आधुनिकता की विरोधी ठहरा दी गयी और हमने अपनी राह सीधे- 2 पश्चिम के अंधानुकरण में खोज ली।

1.1.3.3 शिक्षा की सतत् उपेक्षा

स्वतंत्रता मिलने के बाद भी शिक्षा के प्रति कामचलाऊ सोच ही चलती रही। सतत् उपेक्षा का परिणाम यह हुआ कि अभी तक हमारा देश शत प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य भी नहीं प्राप्त कर सका है-

- देश में 75 प्रतिशत तक साक्षरता पहुँच सकी है , पर निरक्षरता में कमी जनसंख्या में वृद्धि के अनुपात में नहीं हो पायी।
- 2001 से 2011 के बीच सात वर्ष से ऊपर की जनसंख्या में 18.65 करोड़ का इजाफा हुआ, पर निरक्षरता में कमी 3.11 करोड की ही दर्ज की गई।
- शिक्षा का अधिकार कानून 2010 में पास हुआ था। संविधान की व्यवस्था के अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के बीच के सभी बच्चों को अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराना आवश्यक है, पर हम सफल नहीं हो पा रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि के समानान्तरण नामांकन में वृद्धि दर्ज नहीं होती और साक्षरता ज्यादातर सिर्फ दस्तखत करना सीखने तक सीमित है।
- इसी से जुड़ी समस्या बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वालों की है। गाँवों में हजार में से 326 और शहरों में 383 लोग पढ़ाई छोड़ देते है।
- 2014 में 61 लाख बच्चे स्कूल से बाहर थे। पूर्व प्राथमिक शिक्षा का विस्तार बहुत सीमित है, जो है वह भी अधिकतर शहरों में है। मात्र एक प्रतिशत बच्चे ही इसमें जा पाते है।

1.1.3.4 अन्य चुनौतियाँ

- छात्र अध्यापक अनुपात
- अपेक्षित संसाधनों की कमी

- अच्छे शिक्षक-प्रशिक्षण का अभाव
- उचित प्रेरणा की कमी
- प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी
- शिक्षा भवनों की कमी
- शिक्षा में उद्देश्यों का अभाव
- अनुशासनहीनता
- निर्देशन का अभाव
- सामुदायिक भावना की कमी
- राष्ट्रीय एकता की समस्या
- साम्प्रदायिकता
- सदाचार का अभाव (गुरूजनों के प्रति आदर भावना का अभाव)

21वीं सदी में हमें शिक्षा की चुनौती पर विशेष ध्यान देना होगा और पर्याप्त संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी। तभी देश की युवा ऊर्जा को देश निर्माण के कार्य में संलग्न किया जा सकेगा।

1.1.4 शिक्षा के क्षेत्र में स्वयंसेवी संस्थाओं का योगदान

किसी भी प्रजातांत्रिक समाज ने मुख्यतः 3 घटक होते है-

(1) सरकार

(2) व्यावसायिक सेक्टर

(3) नागरिक समाज

ये तीनों एक दूसरे से सम्बन्धित रहते हैं। सरकार मुख्य रूप से शक्ति का केन्द्र होती हैं। उसके पास नियंत्रण और शासन करने की शक्ति होती है। इसी प्रकार व्यावसायिक सेक्टर लाभ केन्द्रित होते हैं। वे किसी भी कीमत पर पर्यावरण , स्वास्थ्य या जन कल्याण के बजाय

केवल स्वयं लाभ उठाने की कोशिश करते हैं। नागरिक समाज को इस दशा में सरकार और व्यावसायिक सेक्टर दोनों को ही नियंत्रित करना पड़ता है और इस प्रकार जनता का पक्ष लेते हुए उनके अधिकारों और हितों की रक्षा करती है।

प्रजातांत्रिक शासन की स्थापना में लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें संगठन बनाने और विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता थी। इस तरह से लोगों ने विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए जैसे कि स्त्री अधिकारी की रक्षा के लिए , पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य सेवाओं के लिए जन संगठनों का निर्माण करना प्रारम्भ कर दिया। शिक्षा के क्षेत्र में भी इन संगठनों ने कार्य किया और अशिक्षा को कम करने का प्रयास किया। इन संगठनों को ही हम स्वयं सेवी संगठन कह सकते हैं। ये संगठन समाज का ही हिस्सा होते हैं, जो समाज की उस आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास करते हैं जिनकी तरफ सरकार का ध्यान नहीं जाता है या कम जाता है या संसाधनों की कमी के कारण ध्यान नहीं दिया जाता या अन्य कार्यों को प्राथमिकता प्रदान करने के कारण वह कार्य उपेक्षित रह जाता है।

1.1.4.1 स्वयंसेवी संगठन का अर्थ

स्वयंसेवी संगठन से तात्पर्य लोगों के ऐसे समूह से है जिनका मुख्य उद्देश्य अपने समाज या समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करना है। ये संगठन सरकार द्वारा तो न बनाए जाते हैं न ही नियंत्रित किए जाते हैं। ये संगठन अपने समुदाय की ऐसी जरूरतों को पूरा करते हैं जिसकी ओर सरकार ध्यान नहीं देती या फिर संसाधनों की अनुपलब्धता या अन्य प्राथमिकताओं के कारण इन समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दे पाते हैं।

इस प्रकार स्वयंसेवी संगठनों का संबंध मुख्य रूप से सामाजिक न्याय , विकास और मानवाधिकारों से है। यह अपने स्थानीय समुदायों को सीधे सेवा उपलब्ध कराते हैं। स्वयंसेवी संगठनों की मुख्य विशेषता यह है कि ये अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जरूरी साधनों के लिए अनुदान पर निर्भर रहते हैं। उन्हें ये अनुदान समुदाय से व्यापारिक प्रतिष्ठानों से या फिर देशी/विदेशी सरकार या अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से मिलती है।

प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ , सूखा, भूकम्प, भूस्खलन के बाद इन लोगों के पुनर्वास और राहत कार्यों में इन स्वयंसेवी संगठनों के कार्य सराहनीय है। स्थानीय संगठन तक

पहुँचते हैं और आपदा पीड़ित लोगों के लिए राहत कार्य करते हैं। ये संगठन पीड़ितों के लिए फंड इकट्ठा करते हैं उन्हें भोजन, कपड़ा और स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये संगठन समुदाय के पुनर्वास कार्यों में भी मदद करते हैं। इसके लिए उन्हें सरकार या व्यक्तिगत प्रतिष्ठानों से भी सहायता मिलती है। इस प्रकार से ये स्वयंसेवी संगठन राहत कार्यों में विशेष रूप से शिक्षा , स्वास्थ्य, सामुदायिक विकास और पर्यावरण के क्षेत्र में सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं।

स्वयंसेवी संगठन व्यक्तियों का ऐसा संगठन होता है जो कि कतिपय सामाजिक सिद्धान्तों में विश्वास करता है एवं इस प्रकार कार्य करता है कि वह जिस समुदाय की सेवा कर रहा है उसका विकास कर सके।

- स्वयंसेवी संगठन ऐसे सामाजिक विकास संगठन हैं , जो व्यक्ति के सशक्तीकरण में सहायता करते हैं।
- ये ऐसे संगठन अथवा व्यक्तियों का समूह है जो कि किसी बाह्य नियंत्रण से मुक्त रहते हुए अपने विशिष्ट उद्देश्यों व लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए कार्य करते हैं ताकि किसी समुदाय या स्थान या स्थिति में वांछित परिवर्तन लाए जा सकें।
- स्वयंसेवी संगठन ऐसे संगठन हैं जो राजनीतिक दलों से सम्बद्ध नहीं होते एवं सामान्य तौर पर समुदाय के विकास एवं लाभप्रद कार्यों में संगठन रहते हैं।
- स्वयंसेवी संगठन वे संकल्पक संगठन हैं जो शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विशेष रूप से गरीबों, दलीतों व पिछड़ों की बुनियादी समस्याओं को दूर कर उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए प्रयासरत हैं।
- समुदाय के द्वारा समुदाय के लिए स्थापित ऐसे संगठन जो कि बिना अथवा अत्यल्प सरकारी हस्तक्षेप के सिर्फ दानदाता के अतिरिक्त सामाजिक-आर्थिक सांस्कृतिक गतिविधियाँ करती हैं स्वयंसेवी संगठन कहलाते हैं।
- ऐसा संगठन जो कि लचीला व प्रजातांत्रिक संगठन है और जो बिना स्वयं के लाभ के लोगों की सेवा में रत रहता हो।

यदि हम इतिहास में झॉकने का प्रयास करें तो पाएंगे कि समय-समय पर इन स्वयंसेवी संगठनों ने मानवता की सेवा के लिए कई सारे महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकम्प , सूखा, तूफान इत्यादि एवं अन्य मानवीय सेवा कृत्यों जैसे-जन शिक्षा , जन-स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण , जनसंख्या नियंत्रण इत्यादि में इन संगठनों ने कारगर भूमिका निभायी है।

1.1.4.2 स्वयंसेवी संगठन एवं शिक्षा

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारते हुए संविधान में अनुच्छेद 45 का प्रावधान किया गया , जिसमें 1960 तक 6-14 वर्ष के सभी बच्चों को अगले 10 वर्षों में प्राथमिक शिक्षा से आच्छादित करने का लक्ष्य रखा गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश के सामने अनेक समस्याएँ थी, जिसमें शिक्षा का गिरा हुआ स्तर एक प्रमुख समस्या थी। अन्य समस्याएँ जैसे-गरीबी, स्त्रियों की निम्न स्थिति , बढ़ती हुई जनसंख्या इत्यादि इसी समस्या से जुड़ी हुई समस्या थी। सरकार ने इन समस्याओं को हल करने के लिए अनेक नयी योजनाएँ बनाई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अशिक्षा को दूर करना भारत सरकार के सामने सबसे बड़ा राष्ट्रीय मुद्दा था। शिक्षा के स्तर को उठाना और शिक्षा दर में सुधार करने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ बनाई और कमीशन बिठाई जिन्होंने तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त कमियों पर प्रकाश डाला और इन कमियों को दूर करने के लिए सुझाव दिए। इन सुझावों को कार्यान्वित किया गया और अनेक नई योजनाएँ बनाई गई। इन सब प्रयासों के परिणामस्वरूप शिक्षा दर जो कि 1951 में 18.37 प्रतिशत थी, से बढ़कर 1961 में 24.02 प्रतिशत हो गई। हॅालाकि ये वर्ष वृद्धि संतोषजनक नहीं थी। कोठारी कमीशन (1964-64) में फिर से शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण किया और शिक्षा का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार करने पर जोर दिया। सर्वप्रथम यह सुझाव दिया कि शिक्षा प्रदान करने हेतु राज्य व जिला स्तर पर स्वयंसेवी संगठनों का सक्रिय सहयोग लिया जाये।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में (1986) अशिक्षा को दूर करने के लिए प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर बल दिया गया। शिक्षा के सार्वभौमीकरण का अर्थ है जन-जन को शिक्षित

करना। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में प्रत्येक राज्य को उत्तरदायित्व सौंपते हुए ये उल्लेख किया गया था कि वे जन-जन को शिक्षित बनाने के लिए प्रारम्भिक शिक्षा की अनिवार्य व्यवस्था करेंगे। उक्त संवैधानिक निर्देश के अनुपालन हेतु 2 अक्टूबर 1951 से ही शिक्षा के सार्वजनीकरण की दिशा में निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं किन्तु आज भी हम लक्ष्य को प्राप्त कर पाने में असमर्थ रहे हैं।

यह एक तथ्य है कि देश की इतनी बड़ी जनसंख्या को केवल स्कूल के माध्यम से शिक्षित नहीं किया जा सकता। लोगों को शिक्षित करने के लिए अनौपचारिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए , जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में कहा गया है। अनौपचारिक शिक्षा के लिए स्वयंसेवी संगठन ज्यादा सफल साबित हुए हैं। इन संगठनों ने यह दिखा दिया है कि वे शिक्षा के सार्वभौमीकरण में विशेष रूप से अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से कहीं अधिक प्रभावकारी व कारगर साबित हुए हैं।

1.1.4.3 कुछ महत्त्वपूर्ण स्वयंसेवी संगठन

स्वयंसेवी संगठनों ने जन केन्द्रित योजनाओं जैसे-स्वास्थ्य सेवाओं , परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण और अनौपचारिक शिक्षा के विकास में सराहनीय कार्य किए हैं। प्रजातंत्र में स्वयंसेवी संगठनों को अवसर प्रदान किए जाते हैं। भारत में भी स्वयंसेवी संगठनों ने अपने सेवाकार्यों से लोगों की सेवा की है। जन शिक्षा के क्षेत्र में स्वयंसेवी संगठनों का योगदान काफी सराहनीय रहा है।

1.1.4.3.1 आकाँक्षा

आकाँक्षा फाउन्डेशन एक ऐसा संगठन है जिसका ये दृष्टिकोण है कि वह एक दिन समस्त छात्रों को सशक्त जीवन के लिए आवश्यक शिक्षा , कौशलों व चारित्रिक गुणों से लैस कर देगा। आकाँक्षा प्रमुख रूप से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। जहाँ यह आकाँक्षा केन्द्रों के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्रदान कर रहा है वहीं आकाँक्षा स्कूलों के माध्यम से औपचारिक शिक्षा।

पिछले 20 वर्षों के दौरान यह संगठन एक केन्द्र के 75 बच्चों से बढ़कर 58 केन्द्रों व 6 स्कूलों के 3500 बच्चों तक पहुँच गया है। यह संगठन प्रत्येक छात्र/छात्रा को मजबूत शैक्षिक आधार एक अच्छा समय , स्वाभिमान और मूल्य प्रदान करने एवं उन्हें इस लायक बनाने ताकि वह अपनी जीविका स्वयं कमाकर अपने जीवन स्तर को सुधार सके , के लिए दृढ़ संकल्पित है।

आकाँक्षा प्रत्येक बच्चे को निम्नलिखित सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये कटिबद्ध है-

1. अंग्रेजी व गणित में एक मजबूत बुनियादी आधार

2. स्वाभिमान व मूल्यों का अहसास

3. एक अच्छा समय जहाँ हँसते खेलते सीखें, कक्षा में एवं बाहर भी

4. ऐसे उपाय जिससे वे भविष्य में अपनी जीविका अर्जित कर सकें।

1.1.4.3.2 वनश्री ट्रस्ट

समस्त जीवधारी इससे पूर्व में कभी न पाए गए ह्रास की ओर लगातार अग्रसारित वातावरण से गुजर रहे हैं। हमस ब अपने जीवन के लिए वातावरण पर निर्भर हैं परन्तु इसके प्रति बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते। प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति की देखभाल करे , इस उद्देश्य के साथ वनश्री ट्रस्ट 2001 में बना।

वनश्री ट्रस्ट संवेदनशील उत्साही युवाओं का समूह है जो कि बेहतर व हरीभरी धरती के निर्माण के लिए लगन से कार्य करना चाहते हैं। हम मुख्य रूप से इस प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हैं जिसके माध्यम से बच्चे व युवा वर्ग संस्कृति का संरक्षण करना सीख सके ताकि हमारे आस-पास वातावरण को जो नुकसान पहुँचाया जा रहा है उसे कुछ कम किया जा सके। विद्यालय वन योजना के अन्तर्गत प्रत्येक विद्यालय के पास अपने परिसर में एक छोटा सा वन होना चाहिए।

1.1.4.3.3 पोथमकंदम् विद्यालय

यह विद्यालय 1955 में प्रारम्भ किया गया था जिसे 1984 में उच्च प्राथमिक विद्यालय के रूप में उच्चीकृत कर दिया गया। यह विद्यालय केरल राज्य सरकार द्वारा घटनानुसार ब्लॉक पंचायत (स्थानीय स्वशासन) द्वारा संचालित होता है। इसमें पढ़ने वाले बच्चे ज्यादातर गरीब किसानों और कुली इत्यादि का कार्य करने वाले श्रमिकों के हैं। विद्यालय का अपना 'शिक्षक' अभिभावक संघ है जिससे मिलने वाले अनुदान से बच्चों को दोपहर का भोजन प्रदान किया जाता है संस्था की ओर से विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं से अनुरोध किया जाता है कि वे विद्यालय में किसी एक जरूरत को पूरा करने का उत्तरदायित्व ले अर्थात् पीने के पानी की व्यवस्था , फर्नीचर, नवीन शिक्षण सामग्री , कम्प्यूटर इत्यादि। विद्यालय में कक्षायें नहीं होती परन्तु ग्रेड प्रदान किये जाते हैं।

बच्चों को अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना तथा उन्हें औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से जोड़ना। इस विद्यालय में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

1.1.4.3.4 अजीम प्रेमजी फाउंडेशन

प्रसिद्ध उद्योगपति एवं विप्रो के अध्ययन अजीम प्रेमजी ने अपनी इस संस्था के माध्यम से बंगलुम के 'लर्निंग गारंटी योजना' प्रारम्भ की। यह योजना 23 नवम्बर को गुलबर्गा (कर्नाटक) में प्रारम्भ की गयी थी। इस योजना में उत्तरवर्ती कर्नाटक के 7 जिलों के लगभग 9500 विद्यालयों को चुना गया था। इसी फाउन्डेशन ने सन् 2011 में बंगलुक ने एक निजी विश्वविद्यालय की भी स्थापना की है जो शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता लाने के लिये प्रयासरत होगा।

1.1.4.3.5 प्रथम्

प्रायः स्वयंसेवी संस्थायें किसी एक व्यक्ति या छोटे समूह के द्वारा स्थापित होती है। प्रथम् शायद पहली संस्था है जो मुम्बई के म्यूनिसपल कमिश्नर , तथा कई देशाकें के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा निर्मित पब्लिक चैरीटेबल ट्रस्ट है। इसकी स्थापना 1994 में की गयी थी। अपने

प्रारम्भिक वर्षो में प्रथम् ने मुम्बई शहर की मलिन बस्तियों में पूर्व-विद्यालयी शिक्षा देनी प्रारम्भ की थी। इस कार्य हेतु उन्होंने कोई पूर्व निर्धारित स्थान नहीं चुना अपितु कहीं भी घर में, मंदिर में, दफ्तरों में जो स्थान मिला वहीं पर बच्चों को एकत्रित करके शिक्षा देनी प्रारम्भ की। इस कार्य हेतु कार्यकर्ताओं को चुना एवं प्रशिक्षित किया गया। देखते ही देखते प्रथम् बालकड़ियों की संख्या बढ़ती चली गयी। बाद में पूर्व विद्यालयी शिक्षा के साथ-साथ विद्यालय व जाने वाले सभी बच्चे तथा वे बच्चे जो शैक्षिक रूप से पिछड़ रहे थे तथा ड्राफ्आउट हो सकते थे , उन्हें भी इस योजना में सम्मिलित किया गया। इन बच्चों के माता-पिता प्रायः अशिक्षित थे अतः उन्हें भी शिक्षित करने के लिये बालसखी कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इन विद्यालयों का उद्देश्य बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा (औपचारिक शिक्षा) में शामिल करना था।

इसी प्रकार रामकृष्ण मिशन एक स्वयंसेवी संस्था है। इसकी स्थापना स्वामी विवेकानन्द जी ने की थी। रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखायें आज सम्पूर्ण संसार में फैली हुई है और यह मिशन शिक्षा के साथ-साथ अनेक परोपकारी कार्यों में तत्पर है। जैसे स्वास्थ्य , आपदा प्रबन्धन एवं राहत ग्रामीण प्रबन्धन, चिकित्सा और आदिवासी कल्याण के लिए काम करता है। इस मिशन का उद्देश्य ऐसे संन्यासियों और साधुओं को संगठित करना था जो स्वामी रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं में गहरी आस्था रखे और उनकी शिक्षाओं को आगे प्रचारित करे तथा उनके उपदेशों को जनसाधारण तक पहुँचा सके और संतप्त , पीड़ित एवं दुखी मानव जाति की निःस्वार्थ सेवा कर सके।

रामकृष्ण मिशन के सिद्धान्तों में वैज्ञानिक प्रगति तथा चिन्तन के साथ प्राचीन भारतीय आध्यात्मवाद का समन्वय इस दृष्टि से किया गया है कि यह संस्था भी पाश्चात्य देशों की भाँति जनकल्याण करने में समर्थ हो। इसके द्वारा स्कूल, कॉलेज और अस्पताल चलाये जाते है और कृषि, कला एवं शिल्प के प्रशिक्षण के साथ-साथ पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती है। इस संस्था ने भारत के वेदान्तशास्त्र का सन्देश पाश्चात्य देशों तक प्रसारित करने के साथही भारतीयों की दशा सुधारने की दिशा में भी प्रशंसनीय कार्य किया है।

1.2 समस्या का प्रार्दूभाव

प्रत्येक शोध कार्य का महत्त्वपूर्ण चरण समस्या का चयन होता है , यह समस्या चाहे समाज की तात्कालिक आवश्यकता से सम्बन्धित हो अथवा व्यक्तिगत उत्सुकता से , शिक्षा प्रक्रिया में परस्पर सहयोग की भावना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक समाज अपनी उन्नति के लिए समस्त सदस्यों को शिक्षित करता है , जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र शिक्षित होकर उन्नत एवं विकास के मार्ग पर अग्रसर होता है। विभिनन ग्रन्थों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है , कि प्रत्येक ऋषि, मुनि, विद्वान एवं मनीषगण अपने विचारों व शाश्वत आदृश्य शक्तियों से समाज को लाभान्वित करने हेतु शिक्षा को ही माध्यम बनाते है। शिक्षा भावों को प्रदान करने का साधन है।

हमारे समाज में शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक संगठनों , मिशनों, संस्कृतियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन तथा अन्य मिशनों ने शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान देते रहे है और वर्तमान में भी दे रहे है। स्वामी विवेकानन्द जी जो रामकृष्ण मिशन के संस्थापक है इनके व्यक्तित्व से मैं हमेशा प्रभावित रहा हूँ और मेरे मन में विचार आया कि मैं इनके विचारों को आत्मसात कर सकूँ साथ ही मिशन द्वारा संचालित शैक्षिक तथा अन्य क्रिया-कलापों , शैक्षिक प्रयासों का अवलोकन करके भविष्य में उसमें सुधार हेतु कुछ आवश्यक सुझाव दिए जा सके।

शोधकर्त्ता द्वारा **'रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान '** अध्ययन विषय चुनने का कारण था कि मिशन के सभी पक्षों-शिक्षा के उद्देश्यों , पाठ्यक्रमों, शिक्षक छात्र सम्बन्ध , कर्त्तव्य, अनुशासन आदि का अध्ययन कर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जोड़ते हुए वर्तमान शिक्षा के स्तर को सुधारना है।

1.3 समस्या कथन

'रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान'

1.4 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

- रामकृष्ण मिशन
- शैक्षिक
- योगदान

1.4.1 रामकृष्ण मिशन

विकीपिडिया के अनुसार - रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1 मई 1897 ई 0 को रामकृष्ण परमहंस के परमशिष्य स्वामी विवेकानन्द जी ने की थी। इसका मुख्यालय कोलकाता के निकट बेलूर में है। इस मिशन की स्थापना के केन्द्र में वेदान्त दर्शन का प्रचार-प्रसार है। रामकृष्ण मिशन दूसरों की सेवा और परोपकार को कर्म योग मानता है , जो हिन्दू धर्म का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। रामकृष्ण मिशन का ध्येय वाक्य है - ''आत्मनो मोक्षार्थ जगह हिताय च' (अपने मोक्ष और संसार के हित के लिये)।

1.4.2 शैक्षिक

शब्दकोश के अनुसार-

- शिक्षा देने वाला या जिससे शिक्षा मिले
- शिक्षा का या शिक्षा से सम्बन्धित
- शिक्षा सम्बन्धी
- शिक्षा का एजुकेशनल वह जो शिक्षा वेदांग का ज्ञाता या पंडित हो।
- वह जो आधुनिक शिक्षा विज्ञान का पंडित हो-एजुकेशनिष्ट

प्रस्तुत लघु शोध में शैक्षिक तात्पर्य औपचारिक एवं निरौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में चल रही विभिन्न गतिविधियों से है।

1.4.3 योगदान

शब्दकोश के अनुसार-

- सहयोग करना
- हाँथ बँटाना
- योग दीक्षा

प्रस्तुत अध्ययन के योगदान से तात्पर्य शैक्षिक क्षेत्र में किये जा रहे विभिन्न प्रयासों से है।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

- शिक्षा के क्षेत्र में रामकृष्ण मिशन के योगदान का अध्ययन करना
- रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना
- रामकृष्ण मिशन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना
- रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक प्रकल्प का अध्ययन करना
- गदाधर अभ्युदय प्रकल्प की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना
- गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र की दिनचर्या का अध्ययन करना
- गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र में प्रशिक्षण सुविधाओं का अध्ययन करना
- प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।
- अध्ययन के आधार पर शैक्षिक उन्नयन एवं नवाचार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

1.6 अध्ययन का परिसीमांकन

प्रत्येक शोध की एक सीमा होती है। उसी सीमा तक उसके निष्कर्ष वैध होते है प्रस्तुत शोध की निम्न सीमाएँ है-

- प्रस्तुत शोध रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक दर्शन एवं शैक्षिक योगदान के अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध रामकृष्ण मिशन प्रयागराज केन्द्र में संचालित गदाधर अभ्युदय प्रकल्प तक ही सीमित है।

1.7 अध्ययन विधि

प्रस्तुत समस्यात्मक अध्ययन में ऐतिहासिक विधि एवं वर्णनात्मक विधि के अन्तर्गत केस अध्ययन का भी प्रयोग किया गया है क्योंकि इतिहास किसी भी क्षेत्र में अतीत की घटनाओं का एकीकृत वर्णन है।

वर्तमान की समस्याओं को हल करने के लिए अतीत के अनुभवों से लाभ उठाना ऐतिहासिक अनुसंधान की उपयोगिता का तर्क संगति प्रदान करता है। अतीत केवल अतीत ही नहीं वर्तमान को समझने की कुंजी है।

ऐतिहासिक विधि:

इतिहास किसी ज्ञान के क्षेत्र में अतीत की घटनाओं की एकीकृत वर्णन है जो सम्पूर्ण साहित्य के लिए समालोचनात्मक खोज का प्रतिनिधित्व करता है। किसी भी अध्ययन का ऐतिहासिक उपगमन अतीत के जीवन के किसी पक्ष के वर्णन करने के प्रयास की ओर संकेत करता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान विधि

शिक्षा तथा मनोविज्ञान संबंधी अनुसंधान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का सबसे अधिक महत्त्व है औ यह बड़े व्यापक रूप में व्यवहार में आता है।

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार , ‘‘वर्णनात्मक अनुसंधान ‘क्या है’, का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियों अथवा संबंध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पाई जा रही हैं , प्रक्रियाएँ जो चल रही है ,

अनुभव जो प्राप्त किये जा रहे है अथवा नई दिशाएँ जो विकसित हो रही है , उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।''

केस अध्ययन विधि

इस प्रकार का अवलोकन अनुसंधान किसी व्यक्ति या उनके छोटे समूह के अध्ययन पर आधारित होता है। इस मामले में , हम अध्ययन के विषयों के विभिन्न अनुभवों और व्यवहारों के बारे में गहराई से जाँच करते हैं।

1.8 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

भारत प्राचीन काल से ही समृद्धि के शिखर पर रहा है। उसके शिखर पर रहने का मुख्य आधार उसमें अपने अनुभवों को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने की क्षमता है। जहाँ अन्य प्राणी पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी इन्हीं जीवन प्रक्रियाओं को दुहराते हैं और हर पीढ़ी में नये सिरे से ज्ञानार्जन प्रारम्भ करते हैं, मनुष्य अपने ज्ञान को आगे बढ़ाता रहता है। ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ उसकी चिन्तन शक्ति में भी वृद्धि होती जाती है और वह अपने वातावरण से अधिक समन्वय स्थापित कर पाता है। सैकड़ों हजारों वर्षों से चली आ रही। यह मानव यात्रा जहाँ जैविक क्षेत्र में कुण्डलाकार है अथवा जन्म शैशव-युवावस्था मृत्यु के वृत्त में घूम रही है , वहीं ज्ञान के क्षेत्र में वह निरन्तर प्रगति पर है। उसकी प्रगति का मूल आधार उसकी जिज्ञासा है।

मनुष्य सदैव अपने वातावरण को जिज्ञासा की दृष्टि से देखता है उसे समझने तथा नियन्त्रित करने का प्रयास करता है। बहुधा उसकी दृष्टि अन्तर्मुखी हो जाती है और वह अपने को भी समझने का प्रयास करता है। जिज्ञासु मानव की शक्ति असीमित है जैसे ही उसके सामने कोई समस्या आती है , उसकी समस्त शारीरिक एवं मानसिक शक्तियाँ उसके समाधान के लिए एकाग्र हो जाती है। दिन-रात कठोर परिश्रम , चिन्तन एवं मनन करके मनुष्य अपनी समस्या का समाधान कर लेता है।

सम्पूर्ण विश्व में समय-समय पर विभिन्न चिन्तन , सम्प्रदाय मानव प्रकृति , सम्बन्ध उपासना, जीवन-जगत, कतिपय विषयों पर मानवता के परिष्कृतम सांसारिक एवं आध्यात्मिक विकास हेतु महामानव अवतरित होते आये हैं। संसार के समस्त प्राणियों की

बौद्धिक चेतना इन समस्त महामानवों से अनुप्राणित , परिचर्चित, प्रभावित एवं लाभान्वित होती रही है। इन समस्त महामानवों की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी दर्शन। यही समस्त मूर्घन्य व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक गतिविधियों का लक्ष्य माना जाता था तथा विविध जातियों वाले इस बड़े भू-भाग की सामाजिक संस्कृति में जो विविधता है उसमें एकता और तारतम्य स्थापित करने वाला यही एक बिन्दु था ऐसी रत्न प्रसविनी वसुधा भारतवर्ष में रामकृष्ण परमहंस स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया तथा अपने जीवन काल को आध्यात्मिक प्रयोग की एक अविच्छिन्न श्रृंखला बना दिया।

जब कोई पुरुष अपनी इच्छाओं एवं अपने परिवार के स्वार्थों को त्याग करके सामान्य जनों की आकाँक्षाओं , अपेक्षाओं तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं ऐसे ही लोग महापुरुष कहलाते हैं। वे तन , मन, धन एवं प्राण को संकट में डालकर भी दीन-दुखीजनों की भलाई करते हैं। भलाई करने के रास्ते में यदि कोई बाधा पहुँचाता है , तो उसका डटकर मुकाबला करते हैं और पीछे मुड़ने का नाम नहीं लेते हैं। ऐसे महापुरुष इस नश्वर संसार में कभी-कभी जन्म लेते हैं। सृष्टि की यह परम्परा रही है कि जब भी समाज में दुष्प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है, तब उनके प्रतिकार हेतु अदृष्ट की प्रेरणा से कोई न कोई शक्ति महामानव के रूप में धरा पर अवतीर्ण हुई है जिसने इन दुष्प्रवृत्तियों पर कुठाराघात कर मानवता के मूल्य को विघटित होने से बचाया है उसी ने सामान्य मानव समाज को सही दिशा दी है , साथ ही विकृत मूल्यों का उदान्तीकरण भी किया है। मानव के इस नव संस्करण तथा परिस्करण की प्रक्रिया सम्पूर्ण विश्व में चलती रहती है।

स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों को समझना तो आसान है परन्तु शर्त यह है कि इसकी कुंजी हमारे हाथ लग जाये। स्वामी विवेकानन्द जी के सामने जो भी धार्मिक , नैतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक समस्यायें आयी उन सभी को उन्होंने सत्य और अहिंसा की कसौटी पर रखा तथा उनका मूल्यांकन किया। यही कारण था कि उन्हें परम्परायें न बाँध सकी , संगीत न रोक सकी। नैतिक साहस तो उनमें इतना था कि वे अपनी भूलों की घोषणा भी सार्वजनिक रूप से कर देते थे। इसी कारण वे अपने प्रशंसकों के साथ-साथ आलोचकों के लिए भी एक पहेली बने रहे।

स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए शहरी एवं ग्रामीण अंचलों में सैकड़ों विद्यालय खोले और पुरुषों तथा महिलाओं के लिए ट्रेनिंग कॉलेज तथा छात्रावासों की स्थापना भी की।

विवेकानन्द जी के शिक्षा प्रचार एवं प्रसार के प्रयासों के कारण अनेकों संस्थाओं व सामाजिक संगठनों द्वारा समय-समय पर उन्हें सम्मानित भी किया गया।

अतः प्रस्तुत लघु शोध-ग्रन्थ नयी परिस्थिति में स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक योगदान के अध्ययन का एक प्रयास है। समाज शिक्षा को प्रभावित करता है तथा विभिन्न पक्षों पर विचार करता है और लक्ष्य निर्धारित करता है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति करना ही मानव जीवन का उद्देश्य है। शिक्षा इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है। शिक्षा के द्वारा ज्ञान एवं कौशल विकसित होते हैं , जो पुनः दर्शन को नवीन रूप प्रदान करते हैं। नवीन दर्शन , नवीन शिक्षा को जन्म देकर इस चक्र को गतिशील बनाता है।

हमारी भारतीय सांस्कृतिक परम्परा बहुत ही गौरवमयी एवं सर्वोत्कृष्ट रही है। अपनी गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परा के फलस्वरूप भारत विश्व में जगत गुरू के मुकुट से सुशोभित होता रहा है।

आज देश ऐसे संक्रमण काल से गुजर रहा है , जिसमें पुरानी मान्यताएँ समाप्त हो चुकी हैं और नयी भौतिकवादी मान्यताएँ सामने आ रही हैं। नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से लोगों का विश्वास उठ गया है किन्तु समाज केवल भौतिक मूल्यों से नहीं चल सकता है इसलिए ऐसे मार्गों को खोजना है जिन पर चलकर मनुष्य वास्तविक शान्ति प्राप्त कर सके। स्वामी विवेकानन्द जी ने शैक्षिक एवं सामाजिक विकास द्वारा भारतीय संस्कृति पर आधारित मान्यताओं को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है।

प्राचीन काल में शिक्षा मठों एवं गुरूकुलों में दी जाती थी परन्तु आज शिक्षा के बड़े-बड़े केन्द्र खुल गये है। लेकिन यह भी विडम्बना ही है कि विकास के नाम पर आज शिक्षा के क्षेत्र में घोर दुव्र्यवस्था फैल गई है। शिक्षण संस्थाओं में अशान्ति का वातावरण तो है ही , साथ ही शिक्षा व्यवस्था आज भी गुलामी के समय में निर्धारित उद्देश्यों को ही पूरा करती है। शिक्षा का स्तर गिर गया है। बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात तो आज की शिक्षा में सोचनी ही

नहीं चाहिये। आज का विद्यार्थी तो उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् भी अपना पेट भरने में सक्षम नहीं है। इन परिस्थितियों में यह सर्वथा समीचीन है कि ''स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक एवं सामाजिक विकास '' का निष्पक्ष विवेचन प्रस्तुत किया जाये क्योंकि उनके विचारों की आवश्यकता एवं महत्त्व को आज भी स्वीकार किया जा रहा है। आत्मानुशासन चिन्तन, मनन आदि भावनाओं का विकास करने तथा जीवन को सुखमय बनाने के लिए स्वामी विवेकानन्द जी की विचारधारा के अनुसार शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है।

अतः आज की शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक एवं समाज के क्षेत्र में सामाजिक सुधारों की आवश्यकता को देखते हुए शोधकर्त्ता ने ''रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान'' नामक विषय को शोध एवं अध्ययन का विषय चुना। शैक्षिक एवं सामाजिक विकास के सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द द्वारा किये गए शैक्षिक एवं सामाजिक प्रयासों से विद्यार्थी वर्ग एवं आम जनता को अवगत कराना चाहता है। इसलिए उसी दिशा में शोध कर्त्ता अपने लघु शोध-प्रबन्ध के माध्यम से आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है।

¤ ¤ ¤ ¤ ¤

2.1 प्रस्तावना

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन शोध का अभिन्न अंग होता है। यह किसी शोधकर्त्ता के लिए समस्या विशेष के मूल में पहुँचने का महत्त्वपूर्ण साधन है तथा अनुसन्धान का प्राथमिक आधार है। शोध प्रबन्धन की वास्तविक योजना एवं उस के संचालन से पूर्व शोधकर्त्ता अपनी समस्या से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन इसलिए करता है, क्योंकि यह उसे अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है। विषय सम्बन्धी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है तथा नई समस्याओं की जानकारी देता है। यह परिणामों के सत्यापन के लिए भी आवश्यक है। इसके अभाव में कोई भी अनुसन्धान उच्च स्तर का नहीं हो सकता है सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधकर्त्ता द्वारा निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर किया गया है-

- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करता है तथा विभिन्न सिद्धांतों एवं नहित धारणाओं को समझने में सहायता करता है।
- अनुसन्धान के किये किये गए क्षेत्र में कितना और किस प्रकार का कार्य हो चुका है, इसकी जानकारी सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण से प्राप्त होती है, तथा अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है।
- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण समस्या के परिभाषीकरण अवधारणा तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।
- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण अनुसंधानकर्त्ता के ज्ञानकोष में वृद्धि करता है तथा वर्तमान अध्ययन के लिए शोध विधियों का सुझाव देता है। पूर्व साहित्य का अध्ययन शोधकर्त्ता को उपयुक्त प्रतिचयन विधि एवं प्रदत्त संग्रह करने के प्रासंगिक उपकरणों के चयन प्रदत्तों के संगठन एवं विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकी के चयन में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण शोधकर्त्ता को अपने शोध परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने में पूर्व शोध के तुलनीय आँकड़े प्रदान करता है, जो परिणामों के अर्थ, निर्णय एवं व्याख्या में सहायक होते हैं।

- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण शोधकर्त्ता को अपनी समस्या के क्षेत्र की सीमा निर्धारण एवं उसे दिशा देनें में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण शोधकर्त्ता को अलाभप्रद एवं अनुपयोगी समस्याओं से बचाता है, जिससे मौलिक एवं उपयोगी अनुसन्धान संभव होता है।
- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण शोधकर्त्ता को महत्त्व पूर्ण सूचना प्रदान करता है कि पूर्व अनुसंधायक को अपनें अध्ययन में एवं आगे अनुसंधान हेतु क्या अनुशंसाएँ की थी।
- सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के इस महत्त्व को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता ने शोध समस्या की रुपरेखा तैयार करने से पूर्व शोध से सम्बन्धित जिस साहित्य का अध्ययन किया वह निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत प्रस्तुत है।

2.2 शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

मोहित किशोर भटनागर (2007) ने अपने शोधग्रन्थ में विवेकानन्द के दर्शन में नैतिक मूल्य के स्वरुप का विश्लेषणात्मक अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए -

- स्वामी विवेकानन्द के नैतिक मूल्यों में उच्च आदर्शवाद के साथ-2 महान व्यवहारिकता का सम्मिश्रण है।
- विवेकानन्द के चिंतन का केंद्र बिंदु आकाश में अवास्थित अथवा हृदय में विराजमान कोई देवता अथवा इन्द्रायातीन तत्व नहीं वरन उनके चिन्तन का केंद्र है धरती का मनुष्य।
- वे मानव के जातीय राष्ट्रीय अथवा साम्प्रदायिक आदि संकीर्ण पहलुओं के स्थान पर उनके सार्वभौमिक पक्ष के विकास के समर्थक हैं।
- उन्होंने ईश्वर को दरिद्रनारायण की संज्ञा दी तथा दींन-दुखियों की सेवा को ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्कृष्ट साधन माना। इसी रूप में आज भी रामकृष्ण मिशन दीन-दुखियों तथा अपाहिजों की सेवा में रत हैं।

- विवेकानंद का उद्देश्य विश्व बधुत्व नहीं बल्कि विश्वात भाव है। इसलिए मनुष्यों को मनुष्यों से वैसा ही प्रेम करना चाहिए जैसा वह स्वयं से करता हो।
- विवेकानंद केवल पुस्तकीय ज्ञान को आवश्यक नहीं मानते बल्कि ऐसी शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हैं, जिससे चरित्र का निर्माण हो।
- स्वामी विवेकानन्द का मूल मन्त्र ‘उठो और जागो’ मनुष्य के अन्दर निहित शक्ति तथा विश्वास को जाग्रत करता है।
- उन्होंने धर्म पालन में सेवा तथा त्याग पर बल दिया। भारतीय नैतिक मूल्यों को विश्व व्यापी बनाया।
- स्वामी विवेकानंद के अनुसार वास्तविक धर्म का आधार ऐक्य भाव, त्याग तथा सत्य की अनुभूति है।
- विवेकानंद ने मानव सेवा व विश्व कल्याण को धर्म की संज्ञा प्रदान की। भलाई करने की भावना ही मनुष्य का सर्वोच्च गुण है।
- स्वामी विवेकानंद के अनुसार ईश्वर का वास प्रत्येक जीव में है अतः जीव की सेवा ही ईश्वर सेवा है।
- वे जाति –पाति, रंग तथा धर्म जैसे संकीर्ण दृष्टियों के विरोधी थे सभी स्त्री पुरुष में समानता देखने वाले वे सभी में देवत्व का दर्शन करते हैं, जो प्रत्येक मनुष्य का वास्तविक रूप है।
- हमारा देश अध्यात्मवाद तथा नैतिक मूल्यों की जननी है। यहाँ कण-कण में प्रेम माधुर्य तथा विनम्रता का वास है।
- विवेकानंद के दृष्टिकोण में संरक्षित प्रेम, दया, सहानुभूति, विश्वबंधुत्व, सत्य, अहिंसा आदि नैतिक मूल्यों की रक्षा करना मानव का अधिकार व नैतिक कर्त्तव्य है।

चन्दा वर्मा(1997) ने अपने शोध ग्रन्थ “रामकृष्ण विवेकानंद दर्शन में अद्वैत की भूमिका में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

- वेदान्त के अनुसार कोई व्यक्ति परम सत की अनुभूति के पश्चात् भी इस शरीर में निवास कर सकता है। किन्तु व्यवहार में परम्परागत दार्शनिक सम्प्रदायों में ईश्वरानुभुति पर ही जो दिया गया है।
- आधुनिक युग में श्री रामकृष्ण की शिक्षाओं का एक अन्य महत्त्वपूर्ण योगदान यह रहा है कि यदि मनुष्य प्रतीकों के माध्यम से ईश्वर की उपासना करता है तो वह ईश्वर को मनुष्य के रूप में भी पूज सकता है।
- शरीर ही वह मंदिर है जहाँ ईश्वर वास्तविक रूप से निवास करता है, यही कारण है कि एक बार श्री रामकृष्ण देव ने कहा था – "ईश्वर की संतानों पर दया करने वाले हम कौन होते हैं ?" हमें दया नहीं सेवा करनी चाहिए – 'शिव भाव से जीव सेवा'।
- यही सन्देश कालान्तर में विवेकानन्द की शिक्षाओं का मूलाधार बना और इसी आधार पर उन्होंने रामकृष्ण मिशन और मठ की स्थापना की।

सुषमा मिश्रा (2012) ने अपने शोधग्रन्थ "स्वामी विवेकान्द के राष्ट्रीय राजनीतिक विचारों का अध्ययन" वर्तमान युवा शक्ति के विशेष सन्दर्भ में "निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

- स्वामी विवेकानन्द के विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि ये आदर्शवादी होते हुए भी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओं के प्रति भली – भाँति जागरूक थे, इसलिए उन्होंने जीवन के कटु सत्यों की उपेक्षा नहीं की। अपने समस्त विचारों के द्वारा बुद्धि, मस्तिष्क, शरीर, आत्मा के साथ ही हस्तशिल्पात्मक प्रशिक्षण देने के पक्ष में भी थे।
- राष्ट्रीय भावना का समावेश और भारत के पुनर्निर्माण की तीव्र अभिलाषा विवेकानंद के उच्च विचारों की विशेषता है। यह व्यक्ति की असीमित –शक्ति में विश्वास करते थे और उस शक्ति का ज्ञान वे अपने विचारों के माध्यम से कराना चाहते थे। शिक्षा द्वारा ही इन महानुभाव ने उच्च विचारों का प्रचार प्रसार करना चाहा। इनका विश्वास था कि वास्तविक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है। विवेकानन्द जी ने शिक्षा के उद्देश्य को भौतिकवाद एवं आध्यात्मवाद से सम्बन्धित बताया है। भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में इस प्रकार तालमेल बिठाकर और शिक्षा का सही –सही

उद्देश्य निर्धारित कर आधुनिक शिक्षा को नयी दिशा प्रदान की। स्पष्ट है कि इन महापुरुषों के शैक्षिक उद्देश्य आधुनिक शिक्षा के लिए प्रासंगिक है।

- स्वामी विवेकानन्द जी ने विभिन्न भागों से चलकर एक ही लक्ष्य को सामने रखा और वह था – जीवन का शाश्वत मूल्य1 वह शाश्वत मूल्य जिसकी आज आधुनिक जगत में आवश्यकता है , जिसके अभाव में विचार निरूद्देश्य एवं दिशाविहीन हो गए है तथा युवा–वर्ग दिग्भ्रमित है1 ऐसी स्थिति मे इनके विचारो को आधुनिक जीवन में अपना कर युवा वर्ग को सार्थक दिशा दी जा सकती है1
- युवा वर्ग को समाज एवं राष्ट्र के सामने युवा शक्ति के रूप में प्रस्तुत करना है तो उनके समस्त विचारों को अपनाना पड़ेगा, चाहे वो शिक्षा सम्बन्धी राजनीतिक –राष्ट्रीय विचार या फिर सांस्कृतिक पुनरुथान सम्बन्धी विचार क्यों न हो, इसीलिए युवाओं को उनके सम्पूर्ण विचारों को आत्मसात करना ही पड़ेगा तभी जाकर युवा वर्ग को एक सही मार्गदर्शन मिलेगा1
- विवेकानंद के विचारों द्वारा सुविचारित सिद्धांत हमारे देश और इस काल के लिए ही नही अपितु हर क्षेत्र के लिए और हर काल में सही उतरने वाले है –उन्हें सार्वभौमिक और सार्वजनिक सिद्धांत कहा जा सकता है।
- स्वामी विवेकानंद जी ने समस्त जीवन-तत्त्वों को अपनी जीवन शैली एवं विचारों के माध्यम से नवीन पद्धति के रूप में प्रस्तुत करके जनमानस के लिए अत्यन्त परोपकार एवं कल्याण का कार्य किया है। उनका सिद्धांत पूर्णतया नवीन शैली लिए हुए समाज के कल्याण हेतु प्रस्तुत होकर सेवा कर रहा है। विवेकानंद जैसे महापुरुषों के विचार आधुनिक जगत में प्रासंगिक ही नहीं अपितु सर्वमान्य भी होने चाहिये।

सत्य प्रकाश मेहता(2009-11) ने अपने शोध ग्रन्थ ''स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिक में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

- शिक्षा किसी समाज का सर्वोच्च सकारात्मक पक्ष है शिक्षा वह तत्त्व है, जो मानव ज्ञान का अग्रिम पीढ़ी में सम्प्रेषण करता है मानव के ज्ञान के दो पक्ष होते हैं – अनुभव

जन्य ज्ञान तथा स्मृतिजन्य ज्ञान। अनुभव मनुष्य के व्यक्तिगत होते हैं जबकि स्मृतियों से तात्पर्य विविध शास्त्रों एवं गुरुओं के माध्यम से प्राप्त ज्ञान है।

- समस्त वैदिक साहित्य में विद्या एवं अविद्या के भेद को विशिष्ट रूप में रेखांकित किया गया है तदनुसार विद्या वह है जो मुक्ति का साधन है – **साविद्या या विमुक्तयें।** एतत् विपरीत जो मुक्ति के लिए न होकर बन्धनकारी हो वह अविद्या है।
- शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य है मनुष्य निर्माण जिस शिक्षा से हम जीवन – निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।
- हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़े होना सीखें।
- स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ उस पूर्णता की अभिव्यक्ति से है, जो सभी मनुष्यों में पहले से विद्यमान है।
- हमारी मातृ-भूमि भारतवर्ष का मेरुदण्ड धर्म है। धर्म की नींव पर हमारी जाति के जीवन का प्रसाद खड़ा है संसार के अन्य देशों में धर्म एक छोटी सी चीज गिना जाता है, परन्तु भारतवर्ष में धर्म ही राष्ट्र के हृदय का मर्मस्थल है।
- स्वामी जी का स्पष्ट निर्देश है कि शिक्षा में धर्म का समावेश अवश्य होना चाहिये। यह धर्म ईश्वर में विश्वास की अपेक्षा स्वयं में विश्वास है। इस धर्म के द्वारा ही हम अपने हृदय को सुसंस्कृत बना सकते हैं यही तो शिक्षा का भी उद्देश्य है अतः शिक्षा में धर्म का सन्निवेश अनिवार्य है।
- स्वामी विवेकानन्द ने किसी विशिष्ट शैक्षिक पद्धति का प्रवर्तन न करते हुए भारत की प्राचीन वेदांती शैक्षिक प्रणाली का ही अनुमोदन किया और उसे युग के अनुरूप परिष्कृत एवं परिमार्जित भी किया। शिक्षा का दर्शन जीवन के दर्शन से घनिष्ट रूप से जुड़ा होता है, इसीलिए स्वामी जी ने शिक्षा को नव्य वेदान्त दर्शन को एक प्रमुख तत्त्व माना है।

- शिक्षा के नव्य वेदान्ती स्वरुप को पुनः अपनाने के बाद हमारी समस्याओं का समाधान स्वयं ही हो जायेगा। स्वामी जी ने शिक्षा में भौतिक तत्त्वों की अपेक्षा आध्यात्मिक तत्त्वों को अधिक महत्त्व दिया है।
- नव्य वेदान्त शिक्षा दर्शन तथा जन-जीवन में आध्यात्मिक दृष्टिकोण का अत्यधिक महत्त्व है इसीलिए स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा का एकमात्र आधार आध्यात्मिकता को स्वीकार किया है वह आत्मा की सत्ता को महत्त्वपूर्ण तत्त्व के रूप में मानते हैं। अतः उनके दर्शन में समस्त प्रयास आत्मा को लक्ष्य में रखकर किये गए गए हैं।
- नव्य वेदान्त शिक्षा दर्शन में जीवन लक्ष्यों से शिक्षा उद्देश्यों की उद्भावना हुयी है उनकी शिक्षा में ब्रह्म साक्षात्कार को ही शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य स्वीकार किया गया है।
- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन चतुष्टय पुरुषार्थ में मोक्ष को ही परम पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया गया है यही मुक्ति की प्राप्ति शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य है।
- स्वामी विवेकानंद के अनुसार समस्त शिक्षा का सार ज्ञान में ही निहित है ब्रह्म, जीवन का यथार्थ परिपूर्ण तथ्य है अतः शिक्षा का उद्देश्य इसी यथार्थ परिपूर्ण तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना है।
- मनुष्य में ब्रह्मनिष्ठा से आत्म विश्वास का जागरण होता है ब्रह्म का साक्षात्कार करने वाला व्यक्ति आत्मदृष्टा बन जाता है और यह आत्मा एवं परमात्मा में भेद को नहीं देखता है इसके लिए आत्मा परमात्मा एक है।
- स्वामी जी श्रेष्ठ व्यक्ति का निर्माण करना शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मानते हैं। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा व्यक्ति में ब्रह्म साक्षात्कार, आत्मविश्वास यथार्थ, ऐक्य की भावना,धार्मिक विकास तथा वैराग्य आदि का विकास हो सके।

2.3 निष्कर्ष

उपर्युक्त शोध ग्रन्थों के अध्ययन से यह स्पष्ट है, कि स्वामी विवेकानंद जी द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन का शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान में रामकृष्ण मिशन के द्वारा शिक्षा के साथ-साथ अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य भी परिचालित किए जा रहे हैं। साथ ही मिशन के द्वारा व्यक्ति को आगे बढनें के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। रामकृष्ण मिशन नैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने पर भी बल देता है। शोधकर्त्ता द्वारा पाया गया कि अभी तक रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक योगदान पर कोई उल्लेखनीय शोध कार्य नहीं हुआ है। कुछ एक शोध कार्य जो इस विषय पर हुए भी हैं उनमें रामकृष्ण मिशन के दशकों पूर्व तक के कार्यों को सम्मिलित किया गया है, अतः रामकृष्ण मिशन के अद्यतन कार्यों को समाहित करते हुए शोध कार्य किया जाना पुनः प्रासंगिक हो गया है, इसलिए इस क्षेत्र में शोध करने की महती आवश्यकता है। शोधार्थी द्वारा इस क्षेत्र में कार्य करने का उद्देश्य यह जानना है कि अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में शिक्षा के क्षेत्र में रामकृष्ण मिशन का क्या योगदान है? इस विषय पर कार्य करने से रामकृष्ण मिशन की सम्पूर्ण शैक्षिक गतिविधियों की जानकारी मिल सकेगी।

¤ ¤ ¤ ¤ ¤

3.1 स्वामी विवेकानन्द का संक्षिप्त परिचय

रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द जी के द्वारा की गई , जिनका संक्षिप्त परिचय/विवरण निम्न है-

व्यक्ति का जन्म लेना महत्त्वपूर्ण नहीं होता है। व्यक्ति अपने कर्मों एवं विचारों से यदि समाज को दीर्घकालीन दिशा प्रदान करता है तो वह अमर हो जाता है भले ही भौतिक रूप से वह अल्पायु की क्यों न हो ? स्वामी विवेकानन्द ऐसे ही महान व्यक्तियों के श्रृंखला की एक सुनहरी कड़ी है जिन्होंने अपने अल्प जीवन काल में ही उच्च आदर्शों एवं झंकृत कर देने वाले विचारों से समाज को ऐसी ज्योति प्रदान की कि अंधकार में डूबी मानवता आज भी उनके जीवन को एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में देखती है।

12 जनवरी 1863 के पौष संक्रान्ति के प्रभात में विश्वनाथ दत्त के घर में एक बालक का जन्म यद्यपि उस समय देश-समाज के लिए भले ही एक महत्त्वपूर्ण घटना न रही हो परन्तु आगे चलकर इसी ने सदियों से गुलामी , अज्ञानता, अंधविश्वास में डूबी मानवता को एक ऐसे नैतिक धर्म की ओर मोड़ा जिससे सामान्य मानव की दशा व दिशा बदल गयी।

स्वामी विवेकानन्द का आविर्भाव ऐसे समय हुआ था जबकि जीवन में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो चला था। पाश्चात् अंधानुकरण ने संस्कृति पर कुठराघात किया था। धर्म , प्रेम, दया, करूणा आदि मात्र शब्द बनकर रह गये थे। ऐसे समय स्वामी जी ने ऐसे संन्यास का मार्ग सुझाया जो कि जीवन से विरत न होकर , समाज का हिस्सा बनकर ही , संन्यासी की भांति अपने कर्मों को सुचारू रूप से परिचालित करता था। स्वामी विवेकानन्द का संन्यास आश्रम जीवन से पलायन नहीं , वरन् जीवन में आदर्शों का समावेश था। यह विरक्ति नहीं अपितु नैतिक आसक्ति थी।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता में कायस्थ परिवार के प्रसिद्ध अधिवक्ता विश्वनाथ दत्त के घर 12 जनवरी 1863 ई0 को भुवनेश्वरी देवी के गर्भ से हुआ। वीरेश्वर शिव की भक्ति से पुत्र प्राप्ति के कारण माता ने इनका नाम 'वीरेश्वर' रखा। किन्तु उनका बचपन का वास्तविक नाम 'नरेन्द्रनाथ' था। इनके पिता विश्वनाथ दत्त नयी रोशनी के प्रगतिशील व्यक्ति

थे। वे एक कर्मठ गृहस्थ ही नहीं थे अपितु उन्हें धर्म तथा अध्यात्म की भी पर्याप्त जानकारी थी। किन्तु धार्मिक तथा सामाजिक मामलों में इनका दृष्टिकोण तर्कवादी एवं प्रगतिशील था। इनकी माता राजस्वी, तेजस्विनी, सरल, उदार हृदया तथा व्यावहारिक धर्मपरायण महिला थी। नरेन्द्र माता जी से रामायण और महाभारत की कहानियाँ बड़े चाव से सुनते थे और राम के चरित्र में विशेष रूचि रखते थे। इसके परिणामस्वरूप राम-सीता , शिव प्रभूति देवताओं की मूर्तियों के सम्मुख ध्यानोपासना के खेल खेलते थे। पिता जी की प्रखर बुद्धि तथा माता जी के प्रबल छात्र संस्कारों से ही नरेन्द्र का चरित्र मढ़ा गया था संभवतः उन पर अधिक प्रभाव अपने पितामह का पड़ा जो पच्चीस वर्ष की अल्पायु में धर्म पत्नी को त्याग के संन्यासी बन चुके थे।

किन्तु 1881 उनका मानसिक विकास परिपक्व होने लगा उन्होंने भारतीय शास्त्रों का अध्ययन किया तथा पाश्चात्य विचारों से भी अपना परिचय पढ़ाया। उनकी प्रारम्भ में अपनी संशयवादी दृष्टि के अनुरूप उन्होंने परमहंस की बातों को भी संशय की ही दृष्टि से देखा , किन्तु प्रारम्भिकसंशय, उलझन एवं प्रतिपाद के बाद उन्होंने स्वामी रामकृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण किया तथा उन्हें ही अपना पूर्ण गुरू एवं मार्ग-प्रदर्शन के रूप में स्वीकार लिया।

1886 में स्वामी रामकृष्ण के निधन के बाद उन्होंने अपने जीवन एवं कार्यों को नया मोड़ दिया। पहले तो उन्होंने सम्पूर्ण देश की विस्तृत यात्रा की तथा इस प्रकार देश की वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने देखा कि देश की समृद्ध संस्कृति तथा आध्यात्मिक परम्परा की जकड़ तो भारतीय जनमानस पर प्रबल एवं सुदृढ़ थी , किन्तु उन्होंने यह भी देखा कि देश में गरीबी , निर्धनता, दारिद्रय तथा इनके कारण उत्पन्न सामाजिक बुराइयाँ एवं निर्बलता भी व्यापक रूप में विद्यमान थी। उन्होंने समझा कि आध्यात्मिक प्रगति तब तक सम्भव नहीं होती जब तक भौतिक स्तर की कमजोरियाँ दूर न हों। अतः उन्होंने एक व्यापक आध्यात्मिक क्रान्ति की आवश्यकता समझी और यह भी समझा कि उसके लिये सबल आध्यात्मिक नेतृत्व की भी आवश्यकता है। फलतः उन्होंने इसी दिशा में अपने योगदान का निश्चय किया।

जिस काल में उनके मन में इस प्रकार की योजना बन रही थी , उसी समय एक ऐसी महत्त्वपूर्ण घटना कि उस आध्यात्मिक नेतृत्व की बागडोर सहज रूप में उनके हाथ में आ

गयी। उन्हें सूचना मिली कि शिकागो में विश्व-धर्म-सम्मेलन 'पार्लियामेन्ट ऑफ रिलीजन्स' के रूप में आयोजित होने को है। उन्होंने वहाँ जाने का निश्च किया और तय किया कि वहाँ वे भारतीय आध्यात्मिकता की शक्ति को विश्व के सामने प्रस्तुत करेंगे। वहाँ जो कुछ भी घटा वह तो आज घर-घर को विदित है , किन्तु उसका एक परिणाम यह हुआ कि स्वामी विवेकानन्द को भारतीय आध्यात्म का नेतृत्व सहज रूप में प्राप्त हो गया।

विदेशों में भी उन्होंने वृहत् यात्राएँ कीं तथा वहाँ की अच्छी बातों को जानने सीखने का प्रयास किया। वहाँ से वापस आने पर स्वामी विवेकानन्द एक प्रमुख विचारक तथा भारतीय आध्यात्मिकता के प्रमुख चिन्तक के रूप में प्रतिष्ठित हुये। अब उन्होंने कलकत्ता के निकट बेलूर में स्वामी रामकृष्ण आश्रम की स्थापना की , तथा उस आश्रम के माध्यम से जनकल्याण, सेवा तथा सामाजिक सुधार का कार्य बड़े मनोयोग एवं लगन से प्रारम्भ किया। 1899 में उन्होंने पुनः पश्चिम की यात्रा की तथा भारतीय आध्यात्मिकता का सन्देश विदेशों में भी फैलता। 4 जुलाई, 1902 को उनका निधन हुआ , किन्तु उन्होंने स्वामी रामकृष्ण आश्रम तथा उस आश्रम में सेवा-व्रत लेने वाले अनेक सन्यासियों की परम्परा इस रूप में स्थापित कर दी, कि सेवा, सामाजिक सुधार तथा आध्यात्मिक चिन्तन की सरिता तब से सतत् प्रवाहित है।

3.2 रामकृष्ण परमहंस का संक्षिप्त परिचय

स्वामी विवेकानन्द जी ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस के नाम पर की जिनका विवरण इस प्रकार है-

रामकृष्ण परमहंस भारत के एक महान संत, आध्यात्मिक गुरू एवं विचारक थे। इन्होंने सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया। उन्हें बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने कठोर साधना और भक्ति का जीवन बिताया। स्वामी रामकृष्ण मानवता के पुजारी थे। साधना के फलस्वरूप वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे हैं और उनमें कोई भिन्नता नहीं। वे ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न-भिन्न साधन मात्र हैं।

मानवीय मूल्यों के पोषक संत रामकृष्ण परमहंस का जन्म 17 फरवरी सन् 1836 ई0 (फाल्गुन शुक्ल द्वितीया बुधवार) को बंगाल प्रांत स्थित हुगली जिले के कामारपुकुर ग्राम में एक सद्ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये उन्नीसवीं शताब्दी में भारत के सबसे प्रसिद्ध सन्त थे। इनके बचपन का नाम गदाधर था। इनके पिता जी का नाम खुदीराम चट्टोपाध्याय और माता जी का नाम चन्द्रमणि देवी था। उनके भक्तों के अनुसार रामकृष्ण के माता-पिता को उनके जन्म से पहले ही अलौकिक घटनाओं और दृश्यों का अनुभव हुआ था। गया में उनके पिता खुदीराम ने एक स्वप्न देखा था जिसमें उन्होंने देखा की भगवान गदाधर (विष्णु के अवतार) ने उन्हें कहा कि वे उनके पुत्र के रूप में जन्म लेंगे। उनकी माता चंद्रमणि देवी को भी ऐसा एक अनुभव हुआ था उन्होंने इनकी बालसुलभ सरलता और मंत्रमुग्ध मुस्कान से हर कोई सम्मोहित हो जाता था।

सात वर्ष की अल्पायु में ही गदाधर के सिर से पिता का साया उठ गया। ऐसी विपरीत परिस्थिति में पूरे परिवार का भरण-पोषण कठिन होता चला गया। आर्थिक कठिनाइयाँ आई। बालक गदाधर का साहस कम नहीं हुआ। इनके बड़े भाई रामकुमार चट्टोपाध्याय कलकत्ता (कोलकाता) में एक पाठशाला के संचालक थे। वे 17 वर्ष के गदाधर को अपने साथ कोलकाता ले गए। रामकृष्ण का अन्तर्मन अत्यन्त निश्छल, सहज और विनयशील था। संकीर्णताओं से वह बहुत दूर थे। अपने कार्यों में लगे रहते थे।

सतत् प्रयासों के बाद भी रामकृष्ण का मन अध्ययन-अध्यापन में नहीं लग पाया। कलकते की जानबाजार निवासिनी रानी रासमणि ने गंगा तट पर साठ बीघा जमीन खरीदकर लाखों रुपये व्यय करते हुए वहाँ विशाल काली मन्दिर, सभामण्डप, बारह शिव मंदिर, राधाकान्त जी का मन्दिर, चाँदनी, सामने पक्का घाट, भण्डार, भोगघर, अतिथिशाला, नौबतखाना, मनोहर उद्यान व कोठी आदि का निर्माण कराया था। 31 मई 1855 ई 0 बृहस्पतिवार के दिन विराट समारोह के साथ इस नवनिर्मित, नवरत्न भूषित सुशोभित मन्दिर में भवतारिणी काली माता की प्रतिष्ठा हुई। सभी भावों के भावी केन्द्र दक्षिणेश्वर 1855 में ही रामकृष्ण परमहंस के बड़े भाई रामकुमार चट्टोपाध्याय को दक्षिणेश्वर काली मंदिर (जो रानी रासमणि द्वारा बनवाया गया था) के मुख्य पुजारी के रूप में नियुक्त किया गया था। रामकृष्ण

और उनके भांजे हृदय रामकुमार की सहायता करते थे। रामकृष्ण को काली मंदिर में पुरोहित के तौर पर नियुक्त किया गया।

रामकुमार की मृत्यु के बाद श्री रामकृष्ण ज्यादा ध्यान मग्न रहने लगे। वे काली माता के मूर्ति को अपनी माता और ब्रह्माण्ड की माता के रूप में देखने लगे। कहा जाता है कि श्री रामकृष्ण को काली माता के दर्शन ब्रह्माण्ड की माता के रूप में हुआ था। रामकृष्ण इसकी वर्णना करते हुए कहते हैं घर द्वार , मंदिर और सब कुछ अदृश्य हो गया , जैसे कहीं कुछ भी नहीं था और मैंने एक अनंत तीर विहीन आलोक का सागर देखा , यह चेतना का सागर था। जिस दिशा में भी मैंने दूर-दूर तक जहाँ भी देखा बस उज्ज्वल लहरें दिखाई दे रही थी , जो एक के बाद एक मेरी तरफ आ रही थी।

जैसा कि वेद से लेकर भागवत , रामायण, गीता तक कहते है कि भक्त का अंतःकरण (इंद्री मन बुद्धि) दिव्य होने के उपरांत उसके किसी भी कार्य को कोई माया की बुद्धि से नहीं समझ सकता। इसीलिए कहते है कि रसिकों (संत) की बातें रसिक ही जाने। तो उनके स्वभाव को लोग न समझ कर, उन्हें उन्माद रोगी (आयुर्वेद के अनुसार ये मानसिक रोग है) ऐसा मानते थे। इसलिए ऐसी अफवाह फैलाने लगे थे कि दक्षिणेश्वर में आध्यात्मिक साधना के कारण रामकृष्ण का मानसिक संतुलन खराब हो गया था। इस बात से उनकी माँ और उनके बड़े भाई रामेश्वर रामकृष्ण का विवाह करवाने का निर्णय लिया। उनका यह मानना था कि शादी होने पर रामकृष्ण का मानसिक संतुलन ठीक हो जायेगा क्योंकि शादी के बाद आये जिम्मेदारियों के कारण उनका ध्यान आध्यात्मिक साधना से हट जाएगा। लेकिन आश्चर्य की बात तो तब हुई , जब रामकृष्ण ने खुद यह कहा कि वे अपने लिए कन्या ढूंढ लिए है वो शारदामणि है , जो जयरामबाटी (जो कामारपुकुर से 3 मिल दूर उत्तर पूर्व की दिशा में हैं) में रामचन्द्र मुखर्जी के घर में हैं। तब 1859 में 5-6 वर्ष की शारदामणि मुखोपाध्याय और 23 वर्ष के रामकृष्ण का विवाह सम्पन्न हुआ। विवाह के बाद शारदा जयरामबाटी में रहती थी और 18 वर्ष के होने के बाद वे रामकृष्ण के पास दक्षिणेश्वर में रहने लगी। तब तक रामकृष्ण संन्यासी का जीवन जीते थे।

कालान्तर में बड़े भाई भी चल बसे। इस घटना से वे व्यथित हुए। संसार की अनित्यता को देखकर उनके मन में वैराग्य का उदय हुआ। अन्दर से मन ना करते हुए भी श्री रामकृष्ण मंदिर की पूजा एवं अर्चना करने लगे। दक्षिणेश्वर स्थित पंचवटी में वे ध्यानमग्न रहने लगे। ईश्वर दर्शन के लिए वे व्याकुल हो गये। लोग उन्हें पागल समझने लगे।

चन्द्रमणि देवी ने अपने बेटे की उन्माद की अवस्था से चिन्तित होकर गदाधर का विवाह शारदा देवी से कर दिया। इसके बाद भैरवी ब्राह्मणी का दक्षिणेश्वर में आगमन हुआ। उन्होंने उन्हें तंत्र की शिक्षा दी। मधुरभाव में अवस्थान करते हुए ठाकुर ने श्रीकृष्ण का दर्शन किया। उन्होंने तोतापुरी महाराज से अद्वैत वेदान्त का ज्ञान लाभ प्राप्त किया और जीवन्मुक्त परमहंस की अवस्था को प्राप्त किया। संन्यास ग्रहण करने के बाद उनका नया नाम श्रीरामकृष्ण परमहंस हुआ। इसके बाद उन्होंने इस्लाम और क्रिश्चिन धर्म की भी साधना की।

समय जैसे-जैसे व्यतीत होता गया, उनके कठोर आध्यात्मिक अभ्यासों और सिद्धियों के समाचार तेजी से फैलने लगे और दक्षिणेश्वर का मंदिर उद्यान शीघ्र ही भक्तों एवं भ्रमणशील संन्यासियों का प्रिय आश्रयस्थान हो गया। कुछ बड़े-बड़े विद्वान एवं प्रसिद्ध वैष्णव और तांत्रिक साधक जैसे-पं 0 नारायण शास्त्री , पं0 पद्मलोचन तारकालकार , वैष्णवचरण और गौरीकांत तारकभूषण आदि उनसे आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त करते रहे। वह शीघ्र ही तत्कालीन सुविख्यात विचारकों के घनिष्ठ सम्पर्क में आए जो बंगाल में विचारों का नेतृत्व कर रहे थे। इनमें केशवचंद्र सेन , विजयकृष्ण गोस्वामी, ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम लिए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त साधारण भक्तों का एक दूसरा वर्ग था जिसके सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति रामचंद्र दत्त, गिरीशचंद्र घोष, बलराम बोस, महेंद्रनाथ गुप्त (मास्टर महाशय) और दुर्गाचरण नाग थे। स्वामी विवेकानन्द उनके परम शिष्य थे। रामकृष्ण के अंतिम संस्कार के समय उनके शिष्यों की तस्वीर।

रामकृष्ण परमहंस जीवन के अंतिम दिनों में समाधि की स्थिति में रहने लगे। अतः तन से शिथिल होने लगे। शिष्यों द्वारा स्वास्थ्य पर ध्यान देने की प्रार्थना पर अज्ञानता जानकर हँस देते थे। इनके शिष्य इन्हें ठाकुर नाम से पुकारते थे। रामकृष्ण के परमप्रिय शिष्य विवेकानन्द कुछ समय हिमालय के किसी एकान्त स्थान पर तपस्या करना चाहते थे। यही आज्ञा लेने जब

वे गुरू के पास गये तो रामकृष्ण ने कहा-वत्स हमारे आस-पास के क्षेत्र के लोग भूख से तड़प रहे हैं। चारों ओर अज्ञान का अंधेरा छाया है। यहाँ लोग रोते-चिल्लाते रहें और तुम हिमालय की किसी गुफा में समाधि के आनन्द में निमग्न रहो। क्या तुम्हारी आत्मा स्वीकारेगी ? इससे विवेकानन्द दरिद्र नारायण की सेवा में लग गये। रामकृष्ण महान योगी , उच्चकोटि के साधक व विचारक थे। सेवा पथ को ईश्वरीय , प्रशस्त मानकर अनेकता में एकता का दर्शन करते थे। सेवा से समाज की सुरक्षा चाहते थे। गले में सूजन को जब डाक्टरों ने कैंसर बताकर समाधि लेने और वार्तालाप से मना किया तब भी वे मुस्कराये। चिकित्सा कराने से रोकने पर भी विवेकानन्द इलाज कराते रहे। चिकित्सा के बावजूद उनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया।

अंत में वह दुःख का दिन आ गया। 1886 ई0 16 अगस्त सवेरा होने के कुछ ही वक्त पहले आनन्दघन विग्रह श्रीरामकृष्ण इस नश्वर देह को त्याग कर महासमाधि द्वारा स्व-स्वरूप में लीन हो गये। रामकृष्ण छोटी कहानियों के माध्यम से लोगों को शिक्षा देते थे। कलकत्ता के बुद्धिजीवियों पर उनके विचारों ने जबरदस्त प्रभाव छोड़ा था , हालांकि उनकी शिक्षायें आधुनिकता और राष्ट्र के आजादी के बारे में नहीं थी। उनके आध्यात्मिक आंदोलन ने परोक्ष रूप से देश में राष्ट्रवाद की भावना बढ़ने का काम किया क्योंकि उनकी शिक्षा जातिवाद एवं धार्मिक पक्षपात को नकारती हैं। रामकृष्ण के अनुसार ही मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है। रामकृष्ण कहते थे कि कामिनी कंचन (संसार में मन का आसक्त होना) ईश्वर प्राप्ति के सबसे बड़े बाधक हैं।

रामकृष्ण संसार को माया के रूप में देखते थे। वो कहते थे , माया दो प्रकार की है , अविद्या माया और विद्या माया। अविद्या माया व्यक्ति के काले शक्तियों को दर्शाती हैं जैसे काम, लोभ, लालच, क्रूरता, स्वार्थी कर्म आदि यह मानव को चेतना के निचले स्तर पर रखती हैं। यह शक्तियाँ मनुष्य को जन्म और मृत्यु के चक्र में बंधने के लिए जिम्मेदार हैं। वही विद्या माया व्यक्ति की अच्छी शक्तियों के लिए जिम्मेदार है जैसे निस्वार्थ कर्म , आध्यात्मिक गुण, ऊँचे आदर्श, दया, पवित्रता, प्रेम (भक्ति)। यह मनुष्य को चेतन के ऊँचे स्तर पर ले जाती है।

3.3 रामकृष्ण मिशन की स्थापना

सच्चे जननायक की दृष्टि से छोटे-से छोटा ब्यौरा भी नहीं छूटता। विवेकानन्द जानते थे कि यदि उन्हें अपनी जनता के आदर्श की सिद्धि के मार्ग को दर्शाना है , तो उनमें केवल उत्साह जगाना ही यथेष्ट नहीं: उन्हें एक आध्यात्मिक सेना में भर्ती करना होगा। चुने हुए कार्यकर्त्ता जनता के नवीन मानव के आदर्श रूप में प्रस्तुत करने होंगे। उनका अस्तित्व की नई व्यवस्था की प्रतिज्ञा होगी।

एक मई 1897 को रामकृष्ण के समस्त संन्यासी और गृहस्थ शिष्य कलकत्ते में एक सहयोगी बलराम के घर निमंत्रित किये गये। विवेकानन्द ने गुरूवत् भाषण किया। उन्होंने कहा कि भारत जैसे देश में वह संगठन गणतंत्रीय पद्धति से चलाना-जिसके अनुसार प्रत्येक को समान मताधिकार होता है और निर्णय बहुमत से होते हैं-बुद्धिमानी न होगी। उसका समय जब आयेगा जब सदस्यगण स्वार्थ और विशिष्ट पूर्वाग्रह जनहित के पक्ष में त्याग देंगे।

सम्प्रति लोग एक मार्ग-दर्शक चाहते थे। वैसे विवेकानन्द तो सतगुरू के सेवक के रूप में ही कार्य कर रहे थे। उनकी प्रेरणा से निम्नांकित प्रस्ताव स्वीकृत किये गये-

- रामकृष्ण मिशन नामक एक संस्था की स्थापना की जाये।
- इसका उद्देश्य उन सत्य सिद्धान्तों का प्रचार करना होगा जो श्री रामकृष्ण ने मानवता के कल्याण के लिए अपने आचरण के साक्ष्य से प्रतिपादित किये और मानव जनों को अपनी दैहिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए उनका अनुकरण करने में सहायता देना होगा।
- इसका कर्त्तव्य होगा रामकृष्ण संचालित उस आन्दोलन का समुचित भावना के साथ निर्देशन करना जिसका लक्ष्य है विभिन्न मतों को एक ही परम धर्म के विविध रूपों के समान मानते हुए उनके अनुयायियों में बन्धुत्व का प्रचार।
- इसकी कार्य पद्धति - (1) जन समुदाय के सांसारिक और आध्यात्मिक कल्याण में सहायक विधाओं की शिक्षा देने की सामर्थ्य वाले लोग तैयार करना। (2) कलाओं

और उद्योगों को विकसित और प्रोत्साहित करना। (3) रामकृष्ण के जीवन में प्रतिबिम्बित वैदान्तिक और धार्मिक विचारों का जनसाधारण के मध्य प्रचार करना।

- इसके कार्य के दो विभाग होंगे - पहला भारतीय: देश में विविध स्थानों पर ऐसे संन्यासियों और गृहस्थों की, जो दूसरों की शिक्षा में जीवन अर्पित करने को तैयार हो , साधना के मठ और आश्रम स्थापित किये जायेंगे। दूसरा विदेशी: यह सम्प्रदाय के सदस्यों को अध्यात्म केन्द्र खोलने तथा विदेशी और भारतीय केन्द्रों में परस्पर सहायता एवं सहानुभूति का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भारत से बाहर दूसरे देशों को भेजेगा।
- मिशन के उद्देश और आदर्श पूर्णतः आध्यात्मिक और मानवीय होगें और उसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा।
- जो भी व्यक्ति रामकृष्ण मिशन के ध्येय में विश्वास रखता है अथवा जो संघ के उपर्युक्त उद्देश्यों और लक्ष्यों में सहानुभूति रखता है या सहयोग करने के लिए तैयार है , वह इसकी सदस्यता के लिए पात्र है।

रामकृष्ण मिशन की संरचना विस्तृत मानव जाति के हितार्थ की गई है। उसका कार्यक्षेत्र किसी देश, धर्म, जाति तथा सम्प्रदाय की सीमा में आबद्ध नहीं है, परन्तु जिसके नाम पर संघ का नामकरण किया गया, उसके द्वारा प्रतिपादित तथ्यों तथा विचारों को इस समाज ने अपनी निर्देशक रेखा स्वीकार किया है। रामकृष्ण मिशन का न केवल नामकरण ही विवेकानन्द ने अपने गुरू के नाम पर किया , अपितु यह भी आवश्यक माना कि रामकृष्ण द्वारा प्रतिपादित विचार पद्धति का ही मिशन द्वारा प्रचार प्रसार हो।

स्वामी विवेकानन्द स्वयं ही उस समिति (रामकृष्ण मिशन) के साधारण सभापति बने। स्वामी ब्रह्मानन्द जी कलकत्ता केन्द्र के सभापति और स्वामी योगानन्द जी उप सभापति बने। बलराम बसु के मकान पर प्रत्येक रविवार को समिति का अधिवेशन होना निश्चित किया। इस सभा के पश्चात् तीन वर्ष तक रामकृष्ण मिशन समिति का अधिवेशन प्रति रविवार को बलराम बसु के मकान पर हुआ। इसके बाद विवेकानन्द ने अविलम्ब जनसेवा और वेदान्त शिक्षा के दोहरे कार्य का श्रीगणेश किया।

स्वामी विवेकानन्द भागीरथी के तट पर एक स्थायी मठ का निर्णय करना चाहते थे। भागीरथी के पश्चिमी तट पर बैलूर गाँव में स्वामी जी की शिष्या मिस हेनरिएटा मूलर द्वारा दान में दी गयी धनराशि से भूमि खरीदी गई। मठ का निर्माण करने में लगभग एक वर्ष लग गया। अमेरिकन शिष्या श्रीमती ओलीबुल ने वर्तमान ठाकुर घर के निर्माण का सारा व्यय भार स्वयं उठाया और मठ का व्यय चलाने के लिए बैलूर मठ के संचालकों के हाँथ में एक लाख से अधिक रुपये दिये।

3 फरवरी 1898 ई0 को गंगा के पश्चिमी तट पर बेलूर गाँव में एक पुराने मकान सहित लगभग इक्कीस बीघा जमीन खरीदी गयी। नयी जमीन के दक्षिणी ओर अवस्थित , एक उद्यान-भवन किराये पर लेकर , मठ को आलमबाजार से स्थानांतरित कर अस्थायी तौर पर उसमें लाया गया। नयी जीवन में मन्दिर तथा मठ भवन के निर्माण का शुभारम्भ हुआ। बेलूर मठ ही अब स्वामी विवेकानन्द के कार्यो का केन्द्र बन गया।

रामकृष्ण मिशन अब विस्तृत होकर भारत तथा विभिन्न देशों में कुल मिलाकर आज 118 शाखाओं में बँट गया है। वेदान्त की शिक्षाओं को व्यावहारिक रूप देना ही इस संघ का प्रमुख उद्देश्य था। आज भी देश के विभिन्न भागों में अद्वैत संघ की शाखाएँ सांस्कृतिक उन्नयन और राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कार्य में लगी है। रामकृष्ण मिशन और मठ स्वयं के औषधायलय, विद्यालय, विद्यार्थीगृह, पुस्तकालय, अनाथालय एवं प्रकाशन केन्द्र चलाते है , जो मानव समाज की सेवा में रहते है।

3.4 रामकृष्ण मिशन के उद्देश्य

- श्री रामकृष्ण द्वारा प्रतिपादित तथा उनके जीवन में प्रत्यक्षीकृत वेदान्त और उसके सिद्धान्तों के अध्ययन का प्रचार एवं प्रसार करना ही तुलनात्मक धर्मशास्त्र को सब से व्यापक रूप में प्रस्तुत करना।
- कला, विज्ञान और उद्योग-व्यवसाय के अध्ययन का प्रचार एवं प्रसार करना।
- उपरिनिर्दिष्ट ज्ञान की समस्त शाखाओं के अध्यापकों को प्रशिक्षित करना और उन्हें जनसमूह तक पहुँचने के योग्य बनाना।

- जनसमूह में शिक्षा कार्य का परिचालन करना।
- विद्यालयों, महाविद्यालयों, अनाथालयों, कार्यालयों, प्रयोगशालाओं, निःशुल्क अस्पतालों व औषधालयों , अशक्तों, अपंगों और पीड़ितों के आश्रयगृहों , अकाल निवारण-कार्यों तथा इसी प्रकार के अन्य शैक्षणिक एवं धर्मार्थ कार्यों और संस्थाओं की प्रतिष्ठा करना, उनका निर्वाह और परिचालन करना तथा उनकी सहायता करना।
- संघ के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होने वाले वृत्तपत्रों और नियतकालिक पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों और पत्रकों का मुद्रण और प्रकाशन करना एवं उनका निःशुल्क अथवा अन्य प्रकार से वितरण या विक्रय करना।
- संघ द्वारा सम्पादित हो सकने वाले ऐसे अन्य किसी भी कार्य का परिचालन करना, जो उपर्युक्त किसी भी उद्देश्य से सम्बन्धित है तथा अपरोक्ष या परोक्ष रूप से उसकी पूर्ति में सहायक हो सकता है।

¤ ¤ ¤ ¤ ¤

4.1 शिक्षा का तत्त्व

- मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।
- समस्त ज्ञान चाहे वह लौकिक हो अथवा आध्यात्मिक, मनुष्य के मन में है।
- सभी ज्ञान और सभी शक्तियाँ भीतर है। हम जिन्हें शक्तियाँ , प्रकृति के रहस्य या बल कहते है, वे सब भीतर ही है।
- समस्त ज्ञान मनुष्य के अन्तर में अवस्थित है , उसे केवल जागृति-केवल प्रबोधन की आवश्यकता है।
- हमें विधायक विचार सामने रखने चाहिए निषेधात्मक विचार लोगों को दुर्बल बना देते है।
- यदि तुम उनके सामने विधायक विचार रखो, तो उनमें मनुष्यत्व आएगा और वे अपने पैरों में खड़ा होना सीखेगें।
- शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है , जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूँस दिया गया है और जो आत्मसात् हुए बिना वहाँ आजन्म पडा रहकर गड़बड़ मचाया करता है। हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है , जो जीवन-निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो। यदि तुम केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हो , तो तुम एक पूरे ग्रन्थालय को कण्ठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हो। यदि शिक्षा का अर्थ जानकारी ही होता है, तब तो पुस्तकालय संसार में सबसे बड़े सन्त हो जाते और विश्वकोष महान् ऋषि बन जाते।
- हमें तो ऐसी शिक्षा चाहिए , जिससे चरित्र बने, मानसिक बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।
- हमें यान्त्रिक और ऐसी सभी शिक्षाओं की आवश्यकता है , जिनसे उद्योग-धन्धों की वृद्धि और विकास हो , जिससे मनुष्य नौकरी के लिए मारा- 2 फिरने के बदले अपनी

आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त कमाई कर सके और आपातकाल के लिए संचय भी कर सके।

- सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य मनुष्य निर्माण ही हो। सारे प्रशिक्षणों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना ही है।
- जिस प्रक्रिया से मनुष्य की इच्छाशक्ति का प्रवाह और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम है शिक्षा।
- हम मनुष्य बनाने वाला धर्म ही चाहते है। हम मनुष्य बनाने वाले सिद्धान्त ही चाहते है। हम सर्वत्र, सभी क्षेत्रों में मनुष्य बनाने वाली शिक्षा ही चाहते है।

4.2 शिक्षा का एकमेव मार्ग: एकाग्रता

- ज्ञान की प्राप्ति के लिए केवल एक ही मार्ग है और वह है एकाग्रता।
- रासायनिक अपनी प्रयोगशाला में अपने मन की सारी शक्तियों को एकाग्र करके एक ही केन्द्र में स्थिर करता है और तत्त्वों पर लगाता है - उससे तत्त्व विश्लेषित हो जाते है और उसे ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। ज्योतिषी अपने मन की शक्तियों को एकाग्र करके एक ही केन्द्र पर लाता है और दूरदर्शी यन्त्र के द्वारा उन्हें अपने विषयों पर लगाता है , बस त्यों ही तारागण और ग्रह समुदाय सामने चले आते है और अपना रहस्य उसके पास खोलकर रख देते है। चाहे विद्वान् अध्यापक हो , चाहे मेधावी छात्र हो , चाहे अन्य कोई भी हो , यदि वह किसी विषय को जानने की चेष्टा कर रहा है , तो उसे उपयुक्त प्रथा से ही काम लेना पड़ेगा। एकाग्रता की शक्ति जितनी अधिक होगी , ज्ञान की प्राप्ति भी उतनी अधिक होगी।
- मनुष्यों और पशुओं में मुख्य भेद केवल चित्त की एकाग्रता शक्ति का तारतम्य ही है।
- हिन्दुओं ने अन्तर्जगत पर , आत्मा के अदृष्ट प्रदेश पर अपने चित्त को एकाग्र किया और इस तरह योगशास्त्र की उन्नति की।
- एकाग्रता की शक्ति ही ज्ञान के खजाने की एकमात्र कुंजी है। ध्यान का अभ्यास करने से मानसिक एकाग्रता प्राप्त होती है।

- बारह वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन करने वाले को शक्ति प्राप्त होती है। पूर्ण ब्रह्मचर्य से प्रबल बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न होती है। वासनाओं को वश में कर लेने से उत्कृष्ट फल प्राप्त होते है। कामशक्ति को आध्यात्मिक शक्ति में परिणत कर लो। यह शक्ति जितनी ही प्रबल होगी उससे उतना ही अधिक कार्य हो सकेगा। जल का शक्तिशाली प्रवाह ही द्रव चालित खनन यन्त्र को चला सकता है।
- ब्रह्मचारी के मस्तिष्क में प्रबल कार्यशक्ति और अमोघ-इच्छाशक्ति रहती है।
- प्रत्येक बालक को पूर्ण ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने की शिक्षा देनी चाहिए। तभी उसमें श्रद्धा और विश्वास की उत्पत्ति होगी। सदैव और सभी अवस्थाओं में मन , वचन और कर्म से पवित्र रहना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है।
- श्रद्धा ही सारी उन्नति का मूल है। वह श्रद्धा ही है , जो एक मनुष्य को बड़ा और दूसरे को छोटा बनाती है।

4.3 चरित्र गठन के लिए शिक्षा

- मनुष्य का चरित्र उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों की समष्टि है , उसके मन के समस्त झुकावों का योग है। सुख और दुःख ज्यों-ज्यों उसकी आत्मा पर से होकर गुजरते है , वे उस पर अपनी-अपनी छाप या संस्कार छोड़ जाते है , और इन सब विभिन्न छापों की समष्टि ही मनुष्य का चरित्र कहलाता है।
- वाणी तो गौण है। विचार सजीव होते है, उनकी दौड़ बहुत दूर तक हुआ करती है।
- भलाई और बुराई दोनों का चरित्र-गठन में समान भाग रहता है , और कभी-2 तो सुख की अपेक्षा दुःख ही बड़ा शिक्षक होता है।
- विलास और ऐश्वर्य की गोद में पलते हुए , गुलाबों की शय्या पर सोते हुए और कभी भी आँसू बहाये बिना कौन महान् हुआ है ? जब हृदय में वेदना की टीस होती है , जब दुःख का तूफान चारों दिशाओं में घहराता है , जब मालूम होता है कि प्रकाश अब और न दिखेगा , जब आशा और साहस नष्ट-प्राय हो जाता है , तभी इस भयंकर आध्यात्मिक झंगावत के बीच अन्तर्निहित ब्रह्मज्योति प्रकाशित होती है।

- यदि कोई मनुष्य निरन्तर बुरे शब्द सुनता रहे , बुरे विचार सोचता रहे , बुरे कर्म करता रहे, तो उसका मन भी बुरे संस्कारों से पूर्ण हो जायेगा और बिना जाने ही वे संस्कार उसके समस्त विचारों तथा कार्यों पर अपना प्रभाव डाल देंगे।
- वास्तव में बड़ा तो वही है , जिसका चरित्र सदैव और सब अवस्थाओं में महान रहता है।
- चरित्र बस पुनः अभ्यास की समष्टि मात्र है और इस प्रकार का पुनः पुनः अभ्यास ही चरित्र का पुर्नगठन कर सकता है।
- मनुष्य की आत्मा स्वभाव से ही स्वयं प्रकाश है। अतः हमारे लिए प्रकाश का अस्तित्व सदा ही है।
- ज्ञानाग्नि प्रज्ज्वलित करो , एक क्षण में सब अशुभ चला जाएगा , अपने चरित्र का निर्माण करो और अपने प्रकृत स्वरूप को-उसी ज्योतिर्मय , उज्ज्वल, नित्य शुद्ध स्वरूप को प्रकाशित करो, तथा प्रत्येक व्यक्ति में उसी आत्मा को जगाओ।

4.4 धार्मिक शिक्षा

- धर्म तो शिक्षा का मेरूदण्ड ही है। यथार्थ सनातन तत्त्वों को जनता के समक्ष रखना है। पहले तो हमें महापुरुषों की पूजा चलानी होगी। जो लोग इन सब सनातन सत्यों को प्रत्यक्ष कर गये है, उनको जनता के समक्ष आदर्श या इष्ट के रूप में रखना होगा , जैसे- श्रीरामचन्द्र, महावीर, श्री हनुमान, श्री रामकृष्ण आदि।
- गुरू के श्री चरणों में सर्व तो भावेन आत्मसमर्पण और अटूट ब्रह्मचर्य-बस यही सफलता का रहस्य है। हनुमान एक ओर जिस प्रकार सेवादर्श के प्रतीक है- उसी प्रकार दूसरी ओर सिंह विक्रम के प्रतीक हैं- सारा संसार उनके सम्मुख श्रद्धा और भय से सिर झुकाता है।
- प्राचीन धर्मों ने कहा ''वह नास्तिक है , जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता। '' नया धर्म कहता है, ''नास्तिक वह है, जो स्वयं में विश्वास नहीं करता।''

- अनन्त शक्ति ही धर्म है। बल पुण्य है और दुर्बलता पाप। सभी पापों और सभी बुराइयों के लिए एक ही शब्द पर्याप्त है और वह है दुर्बलता।
- जो सत्य हो , उसकी साहस के साथ घोषणा करो। सभी सत्य सनातन है। सत्य ही आत्मा मात्र का स्वभाव है। सत्य तो बल प्रद है पवित्रता स्वरूप है , ज्ञान स्वरूप है। सत्य तो वह है जो शक्ति दे , जो हृदय के अन्धकार को दूर कर दे , जो हृदय में स्फूर्ति भर दे।
- सत्य जितना महान होता है , उतना ही सहज बोधगम्य होता है- स्वयं अपने अस्तित्व के समान सहज।
- उपनिषद शक्ति की विशाल खान है। उनमें ऐसी प्रचुर शक्ति विद्यमान है कि वे समस्त संसार को तेजस्वी कर सकते है। मुक्ति अथवा स्वाधीनता-दैहिक स्वाधीनता , मानसिक स्वाधीनता, आध्यात्मिक स्वाधीनता-यही उपनिषदों का मूल-मंत्र है।
- जब हृदय और मस्तिष्क का द्वन्द्व उपस्थित हो , तब हृदय का ही अनुसरण करना चाहिए। हृदय ही हमें उस उच्चतम् राज्य में ले जाता है , जहाँ बुद्धि कभी पहुँच नहीं सकती। वह बुद्धि के परे वहाँ जा पहुँचता है , जिसे अन्तःप्रेरणा कहते है। अतः सदा हृदय का ही संस्कार करो हृदय में से ईश्वर बोलता है।
- मानव जाति को जिस तीब्रतम प्रेम का अनुभव हुआ है वह धर्म से ही प्राप्त हुआ है।
- रामकृष्ण ने कभी किसी के विरुद्ध कोई कड़ी बात नहीं कही। उनमें ऐसी अपूर्व सहिष्णुता थी कि हर एक धर्मवाला यही समझता था कि ये उसी के धर्म के मानने वाले हैं। सब पर उनका प्रेम था , उनके लिए सभी धर्म सच्चे थे। उनका सारा जीवन मतवाद और साम्प्रदायिकता की संकुचित सीमा को तोड़ने में हीं बीता।

4.5 स्त्री शिक्षा

- वेदान्त की यह घोषणा है , कि सभी प्राणियों में वही एक आत्मा विराजमान है। स्मृतियाँ आदि सीखकर और स्त्रियों पर कड़े नियमों का बन्धन डालकर पुरुषों ने उन्हें केवल सन्तानोत्पादक मन्त्र बना रखा है।

- अवनति के युग में जब कि पुरोहितों ने अन्य जातियों को वेदाध्ययन के अयोग्य ठहराया, उसी समय उन्होंने स्त्रियों को भी अपने अधिकारों से वंचित कर दिया। पर वैदिक और औपनिषदिक युग में तो मैत्रेयी , गार्गी आदि पुण्य स्मृति महिलाओं ने ऋषियों का स्थान ले लिया था। सहस्त्र वेदज्ञ ब्राह्मणों की सभा में गार्गी ने याज्ञवल्क्य को ब्रह्म के विषय में शास्त्रार्थ करने के लिए ललकारा था।
- सभी उन्नत राष्ट्रों ने स्त्रियों को समुचित सम्मान देकर ही महानता प्राप्त की है।
- मनु महराज का कहना है - ''जहाँ स्त्रियों का आदर होता है, वहाँ देवता प्रसन्न रहते है और जहाँ उनका आदर नहीं होता , वहाँ सारे कार्य और प्रयत्न निष्फल हो जाते है। जहाँ ये स्त्रियाँ उदासीन और दुःख जीवन व्यतीत करती है , उस कुटुम्ब या देश की उन्नति को कोई आशा नहीं हो सकती।
- शिक्षा ही स्त्रियों की समस्याओं को हल करेगी। स्त्री शिक्षा का विस्तार धर्म को केन्द्र बनाकर करना चाहिए। धर्म के अतिरिक्त दूसरी शिक्षाएँ गौण होगी। धार्मिक शिक्षा , चरित्र गठन, ब्रह्मचर्य पालन-इन्हीं की ओर ध्यान देना चाहिए।
- यदि स्त्रियों में से एक भी ब्रह्म ज्ञानी हो गयी , तो उसके व्यक्तित्व के तेज से सहस्त्रों स्त्रियाँ स्फूर्ति प्राप्त करेंगी और सत्य के प्रति जागृत हो जाएँगी। इससे देश और समाज का बड़ा उपकार होगा।
- सुशिक्षित और सच्चरित्रवती ब्रह्मचारिणियाँ शिक्षा-कार्य का भार अपने ऊपर ले। ग्रामों और शहरों में केन्द्र खोलकर स्त्री शिक्षा के प्रचार का प्रयत्न करें। ऐसी सच्चरित्र , निष्ठावान उपदेशिकाओं के द्वारा देश में स्त्री शिक्षा का यथार्थ प्रचार होगा। इतिहास और पुराण, गृह व्यवस्था और कला-कौशल , गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्य और चरित्र-गठन के सिद्धान्तों की शिक्षा देनी होगी और दूसरे विषय जैसे-सीना , पिरोंना, गृह कार्य नियम, शिशुपालन आदि भी सिखाये जाएँगे। जप , पूजा और ध्यान शिक्षा के अनिवार्य अंग होंगे। दूसरे गुणों के साथ उन्हें शूरता और वीरता के भाव भी प्राप्त करने होगें। आधुनिक युग में उन्हें आत्मरक्षा के भी उपाय सीख लेना आवश्यक हो गया है।

4.6 जन शिक्षा

- हमारा महान राष्ट्रीय पाप है जन समुदाय की उपेक्षा करना , और यही हमारे अधःपतन का कारण है।
- जन समुदाय को शिक्षित बनाना ही एकमेव उपाय है।
- निम्न वर्ग के लोगों को अपने खोये हुए व्यक्तित्व का विकास करने के लिए शिक्षा देना ही उनकी एकमात्र सेवा करना है।
- आध्यात्मिक सत्यों को सब की पहुँच के भीतर ला दो। माह भाषा द्वारा शिक्षा दो और जन साधारण को उनकी निजी भाषा में शिक्षा दो।
- इसमें संस्कृत शिक्षा भी चलनी चाहिए, क्योंकि संस्कृत शब्दों की ध्वनि मात्र से हमारी जाति को प्रतिष्ठा, बल और शक्ति प्राप्त होती है। इसके साथ ही जन शिक्षा के अन्तर्गत आवश्यक विषयों तथा वाणिज्य व्यापार और कृषि आदि की भी शिक्षा दी जानी चाहिए।
- जन शिक्षा के माध्यम से जीवन के हर पहलू को आध्यात्मिक बनाना चाहिए।
- शिक्षा का घर-2 प्रचार होना चाहिए। यदि गरीब बालक शिक्षा लेने नहीं आ सकता , तो शिक्षा को ही उसके पास पहुँचना चाहिए।
- आधुनिक विज्ञान की सहायता से उनके ज्ञान को प्रज्ज्वलित कर दो। उन्हें इतिहास , भूगोल, विज्ञान और साहित्य पढ़ाओं और इन्हीं के साथ- 2 एवं इन्हीं के द्वारा धर्म के गम्भीर सत्यों की भी शिक्षा दो।
- राजा भतृहरि ने कहा है ''चाहे नीति निपुण लोग निन्दा करें या प्रशंसा , लक्ष्मी आए या जहाँ उसकी इच्छा हो चली जाए, मृत्यु आज हो या सौ वर्ष बाद, धीर पुरुष तो वह है, जो न्याय के पथ से तनिक भी विचलित नहीं होता।''
- कर्म ही पूजा है, आओ हम प्रार्थना करें- ''तमसो मा ज्योतिर्गमय''

  ''कृपामयी ज्योति, रास्ता दिखाओ।'' और अन्धकार में से एक किरण दिखाई देगी , पथ प्रदर्शक कई हाँथ आये बढ़ जाएगा।

4.7 व्यक्तित्व का विकास

- सम्पूर्ण शिक्षा तथा समस्त अध्ययन का एकमेव उद्देश्य है इस व्यक्तित्व को गढ़ना।
- सारी शिक्षा का ध्येय है मनुष्य का विकास।
- दार्शनिकों का वह व्यक्तित्व जो असर पैदा करता है , किंचिन्मात्र होता है और महान् धर्म संस्थाओं का वही व्यक्तित्व प्रचण्ड होता है।
- दार्शनिकों का व्यक्तित्व बुद्धि पर असर करता है और धर्म संस्थापकां का जीवन पर। पहला मानो केवल एक रासायनिक क्रिया है , जिसके द्वारा कुछ रासायनिक उपादान एकत्र होकर आपस में धीरे- 2 संयुक्त हो जाते है और अनुकूल परिस्थिति होने से या तो उनमें से प्रकाश की दीप्ति प्रकट होती है या वे असफल हो जाते है। दूसरा एक जलती हुई मशाल के सदृश है , जो शीघ्र ही एक के बाद दूसरे को प्रज्ज्वलित करता जाता है।
- सूक्ष्मतम् को हम आत्मा कहते है और स्थूलतम् को शरीर और जो कुछ छोटे परिणाम में इस शरीर में है , वही बड़े परिमाण में विश्व में है। जो पिण्ड में है , वहीं ब्रह्माण्ड में है। यह हमारा विश्व ठीक उसी प्रकार का है। बहिरंग में स्थूल घनत्व है और जैसे- 2 यह ऊँचा चढ़ता है, वैसे-2 वह सूक्ष्मतर होता जाता है और अन्त में परमेश्वर रूप बन जाता है।
- हम यह भी जानते है कि सब से अधिक शक्ति सूक्ष्म में है, स्थूल में नहीं।
- अब सम्पूर्ण मानव-समाज को या सम्पूर्ण प्राणिजगत् और मनुष्य तथा निम्न स्तर के प्राणियों की समष्टि को एक जाति मान लो। एक ऐसा ध्येय है जिसकी ओर यह समष्टि बढ़ रही है। उस ध्येय को हम पूर्णत्व नाम दे दें।

4.8 साध्य तथा साधन

- साधनों की ओर भी उतना ही ध्यान देना आवश्यक है, जितना साध्य की ओर।

- कार्य स्वतः उत्पन्न नहीं हो सकता, और जब तक कारण अभीष्ट समुचित और सशक्त न हो कार्य की उत्पत्ति नहीं होगी।
- यदि कारण के विषय में हम सावधान रहे तो कार्य स्वयं सम्पन्न हो जाएगा। कार्य है ध्येय की सिद्धि; और कारण है साधन। इसलिए साधन की ओर ध्यान देते रहना जीवन का एक बड़ा रहस्य है।
- दुःख का एकमेव कारण यह है कि हम आसक्त है, हम बँधते जा रहे है। इसीलिए गीता में कहा गया है , निरन्तर काम करते रहो , पर आसक्त मत होओ ; बन्धन में मत पड़ो। प्रत्येक वस्तु से अपने आपको स्वतन्त्र बना लेने की शक्ति स्वयं से संचित रखो।
- बल ही जीवन है और दुर्बलता ही मरण। बल ही अनन्त सुख है , अगर और शाश्वत जीवन है और दुर्बलता ही मृत्यु। आसक्ति ही अभी हमारे सब सुखों की जननी है।
- सच्चे सुख और यथार्थ सफलता का महान रहस्य यह है कि बदले में कुछ भी न चाहने वाला बिल्कुल निःस्वार्थी व्यक्ति ही सब से अधिक सफल व्यक्ति होता है।

4.9 शिक्षक और शिष्य

- शिक्षक अर्थात् गुरू के व्यक्तिगत जीवन के बिना कोई शिक्षा नहीं हो सकती शिष्य को बाल्यावस्था से ऐसे व्यक्ति (गुरू) के साथ रहना चाहिए , जिनका चरित्र जाज्वल्यमान अग्नि के समान हो, जिससे उच्चतम् शिक्षा का सजीव आदर्श शिष्य के सामने रहे। हमारे देश में ज्ञान का दान सदा त्यागी पुरुषों द्वारा ही होता आया है। ज्ञानदान का भार पुनः त्यागियों के कन्धों पर पड़ना चाहिए।
- भारतवर्ष की पुरानी शिक्षा प्रणाली वर्तमान प्रणाली से बिलकुल भिन्न थी। विद्यार्थियों को शुल्क नहीं देना पड़ता था। ऐसी धारणा ली कि ज्ञान इतना पवित्र है कि उसे किसी मनुष्य को बेचना नहीं चाहिए। ज्ञान का दान मुक्तहस्त होकर , बिना कोई दाम लिए , करना चाहिए। शिक्षकगण विद्यार्थियों को उनसे शुल्क लिए बिना ही अपने पास रखते थे। इतना ही नहीं बहुतेरे गुरू तो अपने शिष्यों को अन्न और वस्त्र भी देते थे। इन शिक्षकों के निर्वाह के लिए धनी लोग उन्हें दान दिया करते थे , और उसी से वे अपने

शिष्यों का पालन-पोषण करते थे। पुराने जमाने में शिष्य गुरू के आश्रम को ''समित्पाणि'' होकर (हाँथ में समिधा लेकर) जाता था और गुरू उसकी योग्यता का निश्चय करने के पश्चात् उसके कटिप्रदेश में तीन लड़वाली मुंज-मेखला बाँधकर उसे वेदों की शिक्षा देते थे। यह मेखला तन , मन और वचन को वश में रखने की उसकी प्रतिज्ञा की चिह्न-स्वरूप थी।

- गुरू के सम्बन्ध में यह जान लेना आवश्यक है कि उन्हें शास्त्रों का मर्म ज्ञात हो। जो शास्त्रों के वास्तविक मर्मज्ञ है, वे ही असल में सच्चे धार्मिक गुरू हैं।
- गुरू के लिए दूसरी आवश्यक बात है - निष्पापता। अपने कई आध्यात्मिक सत्य की उपलब्धि करने और दूसरों में उसका संचार करने का एकमात्र उपाय है- हृदय और मन की पवित्रता। गुरू को पूर्ण रूप से शुद्ध चित्त होना चाहिए , तभी उनके शब्दों का मूल्य होगा।
- वास्तव में गुरू का काम ही यह है कि वे शिष्य में शक्ति का संचार कर दे , न कि शिष्य की बुद्धि वृद्धि अथक अन्य किसी शक्ति को उत्तेजित मात्र करे। यह स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है कि गुरू से शिष्य में सचमुच एक शक्ति आ रही है। अतः गुरू का शुद्ध चित्त होना आवश्यक है।
- तीसरी आवश्यक बात है उद्देश्य के सम्बन्ध में। गुरू को धन , नाम या यश सम्बन्धी स्वार्थ-सिद्धि के हेतु धर्म शिक्षा नहीं देनी चाहिए। उनके कार्य तो सारी मानव-जाति के प्रति विशुद्ध प्रेम से ही प्रेरित हो। आध्यात्मिक शक्ति का संचार केवल शुद्ध प्रेम के माध्यम से ही हो सकता है। किसी प्रकार का स्वार्थ पूर्ण भाव , जैसे कि लाभ अथवा यश की इच्छा, तत्काल ही इस प्रेम रूपी माध्यम को नष्ट कर देगा।
- शिष्य होना आसान नहीं है। पहली शर्त यह है , कि जो शिष्य सत्य को जानना चाहता है, वह इस लोक अथवा परलोक में कुछ प्राप्त करने की सभी इच्छाओं को त्याग दे।
- निःस्वार्थता अधिक लाभदायक होती है, केवल लोगों में इसके अभ्यास करने का धैर्य नहीं होता। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अधिक लाभदायक है। प्रेम , सत्य तथा

निःस्वार्थता नैतिकता सम्बन्धी आलंकारिक वर्णन मात्र नहीं है , वरन् शक्ति की महान् अभिव्यक्ति होने के कारण वे हमारे सर्वोच्च आदर्श है।

- दूसरी शर्त यह है कि शिष्य को अपनी अन्तरिन्द्रियों और बहिरिन्द्रियों को नियन्त्रित करने में समर्थ होना चाहिए। जहाँ वह अपने मन द्वारा इन्द्रियों का , प्रकृति के आदेशों का, सफल विरोध कर सके। वह अपने मन से कह सके: ''तुम मेरे हो, मैं तुम्हें कुछ न देखने की अथवा सुनने की आज्ञा देता हूँ।'' इसके बाद मन को शान्त करना चाहिए।
- शिष्य की सहनशक्ति भी महान् होनी चाहिए। शिष्य की अगली शर्त जो पूरी करनी है , वह यह है कि उसमें मुक्त होने की आकांक्षा अत्यन्त तीव्र हो।
- अपने गुरू की पूजा ईश्वर दृष्टि से करो , पर उनकी आज्ञा का पालन आँखे मूँदकर न करो। प्रेम तो उन पर पूर्ण रूप से करो, परन्तु स्वयं भी स्वतंत्र रूप से विचार करो।
- सच्ची सहानुभूति के बिना हम अच्छी शिक्षा कभी नहीं दे सकते। 'न बुद्धिभेदं जनयेत्'।
- सच्चा गुरू वह है , जो अपने को तुरन्त शिष्य की सतह तक नीचे ला सकता है और अपनी आत्मा को शिष्य की आत्मा में प्रविष्ट कर सकता है तथा शिष्य के मन द्वारा देख और समझ सकता है। ऐसा ही गुरू यथार्थ में शिक्षा दे सकता है, दूसरी नहीं।

4.10 कर्त्तव्य

- यह जान लेना आवश्यक है कि कर्त्तव्य क्या है यदि मुझे कोई काम करना है तो पहले मुझे यह जान लेना चाहिए कि वह मेरा कर्त्तव्य है। तभी मै। उस कार्य को कर सकता हूँ।
- कर्त्तव्य के सम्बन्ध में सर्वत्र साधारण धारणा यही देखी जाती है, कि सत्पुरुषगण अपने विवेक के आदेशानुसार कर्म किया करते है।
- सभी युगों में समस्त सम्प्रदायों और देशों के मनुष्यों द्वारा मान्य यदि कर्त्तव्य का कोई एक सार्वभौमिक भाव रहा है , तो वह है- ''परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्'' अर्थात् परोपकार ही पुण्य है और दूसरों को दुःख पहुँचाना ही पाप है।

- श्रीमद्भगवदगीता में जन्मजात तथा अवस्थागत कर्त्तव्यों का बारम्बार वर्णन है। जीवन के विभिन्न कर्त्तव्यों के प्रति मनुष्य का जो मानसिक और नैतिक दृष्टिकोण रहता है , वह अनेक अंशों में उसके जन्म और उसकी अवस्था द्वारा नियमित होता है। इसीलिए अपनी सामाजिक अवस्था के अनुरूप एवं हृदय तथा मन को उन्नत बनाने वाले कार्य करना ही हमारा कर्त्तव्य है।
- कर्त्तव्य पालन की मधुरता प्रेम में ही है और प्रेम का विकास केवल स्वतंत्रता में होता है।
- हमारी उन्नति का एकमात्र उपाय यह है कि हम पहले वह कर्त्तव्य करे, जो हमारे हांथ है। किसी भी कर्त्तव्य को घृणा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।
- कर्मफल में आसक्ति रखने वाला व्यक्ति अपने भाग में आए हुए कर्त्तव्य पर भुनभुनाता है और अनासक्त पुरुष को सब कर्त्तव्य एक समान है।

4.11 कर्म

- भगवद्गीता में हमें इस बात का बारम्बार उपदेश मिलता है कि हमें निरन्तर कर्म करते रहना चाहिए। कर्म स्वभावतः ही सत्-असत् से मिश्रित होता है।
- जिस प्रकार पानी कमल के पत्ते को नहीं भिगो सकता , उसी प्रकार कोई कर्म भी फलासक्ति उत्पन्न करके निःस्वार्थ पुरुष को बन्धन में नहीं डाल सकता। अहं शून्य और अनासक्त पुरुष किसी जनपूर्ण और पापमय नगर के बीच ही क्यों न रहे पर पाप उन्हें स्पर्श तक न कर सकेगा।

4.12 शिक्षकों का कर्त्तव्य और दायित्व

शिक्षकों के कर्त्तव्य और दायित्व निम्नलिखित हैं-

4.12.1 शिक्षक बने विद्यार्थियों के उत्प्रेरक

- शिक्षक को केवल शिक्षा प्रदान ही नहीं करना है बल्कि छात्रों को उत्प्रेरित भी करना है। शिक्षक या शिक्षिका को अपने छात्रों के जीवन और चरित्र को प्रभावित करना

चाहिए तथा उन्हें (छात्रों को) उन विचारों और मूल्यों से लैस या सज्जित कर देना चाहिए जो उन्हें राष्ट्रीय-जीवन की धारा में सुयोग्य नागरिक के रूप में प्रवेश करने के योग्य बना सके।

- शिक्षक का कर्त्तव्य युवा पीढ़ी के मन एवं मनोभावों को सुरूपता प्रदान करना है। वह सुरूपता रचनात्मक पद्धति पर गढ़नी होगी , अर्थात् वैज्ञानिक एवं मानवीय मनोवृत्ति , आत्म-अनुशासन, दूसरों लोगों के लिए चिन्ता , परिस्थिति की समझदारी तथा उसमें दिलचस्पी, एक दृढ़-धारणा की लोकतन्त्र सहिष्णुता की नींव पर ही फलता-फूलता है तथा इस बात की दृढ़ धारणा की विवेकवान होना चाहिए न कि दूसरों का सिर फोड़ना चाहिए।
- शिक्षा के दौरान हमारे युवकों को सकारात्मक या रचनात्मक तत्त्वों को पहचानने तथा उन्हें सुरक्षित रखने एवं उन्हें अपने योगदानों से सुदृढ़ करने के पश्चात् आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित करने में अवश्य सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

4.12.2 शिक्षक प्रशिक्षण का महत्त्व

- शिक्षकों की भूमिका बहुत बड़ी तथा उनका दायित्व बहुत बड़ा है। शिक्षक या शिक्षिका को एक प्रभावशाली शिक्षक-प्रशिक्षण की जरूरत है ताकि वह अपनी संस्कृति तथा आधुनिक पश्चिमी संस्कृति के शैक्षणिक मूल्यों एवं विचारों को आत्मसात करने में समर्थ हो सके।
- भारत सरकार द्वारा शीघ्र घोषित की जाने वाली नयी शैक्षणिक नीति में , एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्यकारी योजना है- शिक्षक-प्रशिक्षण का सुधार।
- अध्यापन एक जीवन लक्ष्य है। शिक्षक ऐसे व्यक्ति को होना चाहिए जिसमें ज्ञान प्राप्त करने तथा उसके प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पण का भाव हो।
- हमें अपनी शिक्षण-पद्धति में दल के दल ऐसे सु-प्रशिक्षित शिक्षकों को उपलब्ध कराने के लिए कदम उठाना चाहिए। इसे पूरा करने के लिए एक नया प्रस्ताव है और वह यह है कि 12वीं कक्षा के उपरान्त शैक्षणिक प्रशिक्षण शुरू करना , त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (थ्री-ईयर डिग्री कोर्स) तथा एक वर्षीय स्नातकोत्तर शिक्षक

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को चतुर्वर्षीय शिक्षक-प्रशिक्षण के साथ संयुक्त कर देना। विधि (लॉ) की शिक्षा में दक्ष अधिवक्ताओं (लायर्स) को प्राप्त करने के लिए , छोटे स्तर पर इसे पहले ही लागू कर दिया गया है। अब इसे शिक्षक-प्रशिक्षण में भी लागू करना हितकर होगा। उच्च माध्यमिक (हायर सेकेण्डरी) छात्रों में से जो शिक्षक प्रशिक्षण के वातावरण तथा उन्मुखता में त्रिवर्षीय स्नातक पूर्व (अण्डर ग्रेजुएट) शिक्षा ग्रहण करेगें। अधिक शिक्षोन्मुखी प्रत्याशियों को आकर्षित करने का यही अवसर है। यह स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएट) शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अधिकाधिक प्रत्याशियों को लायेगा जो शिक्षण कार्य को केवल रोजगार के अवसर की अपेक्षा एक जीवन लक्ष्य के रूप में अधिक पसन्द करने लगेगें। इस तरह आवश्यक शैक्षिक प्रतिबद्धता तथा राष्ट्रीय समर्पण के भाव से युक्त शिक्षकों की एक भव्य शानदान सेना खड़ी करने की सम्भावना है।

4.12.3 शिक्षक ज्ञान से संयुक्त हो

- शिक्षण में दो घटक या अवयव है: पहला है ज्ञान के प्रति प्रेम और दूसरा है राष्ट्रीय सेवा के प्रति प्रेम। शिक्षक को पुस्तकों का अध्ययन कर अपने मस्तिष्क को अवश्य ताजा या अद्यतन रखना चाहिए। उसे (शिक्षक या शिक्षिका को) अपना ज्ञान भण्डार को निश्चय ही निरन्तर ताजा करते रहना चाहिए। प्राचीन तैत्तिरीय उपनिषद में एक प्रकार से परम प्रेरक दीक्षान्त भाषाण में जो सभी छात्रों के लिए सदैव प्रासंगिक है , छात्रों को यह सुन्दर उपदेश दिया गया है।
  स्वाध्याय - प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्
  ''अध्ययन और अध्यापन (पठन-पाठन) का कभी परित्याग नहीं करो।''
- शिक्षकों में राष्ट्रीयता बोध और नागरिकता का बोध होना चाहिए जो स्वयं से कह सके : 'मैं मात्र एक वेतनभोगी नौकर नहीं हूँ , मैं भाडे का टट्टू नहीं हूँ , मैं एक नागरिक हूँ। मेरे सामने बैठे ये बच्चे में उदीयमान सह-नागरिक है। मैं यहाँ उन्हें ज्ञान एवं चरित्र का अर्जन करने में सहायता प्रदान करने के लिए उपस्थित हूँ।

4.12.4 त्याग और सेवा

- विवेकानन्द कहते है - ''भारत के राष्ट्रीय आदर्श है: त्याग और सेवा। आप इन धाराओं में तीब्रता उत्पन्न कीजिए , और शेष सब अपने आप ठीक हो जाएगा। '' (विवेकानन्द साहित्य: खण्ड 3, पृष्ठ 28)
- व्यक्तित्व से विकसित व्यक्तित्व में इस प्रकार का आध्यात्मिक विकास सबसे पहले हमारे सभी शिक्षकों में अवश्यमेव होना चाहिए।
- व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र विकास का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है: सेवा का भाव। जब एक व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) अपने अतिरिक्त बल, ज्ञान तथा शक्ति का निवेश अन्य लोगों की सेवा में करना सीखता या सिखाती है तब वह विकसित व्यक्ति हो जाता है/जाती है।
- 'कच्चा मैं' हमेशा आक्रामक होता है, क्योंकि यह आत्म केन्द्रित होता है। परन्तु जब यह 'पक्का मैं'' हो जाता है तब यह अपने जीवन दर्शन में दूसरों के लिए जगह ढूँढ निकालना सीख लेता है।
- शिक्षकों को विकसित व्यक्तियों में समुन्नत होने के साथ ही अपने छात्रों को भी विकसित व्यक्तियों में परिवर्धित होने में सहायता करनी होगी। यही शिक्षा की यथार्थ आत्मा है तथा विवेकानन्द ने इसे अपने एक संक्षिप्त उद्गार में व्यक्त किया है: 'बनो और बनाओ, यही हमारा आदर्श वाक्य (मोटो) होगा। ' स्वयं विकसित व्यक्ति बनो तथा दूसरों को विकसित व्यक्ति बनाने में सहायता करो।

4.12.5 व्यक्ति को विकसित व्यक्ति में अंकुरित होना चाहिए

- अंग्रेज जीव विज्ञानी तथा मानवतावादी स्वर्गीय सर जूलियन हक्सले ने (टेलिहार्ड डि चार्डिन लिखित इन्ट्रोडक्शन टु द फिनामिनन आफ मैन) विकसित व्यक्ति और व्यक्तित्व की एक सुन्दर वैज्ञानिक परिभाषा दी है - ''विकसित व्यक्ति वे व्यक्ति है, जो अपनी जैव वैयक्तिकता का सचेतन सामाजिक सहभागिता में अतिक्रमण कर देते है।''

- वैयक्तिकता आनुवंशिक तौर पर सीमित अहं का प्रतिनिधित्व करती है तथा व्यक्तित्व उस आनुवंशिक सीमा के परे विस्तार के रूप में अहं का प्रतिनिधित्व करता है। श्री रामकृष्ण उन्हें 'काचा आमि' (कच्चा मैं) तथा पाका आमि (पक्का मैं) कहते है। किसी व्यक्ति का उसकी आनुवंशिक सीमा के परे सारा विकास आध्यात्मिक विकास है। वेदान्त के अनुसार वैयक्तिकता स्वयं आध्यात्मिक विकास में प्रथम चरण है। यह मनुष्य को सामूहिकता के सागर में डूबने से बचा लेता है तथा उसे (पुरुष या स्त्री को) मानवीय स्वाधीनता एवं गरिमा के सिंहासन पर प्रतिष्ठापित करता है।
- विकसित व्यक्ति सहयोग करने की, एक टीम या टोली के रूप में बने रहने तथा कार्य करने की क्षमता विकसित करते है और यह क्षमता आध्यात्मिक विकास का गौण-उत्पादन होने के कारण एक सहज और स्वाभाविक क्षमता है। केवल जैव व्यक्तित्व का, सचेतन सामाजिक सहभागिता के द्वारा विकसित व्यक्तित्व में उस उत्कर्ष, सुखी परिवार जीवन एवं पूर्ण राष्ट्रीय एकीकरण का एकमात्र उपाय है।

4.12.6 वैज्ञानिक एवं मानववादी प्रकृति की आध्यात्मिकता

- 1896 में लन्दन में व्यावहारिक जीवन में वेदान्त विषय पर दिए गये अपने व्याख्यान में स्वामी विवेकानन्द कहते है: 'हम चाहते है उन्नति, विकास और सत्य का साक्षात्कार। किसी मत का अवलम्बन करके ही मनुष्य आज तक कभी ऊँचा नहीं उठा। करोड़ों शास्त्र भी हम लोगों को पवित्र करने में सहायता नहीं कर सकते। कर सकने की शक्ति एकमात्र सत्य के साक्षात्कार में है, जो स्वयं हमारे भीतर है और उसकी प्राप्ति विचार से होती है। मनुष्य विचार करे। मिट्टी का ढेला कभी विचार नहीं कर सकता, वह सदा मिट्टी का ढेला ही रह जाता है। मनुष्य की गरिमा उसकी विचार शीलता के कारण है, पशुओं से हम इसी बात से भिन्न है।' (विवेकानन्द साहित्य, अष्टम् खण्ड, पृष्ठ 44 द्वितीय संस्करण)
- वैज्ञानिक प्रकृति को मानवतावादी प्रकृति से जुड़ा होना चाहिए। जैसा कि हमारे वेदान्त में माना गया है, ये दोनों (वैज्ञानिक एवं मानववादी प्रकृति) एक साथ मिलकर आध्यात्मिक विकास का निर्माण करते हैं। वे सत्य की विवेचनात्मक गवेषणा एवं

मनुष्य की सुख-शांति तथा कल्याण को सुनिश्चित करने की लालसा एवं उत्कंठा का निर्माण करते है। अतएव यह केवल विज्ञान के शिक्षकों का ही नहीं बल्कि सभी शिक्षकों का कार्य है।

- उपनिषदों के ऋषिगण सत्य को जानने की उत्कण्ठा तथा मानव की सुख-शान्ति एवं कल्याण की कामना से उत्प्रेरित थे , उन्होंने बुद्धिसंगत प्रश्नों-परिप्रश्नों एवं अन्वेषणों तथा गहन ध्यान के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर ली थी।
- वेदान्त सदैव एक बुद्धिसंगत प्रश्नात्मक-शंकात्मक प्रवृत्ति पर जोर देता है। हमारा वेदान्त हमारे मूलभूत एकत्व की यथार्थता पर जोर देता है। वेदान्त कहता है कि यह एक ही अभिन्न शक्ति या दैवी ऊर्जा है , जो प्रत्येक प्राणी के भीतर प्रवाहित होती है। अतः प्रेम तथा दूसरों के प्रति रूचि व्यक्तित्व से विकसित व्यक्तित्व में हुए इस आध्यात्मिक विकास का एक गौण उत्पादन हो जाता है।
- वेदान्त विवेकानन्द के द्वारा धर्म के विज्ञान की परिभाषा मनुष्य में पहले से अन्तर्निहित दिव्यता की अभिव्यक्ति के रूप में करता है। इस दिव्यता की थोड़ी-सी अभिव्यक्ति भी प्रेम, सेवा, रचनात्मकता एवं शान्ति का सृजन करती है। यह मनुष्य का अधिक ऊर्जा तथा इस ऊर्जा का उपयोग समाज की सेवा में करने की अभिरूचि प्रदान करती है। मनुष्य में ऊर्जा संसाधनों की वृद्धि करना तथा इसे एक मानववादी दिशा प्रदान करना- यही शिक्षा की वास्तविक आत्मा है।
- ज्ञान की वृद्धि ऊर्जा है। अतएव अपने छात्रों को ज्ञान का पथ-प्रदर्शन कीजिए ; उन्हें पुस्तकालय में जाने मौलिक पुस्तकों को पढ़ने तथा अधिकाधिक यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने, पढ़ी गयी विषय वस्तु पर चिन्तन करने तथा शिक्षकों एवं अन्य छात्रों के साथ इस पर चर्चा करने के लिए प्रेरित कीजिए। इस प्रकार शिक्षक केवल पढ़ाता ही नहीं बल्कि छात्रों को स्वयं ज्ञान की गवेषणा करने के लिए अभिप्रेरित भी करता है। संस्कृत शब्द विद्यार्थी का यही अर्थ है: अर्थी का अर्थ है विद्या यानी ज्ञान का अन्वेषक।
- ब्रह्मचारी या छात्र अपने ज्ञान का एक चतुर्थांश अपने आचार्य या शिक्षक से प्राप्त करता है और दूसरा चतुर्थांश अपनी बुद्धि के उपयोग के द्वारा , तृतीय चतुर्थांश अन्य

छात्र-छात्राओं के साथ पारस्परिक वार्तालाप से प्राप्त किया जाता है तथा चैथा चतुर्थांश कालक्रम से (अपने जीवन एवं कार्य के द्वारा) प्राप्त होता है।

- शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द की उक्तियों के संकलन की भूमिका लिखते हुए महात्मा गाँधी कहते है: ''निश्चय ही स्वामी विवेकानन्द के उद्गारों को किसी प्रस्तावना की आवश्यकता नहीं। उनका अपना प्रभाव अमिट है।''
- हमें स्वामी विवेकानन्द के ये शब्द दिलासा देते है: ''रसायनों को मिलाओ, प्रकृति के नियमों के अनुसार स्फटिक बन ही जाएँगे।''

4.12.7 वेतनभोगी नौकर बनाम नागरिक के रूप में शिक्षक

- जिस मानव जाति का संचालन हमारी राजनीति एवं प्रशासन करते है , वह एक संसाधन या तैयार का अन्तिम-उत्पादन है जिसका आरम्भ माता-पिता के द्वारा घर में तथा शिक्षकों के द्वारा शिक्षण संस्थाओं में होता है। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तैयारी आपके शिक्षकों के संरक्षण या देखरेख में होती है।
- सेकण्डरी स्कूल के शिक्षकों के रूप में , आप राष्ट्र के नये तथा अतिसंवेदनशील या शीघ्र प्रभावित होने वाले बच्चों से व्यवहार कर रहे है। उन बच्चों के मन में ऊँचे मानवीय मूल्यों की छाप छोड़ना शिक्षक का दायित्व है और नव शिक्षक उस दायित्व को निभाते है , तब आपकी पद-प्रतिष्ठा और गरिमा भी बढ़ जाती है अपने को मात्र एक कर्मचारी या नौकर मानने की अपेक्षा , आप अपने को एक उच्च राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाह करने वाला नागरिक समझे। यह एक महान परिवर्तन है कि वे शिक्षक मासिक वेतन पाने वाले मात्र एक वेतनभोगी नौकर नहीं रह जाते। आप एक राष्ट्र निर्माता मनुष्य का निर्माण करने वाला एक औ जार हो जाते है। मनुष्य-निर्मातृ धर्म तथा मनुष्य निर्मातृ शिक्षा के लिए विवेकानन्द के आह्वान का यही महत्त्व है।
- प्राचीन भारत में शिक्षकों को ऊँची प्रतिष्ठा प्रदान थी। हम लोग शिक्षक को गुरू शब्द से सम्बोधित करते है। आजकल हम लोगों ने उस शब्द को धार्मिक दीक्षा के सीमित क्षेत्र में संकुचित कर दिया है। वस्तुतः गुरू शब्द व्यापक सन्दर्भ रखता हैं गुरू वह है

जो बच्चे की आँखों और मन के ज्ञान को जगत् में उन्मेष करता है। बच्चे का प्रथम गुरू उसकी माता है। दूसरा गुरू पिता और तीसरा गुरू विद्यालय का शिक्षक है।

- शंकराचार्य अपने गुरूस्तोत्रम् में जिसका भारत में और अब विदेशों में भी , लाखों लोग सस्वर पाठ करते है तथा जिसका आरम्भ 'गुरूब्र्रह्मा गुरूर्विष्णुः ' के प्रसिद्ध शब्दों से होता है। गुरू द्वारा अर्पित सेवा का बड़ा ही सुन्दर प्रतिपादित करते है:

  अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया।

  चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

  ''मैं उन गुरू को नमन करता हूँ जो अज्ञान मोतियाबिन्द से अन्धे हुए किसी व्यक्ति की आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर उसकी आँखों को खोल देते है।''

¤ ¤ ¤ ¤ ¤

5.1 प्रस्तावना

ईश्वर के देवदूत समय- 2 पर पृथ्वी पर मानवता को छुड़ाने और मुक्त करने के लिए प्रकट होते है। यही उनके आने का उद्देश्य है , कि दुनिया के सभी धर्म प्रशंसित हो। वे मानवता को दुःख और पीड़ा से कैसे मुक्त करते हैं ? श्रीकृष्ण ने गीता में घोषित किया - तसम् अहम् समधर्त मृत्यु-संसार सागरत्, 'मैं संसार रूपी महासा गर से उनका उद्धारक हूँ जो कि नश्वर है। ' यीशु मसीह ने कहा - 'मेरे पास आओ जो थके हुए है, मैं आपको आराम दूँगा।' बुद्ध ने दुनिया को त्याग दिया और इस सुख ने उनको दुनिया को दुःख से बाहर निकालने में उनकी अन्तर्रात्मा से आग्रह किया। अपने स्वामी श्री रामकृष्ण का अनुसरण करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने बार-बार कहा कि वह मानवता को दुःख से मुक्त करने के लिए बार-बार आने के लिए उत्सुक होगें।

दुःख का मूल कारण अज्ञान है, जिसे वेदान्त दर्शन में अविद्या कहा जाता है। मानवता के उद्धारकों तथा महान देवदूतों द्वारा की गयी यह एक पुरानी खोज है। यह तर्कसंगत है कि दुःख से छुटकारा पाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अज्ञानता को नष्ट करना चाहिए। अज्ञान कैसे जाता है ? ज्ञान से। अज्ञानता को अंधेरा और ज्ञान को प्रकाश के रूप में समझा जाता है। ज्ञान की रोशनी अज्ञानता के अंधेरे को दूर करती है। हजारों वर्षों के अंधेरे को माचिस की तीली जलाकर एक क्षण में दूर किया जा सकता है और ठीक उसी प्रकार ज्ञान की शुरूआत के साथ अज्ञानता तत्काल गायब हो जाती है , जैसा कि श्री रामकृष्ण कहते थे - ''जिनकी अज्ञानता ज्ञान की जागृति से नष्ट हो गयी है , उनका ज्ञान सूर्य की रोशनी की तरह चमकता है'' (गीता 5.16)। इसीलिए ज्ञान को बहुत पवित्र माना जाता है - न हि ज्ञानेन सदृशम् पवित्रम् इह विद्यते (गीता , 4.38) और यह ज्ञान सक्षम शिक्षकों (आचार्यों) से विनम्रता से, उत्सुकता से प्रश्न पूछकर और समर्पित सेवाभाव से प्राप्त किया जाना चाहिए (गीता, 4.34)

5.2 रामकृष्ण मिशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में परिचालित कार्य

रामकृष्ण मिशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में परिचालित कार्यों को निम्न सारिणियों द्वारा स्पष्ट किया गया है-

तालिका संख्या-5.2.1

मठ और मिशन की शैक्षिक संस्थाएँ

संस्थाएँ	इकाईयों की संख्या	विद्यार्थियों की संख्या		कुल योग	सामाजिक रूप से पिछड़े
		बालक	बालिकाएँ		
विश्वविद्यालय	01	483	53	536	431
कला और विज्ञान कालेज	01	2204	39	2243	1487
संस्कृत कालेज	01	29	36	65	24
अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाएँ	01	44	4	48	32
शारीरिक शिक्षा के कालेज	01	141	-	141	141
जूनियर बेसिक प्रशिक्षण संस्थाएँ	04	97	242	339	150
उच्च माध्यमिक विद्यालय	12	10269	2067	12336	8127
माध्यमिक विद्यालय	25	6252	4358	10610	6174
संस्कृत विद्यालय	01	241	140	381	278
जूनियर हाईस्कूल/मिडिल स्कूल	14	1753	1388	3141	2841
प्राथमिक विद्यालय (i-v)	50	3885	2553	6438	3556
नर्सरी स्कूल/शिशु सदन	133	2657	2396	5053	1555
छात्रावास/स्टूडेन्ट्स होम	51	13749	6766	20515	7587
पालिटेक्निक	02	1144	-	1144	1131
जूनियर तकनीकी एवं औद्योगिकी विद्यालय	02	652	-	652	223
कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र	04	622	618	1240	1003
व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र	45	10662	9750	20412	14233
इन्स्टीट्यूट आफ एग्रीकल्चर	02	3836	486	4322	1257

ग्रामीण विकास प्रशिक्षण संस्थाएँ	02	-	1303	1303	604
अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र	107	1845	1889	3734	2748
रात्रिकालीन विद्यालय/ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र	08	139	146	285	261
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्था के केन्द्र	02	84	143	227	10
कोचिंग सेन्टर	215	5877	5932	11809	8697
अन्य	50	7690	3879	11569	3382
कुल योग-	**734**	**74355**	**44188**	**118543**	**65932**

तालिका संख्या-5.2.2

मिशन द्वारा संचालित व्यावसायिक पाठ्यक्रम

व्यावसायिक पाठ्यक्रम	प्रशिक्षित समूह	विद्यार्थियों की संख्या		सामाजिक रूप से पिछड़े
		बालक	बालिकाएँ	
दुग्ध, मुर्गीपालन, बत्तख पालन, बकरी पालन आदि	81	1072	1276	1806
मत्स्य पालन , पक्षी पालन , मधुमक्खी पालन , रेशम कीट पालन आदि	41	580	300	801
कृषि, बागवानी, पुष्पों का अध्ययन आदि	80	2757	1285	3990
कार्बनिक खेती, जैविक खाद आदि	24	404	193	553
मशरूम की खेती	17	107	236	247
फसलों की देखभाल	08	199	06	92
कृषक प्रशिक्षण एवं अनुकूलन	01	-	20	10
फसल-चक्र	10	29	214	100
शिल्पकला	20	12	392	124
कटाई, सिलाई, डिजाइनिंग (नमूना), कढाई करना आदि	125	52	2667	1246
मोटर ड्राइविंग	05	135	06	69
मोटर वाहन सेवा और मरम्मत	06	103	-	75
वेल्डिंग, बाइंडिंग निर्माण करना आदि	08	97	21	44
राजमिस्त्री गिरी, प्लम्बरिंग आदि	08	209	-	156
काष्ठ कर्म, छत की मरममत, फ्रेमिंग आदि	03	11	-	4
घरेलू उपकरणों का मरम्मत का काम	02	33	-	16
इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रानिक सामानों की रिपेयरिंग	26	493	-	305

तार मिस्त्री एवं मोटर बाँधना आदि	21	383	-	238
भौतिक चिकित्सा/ अस्पताल/वार्ड/ ओटी सहायक	04	84	52	66
बेसिक कम्प्यूटर आपरेशन्स	50	1723	840	1518
बेसिक कम्प्यूटर हार्डवेयर	03	52	-	22
वाणिज्यिक कला और पेंटिंग	01	06	08	05
फोटोग्राफी और वीडियो ग्राफी	01	11	03	03
अन्य	70	2110	2231	2744
कुल योग	**615**	**10662**	**9750**	**14234**

तालिका संख्या-5.2.3

मिशन के अन्य शैक्षिक कार्यक्रम

सांस्कृतिक संस्थाएँ/ कार्यक्रम/प्रतियोगिताएँ	**संस्थाओं की संख्या/ कार्यक्रमों की संख्या**	**प्रतिभागियों की संख्या/ प्रतिनिधियों की संख्या**
सांस्कृतिक इकाईयाँ (बालक संघ , ज्ञान वाहिनी आदि)	237	20412
सांस्कृतिक कैम्पस :		
व्यक्तित्व विकास आदि	26	3829
योगा, ध्यान आदि	44	1623
बच्चों के कैम्प (छुट्टियों के समय में शामिल)	114	8692
मूल्य शिक्षा कार्यक्रम	326	33630
कार्यशाला (वर्कशाप), संगोष्ठी, सेमिनार :		
शैक्षिक क्षेत्र (विज्ञान, साहित्य आदि)	33	5406
अन्य	15	7215
कुल योग	**801**	**80807**

ये सेवायें मुख्य रूप से आलो (अरूणाचल प्रदेश) , हतमुनिगुडा (रायगढ़), नारायन पुर (छत्तीसगढ़), नरेन्द्रपुर (कोलकाता), रॉंची (मोरवदी) में कृषि विज्ञान केन्द्र, शारदा पीठ (बेलूर) और सोहरा (चेरापूँजी) केन्द्र में ग्रामीण विकास प्रशिक्षण संस्थाओं और एकीकृत विकास परियोजना के माध्यम से प्रदान की जाती है।

ग्रामीण लोगों को समर्पित सेवाएँ नरेन्द्रपुर केन्द्र की लोक शिक्षा परिषद ईकाई और शारदा पीठ केन्द्र (बेलूर) के जन शिक्षा मन्दिर और समाज सेवक शिक्षा मन्दिर ईकाइयों का

विस्तार किया गया था। मुम्बई के सकवार केन्द्र में इसकी विस्तृत ग्रामीण विकास परियोजनाएँ जारी थी।

इसके अलावा ग्रामीण एवं आदिवासी लोगों की सेवा के लिए वहाँ पुस्तकालय , श्रव्य, दृश्य ईकाइयाँ आदि थी जिनका विवरण नीचे दिया गया है-

तालिका संख्या-5.2.4

मिशन द्वारा संचालित श्रव्य-दृश्य कार्यक्रम

	ईकाईयों की संख्या	**फिल्म स्क्रीन**	**ग्रामीण पहुँच**	**विद्यालय भ्रमण**	**लाभार्थी**
श्रव्य दृश्य इकाईयाँ	8	350	223	175	64252

तालिका संख्या-5.2.5

मिशन द्वारा संचालित पुस्तकालय

पुस्तकालय एवं अध्ययन कक्ष	**ईकाइयों की संख्या**	**किताबों की संख्या**	**समाचार पत्र**	**अवधि**	**प्रदान की गई किताबे**	**उपस्थिति**
सार्वजनिक पुस्कालय	28	162861	85	327	24586	46573
स्कूल/ कालेज पुस्तकालय	47	375018	212	880	30204	280939

5.3 आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्य

मठ एवं मिशन के विभिन्न केन्द्रों ने भारत के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आदर्श के प्रचार को विशेष महत्त्व दिया। साथ ही शैक्षणिक , स्वास्थ्य आदि विभिन्न सेवा कार्यों के माध्यम से श्रीरामकृष्ण देव द्वारा उद्घोषित 'शिवज्ञान से जीव सेवा ' की भावना व्यावहारिक रूप देने का प्रयास किया। सभी केन्द्रों ने सार्वजनिक उत्सवों , सभाओं, प्रवचनों और प्रकाशनों के द्वारा विभिन्न धर्मों के बीच पारस्परिक सौहार्द को बढ़ाने की दिशा में कार्य किया तथा मानव की अन्तर्निहित दिव्यता को प्रकट करने पर बल दिया।

विभिन्न केन्द्रों द्वारा रामकृष्ण-विवेकानन्द युवा सम्मेलन भी आयोजित किये गये , जिनमें पर्याप्त संख्या में युवक-युवतियों ने भाग लिया। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस 12 जनवरी को जो भारत शासन द्वारा ''राष्ट्रीय युवा दिवस '' के रूप में घोषित हुआ है, अवसर पर विभिन्न केन्द्रों के युवक-युवतियों के लिए आकर्षक एवं प्रेरणापूर्व कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इसके अलावा आलोच्य वर्ष में विदेशों में प्रचार कार्य पूर्व की ही भाँति नियमित और सुनियोजित रूप से होते रहे। स्वामी विवेकानन्द के समय से ही भारत के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक सन्देश को सुदूर देशों तक प्रचारित और प्रसारित करने का कार्य रामकृष्ण मठ एवं रामकृष्ण मिशन के त्यागी संन्यासी करते रहे है। इस वर्ष भी वरिष्ठ संन्यासियों ने उत्तर एवं दक्षिण अमेरिका में तथा यूरोप और एशिया में स्थित विभिन्न केन्द्रों में पूजा-अर्चना , प्रवचन-व्याख्यान आदि के माध्यम से भारत की आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक ज्योति को प्रज्ज्वलित रखा।

5.4 भारत में रामकृष्ण मिशन के प्रमुख शैक्षिक संस्थान

रामकृष्ण मिशन के अस्तित्व के 108 वर्षों के दौरान उपर्युक्त वर्णित स्वामी जी के शैक्षणिक दृष्टि को वास्तविकता प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के संस्थान शुरू किये गये है:-

- **स्कूल:** पूर्व प्राथमिक , प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्तर सामान्य शिक्षा प्रदान करते हैं।
- **कॉलेज:** डाक्टरेट/पोस्ट डाक्टरेट स्तर पर उच्च शोध के लिए सुविधाएँ और विज्ञान , मानविकी (भाषाओं सहित) , वाणिज्य और व्यवसाय उन्मुख विषयों में स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा प्रदान करना।
- **संस्कृत स्कूल:** द्वितीयक/उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत भाषा और साहित्य का ज्ञान प्रदान करना।
- **संस्कृत कालेज:** स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत भाषा और साहित्य का ज्ञान प्रदान करना।
- **वैदिक स्कूल:** माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर पर वैदिक शिक्षा प्रदान करना।
- **भाषाओं के स्कूल:** भारतीय और विदेशी स्तर पर वैदिक शिक्षा प्रदान करना।
- **शिक्षक प्रशिक्षण कालेज/संस्थान:** बेसिक/स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षकों को और डाक्टरेट/पोस्ट डाक्टरेट स्तर पर शिक्षकों में उच्चतर शोध के लिए सुविधाओं सहित प्रशिक्षण प्रदान करते है।
- **जूनियर तकनीकी और औद्योगिक स्कूल:** माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक स्तर पर तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना।
- **पॉलिटेक्निक:** डिप्लोमा स्तर पर इंजीनियरिंग की विभिन्न शाखाओं में तकनीकी शिक्षा प्रदान करना।
- **कृषि स्कूल/संस्थान:** डिप्लोमा स्तर पर कृषि और बागवानी में शिक्षा/प्रशिक्षण प्रदान करना।
- **लाइब्रेरियन प्रशिक्षण केन्द्र:** ग्रामीण प्रशिक्षुओं को पुस्तकालयाध्यक्ष का प्रशिक्षण प्रदान करना।
- **छात्रों के घर और छात्रावास:** मिशन द्वारा और अन्य लोगों द्वारा संचालित आवासीय विद्यालयों/कालेजों/संस्थानों को गुरू गृह प्रणाली के प्रतिरूप में विकसित करने का प्रयास किया गया।

- **अनाथाश्रम:** अनाथ बच्चों और बड़े विद्यार्थियों के आवासों को गुरू-गृह बास प्रणाली को प्रतिरूप प्रदान करने का प्रयास किया।
- **अंध लड़कों की अकादमी और दृष्टिहीन विकलांगता केन्द्र:** अन्धे और दृष्टिहीन दिव्यांग लड़कों को संगीत , कृषि और कई अन्य शिल्पों में प्रशिक्षण के साथ-साथ सामान्य शिक्षा प्रदान करना।
- **कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र:** स्कूल और कालेज के विद्यार्थियों को कम्प्यूटर शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना।
- **ग्रामीण विकास/सामाजिक श्रमिक प्रशिक्षण संस्थान:** ग्रामीण विकास के कार्यों के लिए शिक्षा प्रदान करना।
- **सामाजिक कल्याण और एकीकृत ग्रामीण विकास संस्थान:** प्रशिक्षण पाठ्यक्रम देने के अलावा अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन तथा एकीकृत ग्रामीण परियोजनाएँ आयोजित करना।
- **अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र:** साक्षरता और वयस्क शिक्षा प्रदान करना।
- **डीम्ड विश्वविद्यालय**

उपर्युक्त श्रेणियों से सम्बन्धित कुछ हजार संस्थानों के माध्यम से हर वर्ष कुछ लाख छात्रों (बच्चों, पुरुषों और महिलाओं) को लाभान्वित किया जा रहा है। उनमें से सभी के पीछे की मौलिक प्रेरणा स्वामी जी की मौलिक दृष्टि है। इस पेपर में हमारा लक्ष्य आँकड़े पेश करने का नहीं है , जो रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन की वार्षिक सामान्य रिपोर्ट में पाया जा सकता है। हम प्रदर्शित करने (दिखाने) की कोशिश करेंगे।

- इन संस्थानों के माध्यम से स्वामी जी के शैक्षणिक विचारों और आदर्शों को वास्तविकता प्रदान करने के कैसे प्रयास किये जा रहे हैं।
- उत्साह (जीवन्त) की भावना और इन परियोजनाओं के अग्रदूतों के संघर्ष (जिसमें स्वामी जी के शिष्य भाई , उनके शिष्य और अनुयायी शामिल हैं) इन संस्थानों के निर्माण में स्थायी बल प्रदान करते है।

रामकृष्ण मिशन संस्थानों की मौलिक विशेषताओं में एक शिक्षा प्रदान करना है जो वास्तव में इन संस्थानों का महत्त्वपूर्ण आधार बनाती है , यह मिशन के बड़ी संख्या भिक्षुओं (त्यागियों) की सक्रिय भागीदारी और समर्पित सेवा है। संन्यासियों और ब्रह्मचारियों का एक बड़ा दल सक्रिय रूप से अपरा-विधा , तथाकथित धर्मनिरपेक्ष शिक्षा और वास्तविक आध्यात्मिकता की शिक्षा प्रदान करने में सक्रिय रूप से संलग्न है। इसे केवल परा और अपरा-विधा के एकीकरण को उपर्युक्त चर्चा के सन्दर्भ में समझा जा सकता है और उसे महत्त्व दिया जा सकता है, जो शिक्षा के लिए एक अभिन्न दृष्टिकोण है और शिक्षा प्रदान करने में शिक्षक के व्यक्तिगत प्रभाव और ज्ञान प्रदान करने में त्यागियों की भूमिका के विस्तृत महत्त्व को महसूस करना।

5.4.1 रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ देवघर

स्वामी जी के अलावा , श्री रामकृष्ण के प्रत्यक्ष शिष्यों में पथ प्रदर्शक स्वामी रामकृष्णनन्द (मद्रास में छात्रों के घर के संस्थापक/मद्रास छात्रावास के संस्थापक) और स्वामी तुरियानंद (देवघर में विद्यापीठ-परियोजना के प्रेरक) थे। यह याद रखना चाहिए कि स्वामी तुरियानंद एक पारंपरिक वेदान्त संन्यासी थे जो द्वंद्व की दुनिया से दूर रहकर बिना द्वंद्व वाले आतंरिक आत्मा के क्षेत्र में जाने को उत्सुक थे। वह बाहरी कार्यों में आन्तरिक कीमती स्रोतों को नष्ट करने के बजाय चिन्तन में तल्लीन रहेंगे। जब स्वामी जी ने अपने प्रिय 'हरिभाई' (स्वामी तुरियानन्द) को कुछ सक्रिय मंत्रालयों में प्रवेश कराने का ईमानदारी से प्रयास किया , तो शुरूआत में उनको (तुरियानंद) कोई भी सफलता नहीं मिली। अन्त में , यह स्वामी जी के आंसू थे जो उनके तर्क या दर्शन के बजाय काम करते थे। इसलिए यह एक ठोस शैक्षणिक कार्यक्रम शुरू करने के इच्छुक एवं उत्सुक ज्ञान के वेदान्तिक बुद्धिमत्ता के शेर पर ध्यान देना बहुत रूचि एवं प्रेरणा का विषय है।

स्वामी गंभीरानंद ने अपने रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन के इतिहास का अभिलेख (हिसाब-किताब) रखते है कि उनके (स्वामी तुरियानंद) तीक्ष्ण शब्दों ने कई लोगों की कल्पना को पकड़ा और अधिकांशतः स्वामी सद्भावनन्द उस समय ब्रह्मचारी विद्या चैतन्य जिन्होंने अपने मित्र ज्ञानेश्वरनंद के साथ एक आवासीय विद्यालय शुरू करने की योजना बनाई। उनके पास पैसा नहीं था। उनका उत्साह स्वामी विवेकानन्द जी का सन्देश और राष्ट्रीयता में

विश्वास ही उनकी एकमात्र सम्पत्ति थी और उन्हें शैक्षणिक मामलों पर सलाह देने में मदद करने के लिए और आत्म त्याग करने वाले युवा पुरुषों के एक समूह के साथ कलकत्ता के रामकृष्ण मिशन में छात्रों के घर के संस्थापक सचिव स्वामी निर्वेदानन्द भी थे। इस प्रकार रामकृष्ण विद्यापीठ की शुरूआत करने के लिए एक का आदर्शवाद और दूसरे की संचालन योग्यता का मिश्रण हुआ। यह पहली बार मई सन् 1922 में मिहिजाम (अब चितरंजन) में शुरू था बाद में आगामी (अगली) जनवरी में प्रसिद्ध तीर्थ यात्रा शहर देवघर या वैद्यनाथ धाम में स्थानांतरित हो गया। यह संस्था 'जिस तरह से राष्ट्रीय उथल-पुथल से संस्थानों में अपने तरह की उत्तम संस्था बनकर उभरी। ' यह स्वामी जी की गुरू-गृहवास की अवधारणा को वास्तविकता प्रदान करने के लिए शुरूआत के संस्थानों में से एक है , जिसमें त्याग के साथ , चरित्र निर्माण और मानव निर्माण के लिए जीवन दायिनी शिक्षा प्रदान करना है।



रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ देवघर
चित्र सं.-5.4.1

5.4.2 रामकृष्ण मिशन स्टूडेन्ट्स होम मद्रास

इसी तरह का एक और संस्थान , जिसकी शुरूआत भी लगभग उसी समय हुयी थी , यह मद्रास में रामकृष्ण मिशन स्टूडेन्ट्स होम (छात्रावास) का आवासीय हाईस्कूल संभाग (वर्ग) था। यह आश्रम (आवास) , स्वामी जी के शिष्य भाइयों द्वारा किये गये शुरूआती प्रयासों का एक गौरवशाली उदाहरण है, जो गुरू-गृह-वास की उनकी योजना को वास्तविकता प्रदान करते है। मद्रास स्टूडेन्ट्स होम (छात्रावास) एक अनोखा संस्थान है , जो स्वामी जी की शैक्षणिक अवधारणाओं को बहुत बड़ी संख्या में महसूस करने का प्रयास करते है। चरित्र-निर्माण करने का प्रयास मुख्य बात है जिसके लिए व्यागियों द्वारा गुरू-गृह आश्रम का वातावरण बहुत अधिक मात्रा में संरक्षित किया जाता है , इसके लिए रूढ़िवादी दक्षिण भारतीय धन्यवाद के पात्र है। मिशन के भिक्षु और समर्पित भक्तों को मिलाकर ये त्यागी व्यक्ति

लगातार उनके साथ रहने वाले छात्रों (लड़कों) पर अपना विशेष असामान्य प्रभाव छोड़ते है। ज्ञान प्राप्त करने के कीमती (मूल्यवान) साधन के रूप में अंतेवासियों (आवासीय छात्रों) को मौन प्रार्थना के माध्यम से मन की एकाग्रता , चिन्तन और बैदिक तथा अन्य भजनों का जाप सिखाया जाता है। सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करने के अलावा , लड़कों को स्वयं के घर के लगभग सभी काम जैसे-स्वच्छता और परिसर की सफाई से लेकर पूजा करने तक के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अलावा आश्रम से जुड़े तकनीकी संस्थान डिप्लोमा स्तर पर इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी की विभिन्न शाखाओं में लड़कों को प्रशिक्षित करते है। उपनिषद, भगवतगीता और स्वामी जी के कार्यों को पढ़कर लड़कों में सच्चे धर्म या आध्यात्मिकता की भावना पैदा (उत्पन्न) की जाती है। उन्हें मिशन के परोपकारी कार्यों जैसे कि राहत कार्य और गरीब बच्चों को मुक्त शिक्षा के द्वारा यह विचार किया गया कि शिक्षा मानव मानव कल्याण के लिए उपयोग होनी चाहिए। यह सोच उनके युवा मस्तिष्क में प्रत्यारोपित (डाल दी) की जाती है।

आश्रम स्वामी रामकृष्णानन्द द्वारा शुरू किया गया था जिन्हें स्वामी जी उनके मठ से सम्बन्धित कार्यों के उनके प्रदर्शन के प्रमुख रूचि (आकर्षण) और रामकृष्णानन्द की पूजा और सेवा के लिए उनकी प्रशंसा में उन्हें ''मठ की माँ '' कहते थे। इस परियोजना में उनके प्रमुख अधिकारी सी 0 रामास्वामी अयंगर (जिनको वह प्रेम से रामू कहते) थे। रामू समर्पण और निःस्वार्थ के प्रतीक (मूर्ति) थे। छात्रावास परियोजना को मूर्त रूप प्रदान करने में उनके दूसरे अविस्मरणीय मित्र सी 0 रामानुजाचार्य (रामनुज) रामू के चचेर भाई थे। जब रामू का 1932 में स्वर्गवास हो गया तो रामानुज को इस परियोजना के सचिव बनना पड़ा। रामू-रामानुज दो जुडवाँ आत्माएँ थी जिन्हें उनके छात्रावास की समर्पित सेवा के लिए श्री स्वामी रामकृष्णानन्द के व्यक्तित्व का कायाकल्प कर देने वाला सौभाग्यशाली साथ मिला। शशि महराज (जैसा कि स्वामी रामकृष्णानन्द कहा करते थे) का आर्शीवाद रामू के हृदय को अद्भुत उत्साह और प्रेरणा शक्ति से भरने के लिए पर्याप्त था जैसा कि बाद में उन्होंने स्वयं लिखा था .... आश्रम सामान्यतया समर्पित शशि महराज से मिला जिसको कि सात गरीब अनाथ बच्चों को रहने के लिए दिया गया था। यद्यपि संस्थान अपने वर्तमान रूप में काफी समय बाद 1921 में अस्तित्व में आया। समर्पण समारोह और श्री गुरू महराज के चित्र की पूजा करने के

बाद शशि महराज निम्न स्मरणीय शब्द बोले जो कि स्वामी जी के संदेश हमारी संस्थाओं के लिए आदर्श बाते है :

अन्नदान को महादान कहा गया है और इसे हमारे देश में बहुत पवित्र समझा जाता है और विद्यादान अधिक महान कार्य है लेकिन सबसे महान है आध्यात्मिक ज्ञान (ज्ञानदान) प्रदान करना। तीनों का मेल हमारी संस्था का लक्ष्य होना चाहिए। श्री रामकृष्ण हमारे द्वारा शुरू किए गये कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होने का आर्शीवाद दे। रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन के प्रथम अध्यक्ष व श्री रामकृष्ण के आध्यात्मिक पुत्र ब्रह्मानंद ने स्वामी जी के पसंदीदा विचारों, प्राचीन सनातन धर्म के नैतिक और आध्यात्मिक विषयों के संयोजन को पश्चिमी शिक्षा द्वारा प्राप्त उन्नत बौद्धिक शक्ति और व्यावहारिक ज्ञान के साथ विशेष रूप से इसको विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से पूरा करने का प्रयास किया। इन्होंने विद्यार्थियों के आश्रम को आकार देने के लिए बेहतर (परिष्कृत) रूप प्रदान किया। शशि महराज कहा करते थे कि स्वामी ब्रह्मानन्द जिसे भी स्पर्श करते थे वह न केवल शुद्ध हो जाता था बल्कि शुद्ध शक्तिमय हो जाता था। उनके विशाल आध्यात्मिक व्यक्तित्व ने आश्रम में ताजगी (ताजा जीवन) और जोश का संचार कर दिया।

उन्होंने सन् 1918 में आश्रम की नई इमारत की नींव रखी , जहाँ अब यह स्थित है। इसके बाद उन्होंने सन् 1921 में अक्षय तृतीया के पवित्र दिन पर खुलने की घोषणा की। उन्होंने इस दिन को उद्घाटन के लिए चुना था क्योंकि अक्षय का अर्थ होता है 'अतुलनीय' और उस दिन कोई कार्य होगा तो अविश्वनीय संसाधनों और शक्ति के साथ आगे बढ़ेगा। मिशन और उसके संस्थानों के विकास में स्वामी ब्रह्मानन्द का मुख्य योगदान (और आश्रम में कोई अपवाद नहीं था) उनमें दुर्लभ और आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण था। इसने समर्पित श्रमिकों, मठवासियों को रखा और एक महान शक्ति के रूप में उनमें शुद्धता और निःस्वार्थ भाव का संचार किया। उद्घाटन समारोह के उस यादगार दिन पर प्रत्यक्षदर्शी रामास्वामी अयंगर कहते है कि स्वामी ब्रह्मानंद नई इमारत में प्रवेश करने से पहले श्री रामकृष्ण के आर्शीवाद का आवाहन करने के लिए कुछ देर तक ध्यान किया , उसके बाद जब उन पर और उनके चारों ओर फूलों की वर्षा हुई तो वह पहले अपने दाहिने पैर को देहली के उस पार करके आश्रम में प्रवेश किया। फिर उन्होंने अभिषेक (तिलक) किया और गुरू महराज

की पूजा शुरू की। इसके तुरन्त बाद वह समाधि में गये और काफी देर तक ईश्वरीय चेतना के उस महान मनोदशा में रहे। इसके माध्यम से उन्होंने इसे युगों तक बनाये रखने के लिए संस्थान में आध्यात्मिक प्रभाव व शक्ति का संचार किया। आने वाले वर्षो के लिए आवश्यक आध्यात्मिक शक्ति के साथ इसे शक्ति प्रदान करने के लिए वह एक महीने से अधिक समय तक आश्रम के नये परिसर में रहे। रामू लिखते है:- ''उन्होंने घर में प्यार , नम्रता, शान्ति और आध्यात्मिक उत्साह का माहौल बनाया , जिसे आज भी कोई भी व्यक्ति मजबूती के साथ महसूस करता है।''

हमें याद रखना चाहिए कि संस्थान सिर्फ ईंट , सीमेन्ट और रेत नहीं है , न ही वे केवल परिष्कृत बुनियादी ढाँचे-आधुनिक टेलीफोन , फैक्स मशीन, कम्प्यूटर, ईमेल और इण्टरनेट है। वे शुद्धता, निःस्वार्थता, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिकता शक्ति से युक्त है। वर्तमान समय में संस्थानों की संख्या में बेतहासा वृद्धि के बीच यह हमें मद्रास छात्रावास के उद्घाटन समारोह में समाधिस्त खड़े स्वामी ब्रह्मानंद के हंसमुख चेहरे और आत्मा में हलचल पैदा कर देने वाले शुद्ध और अनुभवी आध्यात्मिक वातावरण जिसका उन्होंने भावी पीढ़ी के हित में उत्पन्न किया था उसका श्रद्धापूर्वक ध्यान कराता है। यह हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम न केवल वहाँ से कुछ गृहण करे बल्कि शुद्धता और नैतिकता तथा आध्यात्मिक शक्ति के वातावरण को बनाये रखने में अपना कुछ न कुछ योगदान दें। इसके बिना मिशन के संसथान परिष्कृत, अति आधुनिक बुनियादी ढाँचे के अच्छी तरह से सुसज्जित और अच्छी प्रकार से बने स्टोर हाउस में गिरावट (गड़बड़ी) का बहुत बड़ा खतरा होगा। आइये स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा 1921 में मद्रास के आश्रम में उद्घाटन समारोह में सावधानी बरतने के उनके शब्दों पर ध्यान दे और सभी को इस खतरे से सावधान करें -

गुरू महराज की कृपा के माध्यम से गरीबों के लिए एक महल बनाया गया है और अब आपकी यह महान जिम्मेदारी तुम्हे हमेशा अपनी सुरक्षा का ध्यान देना चाहिए। दुर्लभ आनन्द, सरलता की भावना सबमें होनी चाहिए ऐसा न हो कि वे आदर्श धूमिल हो जिसके लिए आश्रम बना है।

मद्रास में आश्रम अपने आप में एक प्रभावशाली संस्थान होने के बाद और इसमें तकनीकी का अत्यधिक जुड़ाव होने के बाद विभिन्न श्रेणियों के 'डे' स्कूल शुरू करने के कार्य को पूरा किया। हालांकि काल क्रमानुसार इतिहास में लगभग 1932 में घटित होन वाला विकास बहुत बाद का विकास है, हम इसे इस समय इसकी चर्चा यह बताने के लिए कर रहे है कि कैसे स्वामी रामकृष्णनन्द द्वारा बोया गया एक छोटा सा बीज इस समय एक विशाल बरगद के पेड़ के रूप में विकसित हुआ , ठीक उसी प्रकार जैसे स्वामी रामकृष्ण चाहते थे कि स्वामी जी वैसे हों। यह भक्ति की महान शक्ति है , जिसके बारे में हमने रामायण में हनुमान जी के कारनामों के बारे में सुना है। उनके कुशल प्रबन्धन से स्कूलों के इस समूह ने धीरे- 2 यह प्रभाव प्राप्त किया उन्होंने इसे 1948 में एक अलग मिशन केन्द्र बनाया। वर्तमान में यह केन्द्र तीन उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों , तीन प्राथमिक विद्यालयों और एक अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय सहित रामकृष्ण मिशन संस्था कहलाता है।



रामकृष्ण मिशन स्टूडेन्ट्स होम मद्रास
चित्र सं.-5.4.2

5.4.3 बंगलौर और कलकत्ता में स्टूडेन्ट्स होम

स्वामी रामकृष्णनन्द की प्रेरणा का एक संस्थान बैंगलौर में है। अनिवार्य रूप से यह एक मठ केन्द्र है जो लोगों की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। हालांकि इसमें कालेज के विद्यार्थियों के लिए छात्रावास भी है और एक विवेकानन्द बालक संघ तथा युवक संघ है जो लड़कों और युवाओं को भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का व्यावहारिक और सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान कर रहे है।

मद्रास के छात्रावास की तरह ही एक संस्थान कोलकाता में शुरू किया गया था। विद्यार्थियों को कोचिंग प्रदान करने के लिए शुरूआत में एक किराये के घर में शुरू किया गया, यह धीरे-2 एक आश्रम के रूप में विकसित हुआ। बाद में यह रामकृष्ण के शिष्यों स्वामी

ब्रह्मानन्द, शिवानन्द, प्रेमानन्द, तुरियानन्द और शारदानन्द के आर्शीवाद से यह सन् 1919 में रामकृष्ण मिशन से संबद्ध हो गया। मद्रास के समकक्ष से भिन्न (अलग) करने के लिए इसे कलकत्ता स्टूडेन्ट्स होम (छात्रावास) के रूप में जाना जाता था। कलकत्ता छात्रावास के पीछे की मार्गदर्शक भावना एक योग्य विद्वान (पंडित) और शिक्षक और वास्तविक विचारधारा के शिक्षाविद् थे।

अब हम स्वामी जी के शिष्यों को उनकी योजना (दृष्टि) को वास्तविकता प्रदान करने के प्रति सक्रिय रूप से रूचि लेते और उत्साही होते देखते हैं। वे इस बात से अधिक से अधिक आश्वस्त हो रहे थे कि यह श्री रामकृष्ण के दैवीय आदेश को पूरा करना था जिसके लिए स्वामी जी ने पूरे जीवन भर संघर्ष किया। स्वामी ब्रह्मानन्द के अध्यक्ष के रूप में उनके मजबूत और विस्मयकारी आध्यात्मिक नेतृत्व के साथ साध्वी माँ श्री शारदा देवी मूक लेकिन महान (सशक्त) उपस्थिति और प्रेरणा से बार-बार नाम पर मिशन द्वारा प्रदान की गई पीड़ित मानवता की सेवा ही भगवान की सच्ची पूजा थी। स्वामी जी के प्रेम पूर्ण दृढ़संकल्प से तुरियानन्द के सक्रियता से कार्य को शुरू करने का पहले ही उल्लेख किया गया है। स्वामी जी के दूसरे शिष्य भाई, जो स्वामी जी की योजना को शुरूआती समय में तो महत्त्व नहीं दे सके लेकिन अन्त में , स्वामी जी की योजना को वास्तविकता प्रदान करने की कोशिश में मिशन के युवा भिक्षुओं को अपना जीवन मिशन के लिए समर्पित करने के लिए अनुप्राणित (प्रबल भावना जगाना) किया वे स्वामी प्रेमानन्द थे। उदाहरण के तौर पर हम सन् 1917 को स्वामी प्रेमानन्द द्वारा एक भक्त को लिखे गये पत्रों में से एक को नीचे उद्धत करते है।

स्कूलों की स्थापना, शिक्षा का प्रसार, विद्या और ज्ञान का दान करना स्वामी जी की हार्दिक इच्छा थी। जितना सम्भव हो सके इन कार्यों को पूरा करने का प्रयास करें। वे पवित्र आत्माएँ जो इस पवित्र कार्य में भाग लेते हैं हालांकि मानव शरीर में रहते हुए वे पृथ्वी पर देवता है। वे अकेले निःस्वार्थ कार्यकर्ता है। उनके जीवन अर्थपूर्ण जीवन हैं वे अकेले इस धरती पर भाग्यशाली है .... भगवान के आशीर्वादित नाम की शक्ति में विश्वास करते हुए प्रत्येक गाँव में, प्रत्येक शहर में स्कूलों और शैक्षणिक संस्थाओं को प्रत्येक इलाके में और पूरे देश में ले जाने के लिए स्थापित करते हैं। उनका काम स्वामी ब्रह्मानन्द और तुरियानन्द के साथ-2 श्रमिकों के चरित्र का निर्माण करना उनके मस्तिष्क को शुद्धता , समर्पण, निःस्वार्थता

और भक्ति के उच्च स्तर के अनुकूल बनाना था। जब यह हुआ तो यह सुनिश्चित किया गया कि यह कार्य स्वतः रूप से तार्किक परिणाम और गणितीय परिशुद्धता के रूप में होगा।

5.4.4 रामकृष्ण मिशन आश्रम, सरगाछी

स्वामी जी के दूसरे शिष्य भाई स्वामी अखण्डानन्द थे। वह स्वामी जी के ऐसे वफादार सहायक थे कि इस दिशा में उनके द्वारा किये गये अग्रणी प्रयासों पर शायद ही आश्चर्य की जरूरत है। स्वामी जी के जीवित रहते हुए ही उनका काम शुरू हो गया था। उन्होंने पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के दूरवर्ती सारगाछी गाँव में एक अनाथालय शुरू करने के लिए प्रबल प्रेरणा महशूस की। यह काम उसी जिले के महुला गाँव में अकाल राहत कार्य की एक शाखा थी। उन्होंने इसे सन् 1897 में स्वामी जी आशीर्वाद के साथ शुरू किया। यह एक शानदार उदाहरण साबित हुआ कि कैसे भगवान के प्रेम को दोनों उच्च और निम्न , ज्ञानी और अज्ञानी, अमीर और गरीब मनुष्यों के लिए प्रेम में परिवर्तित किया जा सकता है। स्वामी अखण्डानन्द का मस्तिष्क उस समय ऐसे उच्च स्तर पर (स्थित) था कि वे जब भी किसी बेसहारा, अनाथ बच्चे को सड़क पर असहाय पीड़ित देखते थे तो वह उसे शुरू में बने गये अनाथाश्रम में ले जाते थे। बच्चे को गर्म पानी व साबुन से स्नान कराते समय वह वेदों के प्रसिद्ध पुरुष-सूक्त मन्त्रों का जाप किया करते जो आमतौर पर नारायण शिला के रूप में देवता को स्नान कराते समय बोला जाता है। ऐसा करने के दौरान वह दिव्य स्थिति में तल्लीन रहते जो ईश्वर की प्रेममय चिन्तन और भगवान की पूजा के फलस्वरूप होता है। यहाँ उनके लिए जीवित भगवान, माँस और खून में मनुष्य रूप में जीवित देवता। उनकी पूजा को कृपापूर्वक स्वीकार कर रहे थे। जनवरी 1899 में उन्होंने आम जनता के लिए एक स्वतंत्र विद्यालय के रूप में साक्षरता और अनौपचारिक शिक्षा के लिए शैक्षणिक गतिविधियाँ शुरू की , जिनमें स्वामी जी चाहते थे कि बुनाई और कढ़ाई गिरि में लड़कों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण शामिल हो ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। स्वामी अखण्डानन्द ग्रामीणों को उनके स्वयं के कपड़ों के सम्बन्ध में आत्म निर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए स्वयं बुनाई में भाग लेते थे।

5.4.5 सिस्टर निवेदिता गर्ल्स स्कूल, कोलकाता

एक और अन्वेषी (अग्रणी) कार्य इस बार महिलाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में, जिसके बारे में स्वामी जी ने बहुत ज्यादा बोला और लिखा। वह सिस्टर निवेदिता के द्वारा किया गया था। निवेदिता के पास साध्वी माँ शारदा देवी और मास्टर के लगभग सभी प्रत्यक्ष (विद्यमान) शिष्यों का आशीर्वाद प्राप्त करने का अनूठा विशेषाधिकार था। इसके अलावा , स्वामी जी ने स्वयं उनको विशेष रूप से भारतीय महिलाओं के कल्याण के लिए कार्यों को करने के लिए बहुत सावधानी और सख्ती के साथ प्रशिक्षित किया। प्रेम पूर्ण निर्दयता जिसके माध्यम से स्वामी जी ने उनको शिक्षित और प्रशिक्षित किया वह आध्यात्मिकता और सेवा के क्षेत्र में अनूठी कहानी है। रक्त , आंसू और पसीने के माध्यम से उन्होंने उसे अद्वितीय कार्य के लिये दण्डित किया , आकार दिया और तैयार किया जिसे वह अकेले कर सकीं। इस कठिन प्रशिक्षण के अन्त में स्वामी जी ने उनको ईश्वर और भारत माता की सेवा के लिए समर्पित किया। इस प्रकार उन्होंने अपने मार्गोट (ध्येय) को 'रामकृष्ण विवेकानन्द की निवेदिता ' में बदल दिया, जैसा वह स्वयं को खुशी से कहती थीं।

साध्वी माँ ने काली पूजा अर्थात् 12 नवम्बर 1898 की पूर्व संध्या पर बेलूर मठ और निवेदिता की गर्ल्स स्कूल दोनों को पवित्र किया। स्वामी विवेकानन्द , स्वामी ब्रह्मानन्द और स्वामी शारदानन्द भी उस दिन के स्कूल के उद्घाटन के सम्बन्ध में बाग-बाजार में आयोजित सार्वजनिक बैठक में उपस्थित थे। मास्टर की पूजा के अन्त में जि से साध्वी माँ ने स्वयं सम्पन्न किया, उन्होंने प्रार्थना की कि ब्रह्माण्ड की महादेवी (शक्ति) का आशीर्वाद विद्यालय पर रहेगा (होगा) और वहाँ प्रशिक्षित लड़कियाँ आदर्श लड़कियाँ होंगी और इस आशीर्वाद से , जिसे बहन निवेदिता ने बाद में लिखा: 'मैं उनके आशीर्वाद से अच्छी शुभ घड़ी की कल्पना नहीं कर सकती, जो उन्होंने भावी शिक्षित नारीत्व पर बोलते हुए दिया। ' इसने भारतीय महिलाओं की शिक्षा के लिए बहन निवेदिता के कार्य को दर्शाया। स्वामी जी अपने एक समर्पित शिष्य को कुछ शैक्षणिक खोज करने के लिए लगातार प्रेरणा दे रहे थे जो भारतीय महिलाओं की आधुनिक शिक्षा के कार्य के लिए गुणात्मक रूप से सत्य और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य हो। उन्होंने उसे (बहन निवेदिता को) आशीर्वाद दिया कि उन्हें न केवल विश्वास बल्कि तीव्र

(प्रबल) उत्साह से जिसकी उसे आवश्यकता है , से परिपूर्ण होना चाहिए। स्वामी जी चाहते थे कि वह इस कार्य में ऊर्जा (शक्ति) से ओत-प्रोत हों।

कम (छोटी) संख्या में लड़कियों के साथ प्रयोगात्मक आधार पर संस्थान में काम करने के बाद, बहन निवेदिता इस बात से आश्वस्त थी कि इस कार्य (उद्यम) को एक बड़ी और अधिक स्थायी योजना में विस्तारित किया जाना चाहिए। इसके विस्तार के लिए आवश्यक धन को इकट्ठा करने के लिए उन्होंने स्वामी जी के साथ पश्चिमी देशों की यात्रा की। सन् 1902 की शुरूआत में लौटने के बाद , उन्होंने बोस पारा लेन , बाग बाजार, कलकत्ता में नये उत्साह व स्फूर्ति के साथ अपने काम को फिर से शुरू किया। स्वामी जी के सबसे प्यारे और समर्पित शिष्यों में से एक सिस्टर क्रिस्टीन ने निवेदिता के साथ हाँथ मिलाया। पहले वर्ष 50 लड़कियों के साथ चिल्ड्रेन स्कूल (बच्चों के स्कूल) के रूप में शुरू होने के बाद इसे जल्द ही एक संयुक्त स्कूल में परिवर्तित कर दिया गया जिसमें स्थानीय वयस्क महिलाएँ भी पढ़ना , लिखना और सिलाई के काम सीखने के लिए प्रवेश लेती थीं। रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन के इतिहास का विवरण -

स्कूल में शिक्षा और आध्यात्मिकता दोनों में उच्च आदर्शवाद था। इसका सामाजिक महत्त्व था क्योंकि इसका उद्देश्य भारतीय महिलाओं को अपनी स्वयं की शिक्षा के लिए प्रशिक्षण देना था। इस प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर कार्य और विकास की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करना था।

सिस्टर निवेदिता और सिस्टर क्रिस्टीन के बाद स्कूल का कार्यभार स्वामी प्रज्ञानन्द की बहन सुधीर बोस ने संभाला। उन्होंने स्कूल के समर्पित महिला श्रमिकों के लिए बोडिंग स्कूल (आवासीय विद्यालय) मातृ मन्दिर नाम का एक आश्रम प्रभाग (संवर्ग) खोला। यह साध्वी माँ के भ्रमण और रहने तथा स्वामी सारदानन्द की शुभकामनाओं से आर्शीवादित (सौभाग्यशाली) था। संस्था औपचारिक रूप से 1918 में मिशन से संबद्ध थी। यह पहली संस्था थी जो पूरी तरह से महिलाओं द्वारा इसके शुरूआत से सिस्टर निवेदिता की मृत्यु तक शुरू किया गया और संचालित किया गया। परम्परा और रूढ़िवाद के उन दिनों में यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। स्वामी जी का निर्देश था कि महिलाओं की समस्याओं को उचित

शिक्षा और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करके महिलाओं द्वारा हल किया जाना चाहिए। इस संस्थान से यह ठोस अभिव्यक्ति मिली। स्वामी जी महिलाओं की समस्याओं को दूर करने के सम्बन्ध में स्वयं नियुक्त समस्या निवारकों के लिए जो उत्सुक थे उनके लिए स्वामी जी के सावधानी भरे 'हाँथों से दूर' शब्द थे। सिस्टर निवेदिता गर्ल्स स्कूल को सन् 1963 में रामकृष्ण सारदा मिशन को सौंप दिया गया।



सिस्टर निवेदिता गर्ल्स स्कूल, कोलकाता
चित्र सं.-5.4.5

5.4.6 रामकृष्ण मिशन शारदा विद्यालय मद्रास

महिलाओं के लिए एक और संस्थान जिसका सिस्टर निवेदिता गर्ल्स स्कूल कोलकाता के समान ही इतिहास है वह मद्रास का शारदा विद्यालय है। दोनों बाल विधवाओं सिस्टर सुब्बा लक्ष्मी और उसकी चाची वालंबल अंबल की देखभाल में केवल चार कैदियों के लिए 1912 में एग्मोर मद्रास प्रदेश में बाल-विधवाओं के लिए छोटे से आश्रम में शुरूआत हुई थी। उसी वर्ष सिस्टर द्वारा शुरू किया गया। शारदा महिला संघ ने सन् 1927 में त्रिप्लिकाने में एक किराये के घर में बारह महिला विधवाओं के साथ विद्यालय का उद्घाटन किया। इन लड़कियों को प्राथमिक स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण मिला और वे आत्मनिर्भर होने में समर्थ हुयी थी। स्कूल तेजी से बढ़ता गया और 1938 में मिशन ने सिस्टर सुब्बालक्ष्मी के अनुरोध पर विद्यालय का प्रभार संभाला और मद्रास शहर के विभिन्न हिस्सों में मौजूद स्कूलों का एकीकरण किया। इस समय शारदा विद्यालय लड़कियों के लिये शिक्षा के क्षेत्र में मद्रास का गौरव है। इसमें दो उच्च माध्यमिक स्कूल है जिनमें 5000 से अधिक छात्र है, एक माध्यमिक विद्यालय, एक प्राथमिक विद्यालय, एक पूर्व बेसिक स्कूल, दो छात्रावास और दो पुस्तकालय हैं। जैसा स्वामी जी का विचार था यह नैतिक और धार्मिक शिक्षा के साथ- 2 आधुनिक विषयों में उच्च स्तर की शिक्षा प्रदान करता है।



रामकृष्ण मिशन शारदा विद्यालय मद्रास
चित्र सं.-5.4.6

5.4.7 रामकृष्ण मिशन विद्यालय कोयंबटूर

राष्ट्रीय उथल-पुथल के समय महात्मा गाँधी द्वारा क्रमबद्ध अस्तित्व में आने वाला एक और शैक्षिक परिसर पेरियानाइकेनपालयम कोयंबटूर था। इस परिसर के निर्माण के पीछे महापुरुष महाराज (स्वामी शिवानन्द) के समर्पित शिष्य टी0एस0 अविनाशलिंगम् की उमड़ती (जोशीली) भावना थी। वह महात्मा गाँधी के राष्ट्रवादी विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे , उनका मानना था कि वह (महात्मा गाँधी) स्वामी जी की शक्ति के एक माध्यम (मार्ग) थे। उन्होंने 1930 में कोयंबटूर में एक विद्यालय फिर केवल तीन लड़कों के लिए एक आवासीय विद्यालय शुरू किया। अत्यधिक वृद्धि और गति के साथ यह एक पूर्ण आवासीय विद्यालय के रूप में परिवर्तित हुआ जो 1934 में मिशन से संबद्ध हुआ। वर्तमान में यह संस्थान एक विशाल परिसर है जिसमें एक आवासीय हाईस्कूल शामिल है (जिसमें अन्य लड़कों के साथ कुछ अन्धे लड़कों को भी एकीकृत शिक्षा प्रदान की जाती है) , एक माध्यमिक ग्रेड शिक्षकों का प्रशिक्षण संस्थान, एक उच्च माध्यमिक विद्यालय, एक प्राचीन परिषदीय विद्यालय, एक स्वायत्त शिक्षकों का प्रशिक्षण संस्थान जो शिक्षा (एजुकेशन) में बी 0एड0, एम0एड0, एम0फिल0 और पी-एच0डी0 के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, और दृष्टिहीन विकलांगों के लिए एक संसाधन और विकास केन्द्र , एक स्वायत्त कला और साइंस डिग्री कालेज , शारीरिक शिक्षा का एक कालेज, एक स्वायत्त पालिटेक्निक, कृषि स्कूल, एक औद्योगिक संस्थान जो डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदान करता है , एक औद्योगिक वर्ग (खण्ड) इंजीनियरिंग छात्रों को व्यावहारिक (प्रयोगात्मक) प्रशिक्षण प्रदान करता है, और एक पुस्तकालय जिसमें एक लाख से अधिक पुस्तकें और लगभग 500 पत्रिकाओं वाली एक खुले मार्ग वाली प्रणाली है। इस परिसर में विभिन्न पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने वाले लड़कों की संख्या 4000 से अधिक है।

सन् 2005 में इसने अपनी प्लैटिनम जयंती मनाई। मिशन के नये डीम्ड यूनिवर्सिटी ने इसे अपने विशेष संकाय केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए भी चुना है। यह विश्वविद्यालय के विकलांगता प्रबन्धन और विकलांगों की शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करेगा। यह केवल एक विचार देने के लिए है कि कैसे ईमानदारी और समर्पण किसी भी प्रयास को चाहे वह छोटा ही क्यों न हो, को एक विशाल परिणाम में बदल सकता है।

चालीस के दशक के शुरूआत में , पश्चिम बंगाल में तीन अन्य एक समान संस्थान बेलूर में शारदा पीठ , रहरा में लड़कों का आश्रम (घर) और नरेन्द्रपुर में आश्रम शुरू हुए थे। उनमें से प्रत्येक अब एक विशाल शैक्षिक परिसर है जिसमें संस्थानों की एक श्रंखला शामिल है। लेकिन बाद में इसका और अधिक विस्तार हुआ।



रामकृष्ण मिशन विद्यालय कोयंबटूर
चित्र सं.-5.4.7

5.4.8 रामकृष्ण मिशन आश्रम सरिशा, पश्चिम बंगाल

हमने उल्लेख किया है कि बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के राष्ट्रीय उथल-पुथल के चलते शैक्षणिक संस्थान कैसे उभरे। रामकृष्ण मिशन के अध्यक्ष के रूप में स्वामी ब्रह्मानन्द के कार्यकाल के दूसरे भाग में, शैक्षिक संस्थानों पर जोर दिया गया था। उनमें से कुछ संस्थानों का उल्लेख किया जा सकता है। उनमें से एक पश्चिम बंगाल के सरिशा में रामकृष्ण मिशन आश्रम है। सन् 1917 में धार्मिक विचार धारा वाले लोगों के लिए एक बैठक स्थान व जरूरत मन्दों को सेवा प्रदान करने के लिए एक केन्द्र के रूप में शुरू किया गया था। यह सन् 1920 में अपने मुख्य आयोजक की मृत्यु के बाद लगभग निष्क्रिय हो गया था। इसे सन् 1921 में स्वामी गणेशानन्द द्वारा चिकित्सा सेवा और प्राथमिक शिक्षा के लिए एक छोटे से केन्द्र के रूप में पुर्नजीवित किया गया था। तब से यह मान्यता प्राप्त संस्थान से भी अधिक विकसित हुआ। यह उत्साही और ऊर्जावान साधु , साहसी और स्नेहपूर्ण हृदय वाले , अदम्य (निडर) इच्छा से उस

समय उपलब्ध सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त लड़कियों के लिए स्कूल शुरू करने के लिए सभी ग्रामीण पूर्वाग्रहों के खिलाफ खड़ा था। इसमें शारीरिक व्यायाम और प्रशिक्षण , खुली हवा की गतिविधियाँ खासकर मुख्य रूप से ग्रामीण इलाके में जो उस समय कल्पना से परे थी, शामिल थी। यद्यपि स्वामी जी की सन् 1941 के मध्य में समय पूर्व (असमय) मृत्यु हो गयी थी लेकिन स्कूल मजबूती के साथ बढ़ता गया और लड़कों तथा लड़कियों दोनों के लिये माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में इसका योगदान बहुत अधिक रहा है।

5.4.9 रामकृष्ण मठ त्रिशूर, केरल

बीसवीं सदी के दौरान आने वाले दो और बड़े शैक्षणिक केन्द्र सिलोन (श्रीलंका) और जमशेदपुर (टाटानगर) में थे। रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन का इतिहास कहता है:

सिलोन केन्द्र विभिन्न हिस्सों में किये गये विभिन्न प्रयासों की समन्वय प्रक्रिया द्वारा सन् 1924 में मिशन के अन्तर्गत द्वीप के विभिन्न हिस्सों में उसी श्रंखला में संचालित था। इस प्रकार कोलम्बो मुख्यालय के रूप में, जहाँ आध्यात्मिक कार्य भी हो रहा था, वहाँ 1927 तक सभी पाँच संस्थानों की नामावली के आधार पर 1358 छात्रों की कुल संख्या के साथ त्रिनकोली में दो स्कूल, जाफना में दो स्कूल और बट्टीकलोआ में पाँच स्कूल मौजूद थे।

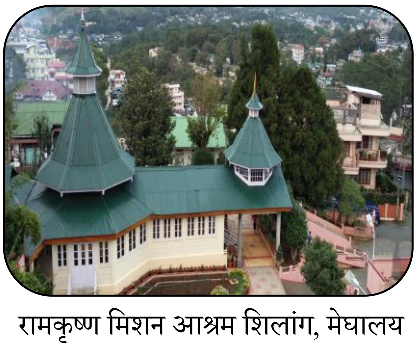
जमशेदपुर की विवेकानन्द सोसायटी मूल रूप से टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी के कुछ कर्मचारियों द्वारा एक धार्मिक और परोपकारी संस्था के रूप में शुरू की गयी थी। इसे सन् 1927 में मिशन द्वारा आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त थी , और अब यह पूरे शहर में फैले कई शाखा स्कूलों के साथ एक विशाल शैक्षिक केन्द्र है।



रामकृष्ण मठ त्रिशूर, केरल
चित्र सं.-5.4.9

5.4.10 रामकृष्ण मिशन आश्रम शिलांग, मेघालय

इस अवधि के दौरान स्वामी प्रभानन्द (केतकी महराज) द्वारा असम के दूरवर्ती खासी और जयन्ती हिल्स (पहाड़ियों) में अलग तरह का व्यवस्थित शान्त और सूनसान क्षेत्र में एक उल्लेखनीय शैक्षिक प्रयास शुरू किया गया था। ब्रिटिश शासन के उन दिनों में , असम के अधिकांश पहाड़ी इलाकों को मैदानी इलाकों से बन्द कर दिया गया था। ब्रिटिश सरकार के संरक्षण के तहत बड़े पैमाने पर पहाड़ी इलाकों में गरीब और अशिक्षित जन-जातीय लोगों का विराष्ट्रीयकरण चल रहा था जिसे हर कोई असहाय रूप से देख रहा था। इस महत्त्वपूर्ण परिस्थिति में इन आदिवासी लोगों के बीच साक्षरता फैलाने और राष्ट्रीय तरीकों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा प्रदान करने के लिए केतकी महराज की साहसिक पहल काम आई। शिलांग के पास शेला में एक प्राथमिक विद्यालय के साथ एक छोटी शुरूआत की गई थी। इसे जल्द ही एक अंग्रेजी मिडिल स्कूल में अपग्रेड कर दिया गया था। इसकी वजह से इसके अलावा अन्य स्कूल भी अन्यत्र (कहीं और) खुले। इन सभी संस्थानों के लिए शिलांग में एक मुख्यालय स्थपित किया गया था। जहाँ खासी क्षेत्र के लड़कों को उच्च शिक्षा के लिए समायोजित किया जा सकता था। यद्यपि ये मिशन विदेशी मिशनरियों के विशाल संगठित बल की तुलना में महासागर में एक बूंद की तरह थे, फिर भी इसने खासी क्षेत्र में लोगों को विश्वास में लिया और उनको अपने देश की अद्भुत संस्कृति और आध्यात्मिक धरोहर के सम्पर्क में लाया गया जैसा कि स्वामी जी ने कल्पना की थी। फरवरी 2000 में शेला जो अब चेरापूँजी आश्रम का उप-केन्द्र है, ने अपनी प्लैटिनम जयन्ती मनाई।



रामकृष्ण मिशन आश्रम शिलांग, मेघालय
चित्र सं.-5.4.10

5.4.11 रामकृष्ण मिशन का केरला के हरिजनों के बीच कार्य करना

स्वामी जी ने देखा था कि कैसे ऊँची जातियों , विशेष रूप से ब्राह्मणों ने ज्ञान पर निचली जातियों को इससे बंचित कर एकाधिकार किया था , जिन्हें उन्होंने शुद्र और चण्डाल कहा था। अहंकारी ब्राह्मण विद्वानों द्वारा निचली जातियों के इस उत्पीड़न को दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में इसके सबसे बदसूरत रूप में प्रचलित किया गया था। निम्न जातियों को सदियों के उत्पीड़न, उपेक्षा और नफरत के माध्यम से उनको बुरी तरह से यह विश्वास दिलाया गया कि वे केवल निकट पशुत्व की स्थिति में रहने के लिए पैदा हुए और वैदिक , उपनिषद की संस्कृति एवं संस्कृत शिक्षा उनके लिए नहीं थी। संगठित पुजारी शिल्प (ताने-बाने) की क्रूर-अमानवीयता इस हद तक चली गयी थी कि निचली जाति के लोग यह महसूस करने लगे थे कि उनकी छाया मात्र उच्च जाति के ब्राह्मणों को प्रदूषित करेगी , जिसके लिए वे सड़कों में घूमते समय अपने दृष्टिकोण की घोषणा करने के लिए अपने कानों में घंटी बाँधकर अच्छा कार्य करेगें ताकि आगे कोई बिडम्बना न हो। ऐसी पृष्ठभूमि में केरल में स्वामी त्यागिसानन्द और स्वामी नरसिम्हानन्द के द्वारा इन दुर्भाग्य पूर्ण लोगों के सर्वांगीण उत्थान के लिए अनुकरणीय प्रयास किये गये।

स्वामी त्यागिसनन्द ने रामकृष्ण संस्था में शामिल होने से पहले सन् 1915 में त्रिशूर शहर में ''विवेकोदयम स्कूल'' नामक एक स्कूल शुरू करके अपनी शैक्षणिक सेवा शुरू की। सन् 1927 में स्कूल को त्रिशूर से करीब सात किलोमीटर दूर पुरानालुकारा नाम के ग्रामीण इलाके में मुख्य रूप से इस जगह के हरिजन बच्चों की सेवा करने के विचार के साथ स्थानान्तरित कर दिया था। यह सन् 1929 में बेलूर मठ से संबद्ध था। दो अलग- 2 छात्रावास भी एक लड़कों के लिए और एक लड़कियों के लिए शुरू किये गये थे। हॉस्टल के अधिकांश छात्रों (निवासियों) में हरिजन बच्चे थे। त्यागिशनन्द एक महान विद्वान थे लेकिन उन्होंने अपना एक बहुत ही सरल और दृढ़ जीवन बिताया। सन् 1934 में महात्मा गाँधी ने उस स्थान का भ्रमण किया और छात्रावास तथा मन्दिर के लिए नींव रखी। त्यागिशनन्द ने सन् 1935 में बंगलौर आश्रम का कार्यभार ग्रहण करने के लिए त्रिशूर छोड़ दिया था। उनके द्वारा शुरू किये गये हरिजनों के लिए काम अभी भी रामकृष्ण मठ , त्रिशूर द्वारा जारी रखा जा रहा है , जिसका कि बाद के वर्षों में इसका काफी विस्तार हुआ है। यहाँ यह भी उल्लेख किया जा सकता है

कि सन् 1948 ई0 में पास के परिसर में लड़कियों के लिए एक नया हॉस्टल और स्कूल शुरू किया गया था जिसे बाद में शारदा मठ दक्षिणेश्वर से संबद्ध किया गया था।

स्वामी नृसिम्हानन्द का काम गरीबी में रहने वाले हरिजन परिवार के सिर्फ चार लड़कों के समूह के साथ शुरू हुआ , उन्होंने उनको साक्षरता के साथ 'व्यावसायिक प्रशिक्षण' दिया ताकि वे अपनी आजीविका कमा सके और अपने पैरों पर खड़े हो सके। उन्होंने दो गाँवों- नूरनाद और अदूर में हरिजनों के मध्य लगभग 45 वर्षों तक कार्य किया। कुष्ठ रोगी जिनकी उन्होंने दिल से सेवा की थी , उनके लिए उन्होंने मिशन के लोगों से ईमानदारी से अपील की थी कि उनका स्वर्गवास (गुजरने) हो जाने पर उनकी राख का एक छोटा (थोड़ा) सा हिस्सा पवित्र अवशेष के रूप में संरक्षित कर पूजा करने के लिए भेजा जाना चाहिए। यह ऐसी कृतज्ञता और आदर ही था कि कुष्ठ रोगी हरिजनों का इस भिक्षु से लगाव था जो उनका निकटतम मित्र था जिनका समाज ने अभागे अस्पृश्य के रूप में निन्दा की थी।

5.4.12 रामकृष्ण मिशन आश्रम, नरेन्द्रपुर

उत्तर कोलकाता में रामबागान की झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले हरिजनों के बीच मिशन का कार्य एकीकृत झोपड़पट्टी के विकास की अवधारणा में एक क्रान्ति है और ऐसी परियोजनाओं के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मॉडल है। यह काम अब विवेकानन्द सोशल कल्याण केन्द्र के बैनर के तहत किया जा रहा है , जो रामकृष्ण मिशन आश्रम, नरेन्द्रपुर पश्चिम बंगाल का हिस्सा है। यह आश्रम स्वामी लोकेश्वरनन्द के अग्रणी कार्य और उच्च दूरदर्शिता का उत्पाद है जो मिशन के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों में से एक थे। उनके कई भाई भिक्षुओं द्वारा उनकी बहुत मदद की गई थी और वे उनके भक्त भी थे , जिनमें से श्री शिवशंकर चक्रवर्ती विशेष उल्लेख के पात्र थे। सन् 1943 में यह मिशन कोलकाता में शुरू हुआ और बाद में नरेन्द्रपुर में स्थानांतरित हो गया , यह विशाल शैक्षणिक परिसर कोयम्बटूर के जैसे ही है, जिसका हमने पहले ही उल्लेख किया है और स्वतंत्र भारत का गौरव है। इस परिसर में अब एक आवासीय डिग्री कालेज , एक आवासीय माध्यमिक विद्यालय (भारत सरकार द्वारा एक मॉडल स्कूल के रूप में माना जाता है) , एक प्राथमिक विद्यालय, सामाजिक कल्याण संस्थान और एकीकृत ग्रामीण विकास , लोकसभा परिषद , विवेकानन्द सोशल कल्याण केन्द्र ,

आवासीय अन्धे लड़कों की अकादमी और निम्नलिखित ईकाईयों के साथ तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा विभाग: एक जूनियर तकनीकी स्कूल , ऑटोमोबाइल तकनीकी स्कूल , ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग स्कूल , एक वाणिज्यिक संस्थान और एक मोटर मैकेनिक प्रशिक्षण संस्थान शामिल है। सबसे आगे (ऊपर) लोक सभा परिषद आज मिशन के प्रारम्भिक समख्यात विश्वविद्यालय के विशिष्ट संकाय केन्द्रों में से एक के रूप में कार्य कर रही है। यह आदिवासी विकास सहित एकीकृत ग्रामीण विकास के प्रमुख क्षेत्रों में से एक पर ध्यान केन्द्रित करेगा।

चूंकि हम मिशन द्वारा चलाये जा रहे शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में चर्चा कर रहे है , पश्चिम बंगाल में ऐसे दो संस्थानों का उल्लेख करना उचित है - बेलूर में रामकृष्ण मिशन शारदा पीठ और रहरा में रामकृष्ण मिशन छात्रावास।



रामकृष्ण मिशन आश्रम, नरेन्द्रपुर
चित्र सं.-5.4.12

5.4.13 रामकृष्ण मिशन सारदापीठ बेलूर

सारदपीठ विद्या मन्दिर डिग्री कॉलेज के साथ सन् 1941 में इसके महत्त्वपूर्ण अंश (हिस्से) के रूप में शुरू हुआ था। विद्या मन्दिर नाम स्वामी विवेकानन्द जी के उच्चारण की देन है। सन् 1898 में उनकी पश्चिम देशों से वापसी के तुरन्त बाद , स्वामी जी ने एक प्रेरणाप्रद बातचीत के दौरान अपने शिष्यों में से एक को बताया-

बेलूर मठ के दक्षिण की ओर की भूमि का सुदूर स्थान शिक्षा का केन्द्र होगा , जहाँ व्याकरण, दर्शन, विज्ञान, साहित्य और अंग्रेजी भी पढ़ाई जायेगी। शिक्षा का यह मन्दिर (विद्या मन्दिर) प्राचीन काल के टोल पद्धति के आधार पर तैयार होगा। लेकिन (उन्होंने कहा) अब

हमें इसकी नींव को व्यापक आधार पर रखना होगा , कहना यह है कि हमें समय की आवश्यकताओं के अनुरूप इसमें एक अच्छा बदलाव करना होगा।

स्वामी जी ने यह भी भविष्यवाणी की कि बेलूर मठ अन्ततः एक पूर्ण विश्वविद्यालय में विकसित होगा। शायद उनके दिमाग में नालंदा और तक्ष शिला जैसे विश्वविद्यालय थे। इसलिए विद्या मन्दिर को इसके संस्थापक सचिव स्वामी विमुक्तानन्द ने भविष्य में विवेकानन्द विश्वविद्यालय के केन्द्र के रूप में माना था। हम कुछ देर बाद नये स्थापित विश्वविद्यालय पर चर्चा करेगें। वर्णन जारी रखने के लिए स्वामी विमुक्तानन्द के अथक प्रयासों ने जो कि शारदापीठ के सचिव के रूप में शारदापीठ को सन् 1941 में इसकी स्थापना से सन् 1966 में उनकी असमय मृत्यु तक आगे बढ़ाया। उन्हें विशेष रूप से रामकृष्ण मिशन के उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी प्रयास के रूप में याद किया जायेगा। स्वामी तेजसनन्द को विद्या मन्दिर का पहला प्रधानाचार्य बनाया गया। उस समय उनकी जिज्ञासा और गतिशीलता जब इन गुणों की अत्यधिक मात्रा की शायद ही आशा की जा सकती थी , उन शिक्षकों और छात्रों के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत था , जो उनके सम्पर्क में आये थे। शारदा पीठ परिसर में इस समय निम्नलिखित ईकाइयाँ - विद्या मन्दिर , एक उच्च माध्यमिक अनुभाग वाला त्रिवर्षीय उपाधि का आवासीय कालेज , शिक्षा मन्दिर , एक आवासीय शिक्षक-प्रशिक्षण कालेज , शिल्प मन्दिर, एक पालिटेक्निक कॉलेज जो सिविल, इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल इंजीनियरिंग में तीन साल के डिप्लोमा पाठ्यक्रम चला रहा है , सामुदायिक पालिटेक्निक कालेज , विभिन्न व्यापारों में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करता है , जिसमें कम्प्यूटर केन्द्र संलग्न है , शिल्पयातन जिसमें एक जूनियर टेक्निकल स्कूल (आई 0टी0आई0) और उच्च माध्यमिक व्यावसायिक अनुभाग नाम की दो उप ईकाइयाँ है ; शिल्प विद्यालय, एक तकनीकी संस्थान जो विभिन्न व्यापारों में व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान करता है ; जन-शिक्षा मन्दिर, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र , एक निःशुल्क पुस्तकालय , एक मोबाइल पुस्तकालय और एक व्यावसायिक प्रशिक्षण ईकाई ; और समाजसेवा शिक्षा मन्दिर , ग्रामीण विकास कार्यों में युवाओं को प्रशिक्षण देने के लिए एक निःशुल्क आवासीय संस्थान शामिल है। नरेन्द्रपुर केन्द्र के लोक शिखा परिषद की तरह ही समाज सेवक शिक्षा मन्दिर मिशन के नये स्थापित

विश्वविद्यालय के तहत विशेष संकाय केन्द्रों में से एक होगें। यह विश्वविद्यालय के प्रमुख अग्रणी क्षेत्रों में से एक जनजातीय विकास सहित एकीकृत ग्रामीण विकास पर केन्द्रित होगा।



रामकृष्ण मिशन सारदापीठ बेलूर
चित्र सं.-5.4.13

5.4.14 रामकृष्ण मिशन बॉयज होम, रहरा कलकत्ता

मिशन का यह छात्रावास कोयम्बटूर , नरेन्द्रपुर और बेलूर के जैसा ही दूसरा परिसर है। कोलकाता में सन् 1943 में शुरू हुआ इसे बाद में पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले रहरा में स्थानान्तरित कर दिया गया। यह परिसर कुछ भिन्न है - यह अनिवार्य रूप से अनाथों और निराश्रित या बहुत गरीब लड़कों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। स्वामी पुण्यानन्द इसके संस्थापक सचिव थे। उन्होंने स्वामी लोकेश्वनरानन्द और विमुक्तानन्द के साथ मिलकर एक तिकड़ी बनायी जिसने (जिन्होंने) पश्चिम बंगाल में उत्साहपूर्वक विकासशील शैक्षिक परिसरों का गठन किया , जो कि स्वस्थ प्रतिस्पर्धी और मनुष्य में भगवान की सेवा करने का जुनून था। रहरा छात्रावास में इस समय निम्नलिखित ईकाइयाँ शामिल है:- एक अनाथालय जहाँ सामान्य शिक्षा और शिल्प में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है , एक पूर्व परिषदीय (नर्सरी) स्कूल, जूनियर बेसिक स्कूल की पाँच उप-ईकाइयाँ , जूनियर हाईस्कूल , एक डिग्री कालेज , एक उच्च माध्यमिक व्यावसायिक संस्थान , एक व्यावसायिक प्रशिक्षण इकाई , एक ग्रामीण पुस्तकालय प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) और एक जूनियर बुनियादी प्रशिक्षण संस्थान (आवासीय) के साथ एक जूनियर तकनीकी स्कूल।



रामकृष्ण मिशन बॉयज होम, रहरा कलकत्ता
चित्र सं.-5.4.14

5.4.15 रामकृष्ण मिशन विद्याशाला, मैसूर

स्वामी सम्भवानन्द के मैसूर में शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्य , विशेष रूप से रामकृष्ण विद्याशाला (एक आवासीय विद्याशाला) की उनकी मास्टर योजना को स्वतंत्र भारत में अपनी तरह के उत्कृष्ट प्रयासों में से एक विशिष्ट रूप में सराहा गया है। स्वामी जी की अवधारणा के अनुसार एक पूर्ण मनुष्य (व्यक्ति) बनाने के लिए और पूर्ण विकसित होने के लिए सिर, हाँथ और विकसित हृदय की आवश्यकता होती है , ये बाते पाठ्यक्रम में जोड़े गये हैं। स्वामी हिरणमयानन्द के प्रयासों और योजना के माध्यम से पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिले में इसी तरह की एक संस्था की स्थापना की गयी थी। पुरूलिया के आवासीय विद्यालय का लक्ष्य भी वहाँ के लड़कों को व्यापक शिक्षा देना है।

स्वामी संभवानन्द के कार्य के सम्बन्ध में हमें मैसूर में उनके द्वारा शुरू की गई नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा का रामकृष्ण संस्थान के बारे में भी उल्लेख करना आवश्यक हे। यह शिक्षक-प्रशिक्षुओं के साथ-2 भारत की सांस्कृतिक आध्यात्मिक विरासत में रूचि रखने वाले अन्य लोगों को शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने वाले कार्यक्रमों के लिये समर्पित है। आर0आई0 एम0एस0ई0 को भारत सरकार द्वारा अच्छी तरह से विचार-विमर्श के पाठ्यक्रम के साथ मूल आधारित और मूल्य उन्मुख शिक्षा , नैतिक मूल्यों के लिए शिक्षा इत्यादि के क्षेत्र में अग्रदूतों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह कोयम्बटूर , नरेन्द्रपुर और शारदापीठ की तरह ही मिशन के डीम्ड विश्वविद्यालय का एक विशेष संकाय केन्द्र होगा। यह मुख्य रूप से प्रमुख क्षेत्रों में से एक पर ध्यान केन्द्रित करेगा , अर्थात् भारतीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत तथा मूल्य शिक्षा पर।



रामकृष्ण मिशन विद्याशाला, मैसूर
चित्र सं.-5.4.15

5.4.16 रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द कालेज, मद्रास

मद्रास में रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द कालेज का उल्लेख किये बिना उच्च शिक्षा के विषय पर हमारा वर्णन अपूर्ण होगा। सन् 1946 में भारत में ब्रिटिश शासन के अन्तिम समय में कम ज्ञानी भक्तों के समूह द्वारा शुरू किया गया , यह मुख्य रूप से स्वामी जी द्वारा कल्पना की गई कि राष्ट्रीय पद्धतियों द्वारा प्राचीन वैदिक और संस्कृत शिक्षा के साथ एकीकृत आधुनिक विज्ञान और अंग्रेजी की शिक्षा प्रदान करता है। वर्षों से यह कालेज आकार और गुणवत्ता में काफी विकसित हुआ है। इण्डिया टुडे द्वारा सन् 1997 में कराये गये एक सर्वेक्षण में इसे देश के दस सर्वश्रेष्ठ कालेजों में से एक माना , जो एक औसत उपलब्धि है। यह स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षा प्रदान करता है और रसायन विज्ञान , अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, वनस्पति विज्ञान और संस्कृत के विभागों में अनुसंधान करने वाले विद्वान है जो डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने के लिए कार्य करते है।



रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द कालेज, मद्रास
चित्र सं.-5.4.16

5.4.17 रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, गोलपार्क, कोलकाता

मिशन की गतिविधियों के सांस्कृतिक पक्ष पर , रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर गोलपार्क कोलकाता ने गर्व प्राप्त किया। इस परियोजना के अग्रदूत स्वामी नित्य स्वरूपानंद थे , जो मौलिकता और दूरदर्शिता के भिक्षु थे। सन् 1938 में अपनी सामान्य शुरूआत से यह एक लम्बा सफर तय कर चुका है और अब यह शिक्षा और शोध का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गया है जिसे कोलकाता विश्वविद्यालय और सोशल साइंस रिसर्च के लिए भारतीय परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त है। यह पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों के सर्वोत्तम तत्त्वों को

संयोजित करने के स्वामी जी के दृष्टिकोण को वास्तविक बनाने के लिए बनाया गया था , दोनों क्षेत्रों के विद्वानों के विचारों के अनुकूल आदान-प्रदान करने के लिए किया था। यह युवा पीढ़ी को भारत की गौरवशाली आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पर शिक्षित करना चाहता हे। इसके लिए यह पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत लाइब्रेरी , जिसमें लगभग दो लाख किताबें है और चार सौ से अधिक पत्रिकाएँ और समाचार पत्र है यह भारत की सबसे धनी और आधुनिक लाइब्रेरी है। इसमें एक भाषा स्कूल भी है जिसमें भारतीय और विदेशी दोनों की 14 भाषाओं को पढ़ाया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानशाला में कई देशों के विद्वानों को समायोजित किया जाता है जो भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का अध्ययन करने के लिए भारत आते हैं। संस्थान से जुड़े इंडोलाजिकल स्टडीज पर रिसर्च क्षेत्र है। संस्कृति धर्म और आध्यात्मिकता से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर सेमिनार , संगोष्ठी और व्याख्यान संस्थान के जीवन का मुख्य सूत्रधार बनते हैं। इस तरह के व्याख्यानों की संख्या सलाना 300 से अधिक है। इस तरह के व्याख्यानों की संख्या सलाना 300 से अधिक है जो दर्शाती है , कि वे लगभग दैनिक (प्रतिदिन) की बाते है।

यहाँ पर रामकृष्ण मठ से जुडा हुआ हैदराबाद में भाषाओं के इसी तरह के विद्यालय का उल्लेख किया जा सकता है साथ ही स्वामी रंगनाथनन्द जो इसके 13वें अध्यक्ष थे , के द्वारा भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का प्रसार उनके व्याख्यानों के माध्यम से हुआ। ये अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्ति प्रतिभाशाली वक्ता थे। उपाध्यक्षों में से एक के रूप में वह 1999 तक हैदराबाद आश्रम में रहे , जिस वर्ष में अध्यक्षता का कार्यभार उन्हें दिया गया था। इसके बाद वह सन् 2005 में अपनी महासमाधि तक बेलूर मठ में रहे। हैदराबाद में उनके प्रवास के दौरान उनके करिश्माई व्यक्तित्व और उपस्थिति ने जीवन के सभी क्षेत्रों से हजारों लोगों को हैदराबाद आश्रम में आकर्षित किया। सन् 1999 में वहाँ से उनके प्रस्थान के बाद भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का प्रचार करने का काम एक नये संस्थान विवेकानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन एक्सीलेंस के माध्यम से जारी रहा।



रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, गोलपार्क, कोलकाता
चित्र सं.-5.4.17

5.4.18 विवेकानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन एक्सीलेंस, हैदराबाद

जीवन और कार्यों के हर क्षेत्र में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के निरन्तरक्षरण का सामना (मुकाबला) करने के लिए रामकृष्ण मठ , हैदराबाद ने एक संस्थान शुरू करने की तत्काल आवश्यकता महसूस की जो कि स्वामी जी की योजना, जीवन निर्माण, मानव निर्माण और राष्ट्र निर्माण की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करेगा। इस उद्देश्य के साथ विवेकानन्द इंस्टीट्यूट आफ ह्यूमन एक्सीलेंस 10 सितम्बर 2000 को रामकृष्ण मठ हैदराबाद के परिसर में अस्तित्व में आया था। इसका उदघाटन तत्कालीन इसी क्रम की संस्था के अध्यक्ष स्वामी रंगनाथनन्द ने किया था।

संस्थान समाज के कमजोर वर्ग के प्रतिनिधियों जैसे युवाओं , छात्रों सरकारी कर्मचारियों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों , कार्पोरेट कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए मूल्य आधारित कार्यक्रम , कालेज के छात्रों के लिए प्रेरणाप्रद शैक्षिक कार्यक्रम , आत्म विश्वास निर्माण पाठ्यक्रम, संचार कौशल, आत्म सुधार की कला, ध्यान पाठ्यक्रम, व्यक्तित्व विकास पाठ्यक्रम, नेतृत्व गुण विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम , डाक्टरों, नर्सों, वकीलों, इंजीनियरों और अन्य इसी प्रकार के पेशेवरों के लिए विशेष प्रशिक्षण , विवेकानन्द बाल विकास कार्यक्रम, माता-पिता के प्रेरणाप्रद कार्यक्रम, ग्रामीण समूहों के लिए मूल्य आधारित कार्यक्रम, शास्त्रीय वाद्ययन्त्र और भक्ति संगीत में प्रशिक्षण , आत्म जागरूकता कार्यक्रम इत्यादि। इस संस्थान की स्थापना के दिन से इस दिन (अक्टूबर 2005) तक विभिन्न पाठ्यक्रमों में दो लाख से अधिक उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया गया है।



विवेकानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन एक्सीलेंस, हैदराबाद
चित्र सं.-5.4.18

5.4.19 संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में रामकृष्ण मिशन

हमने जनजातियों और हरिजनों के बीच मिशन के शैक्षणिक कार्य का उल्लेख किया है। जनता को शिक्षित करना स्वामी जी के व्यक्तिगत विचारों में से एक था और उनमें इसका लगभग एक जुनून था। जनता को शिक्षित करने का उनका उद्देश्य महान आध्यात्मिक विचारों, हमारे प्राचीन पुस्तकों में संग्रहीत रत्नों को मछुआरों , परिआ और चंडालों समेत साधारण व्यक्ति की पहुँच में लाने के लिये था। उनके प्रसिद्ध शब्द थे -

वेदान्त की अवधारणायें बाहर आनी चाहिए , उन्हें न केवल गुफा में , न केवल जंगल में बल्कि उन्हें गली-कूचों , झुग्गी-झोपडियों और गरीब व्यक्ति के घरों में काम करने के लिए मछुआरे जो मछली पकड़ते है और विद्यार्थी जो अध्ययन करते है , के लिये बाहर आनी चाहिए। एक शब्द में मैं उन्हें लोकप्रिय बनाना चाहता हूँ। मैं इन विचारों को बाहर लाना और उन्हें भारत में हर व्यक्ति की सामान्य सम्पत्ति बनाना चाहता हूँ , चाहे वह संस्कृत भाषा जानता हो या नहीं।

स्वामी जी ने महसूस किया कि वेदान्त को लोकप्रिय बनाने में सबसे बड़ी बाधा संस्कृत भाषा थी जिसमें कि सभी प्राचीन आध्यात्मिक साहित्य लिखे गये हैं। इस बाधा को दूर करने के लिए स्वामी जी ने सुझाव दिया कि लोगों को उनकी भाषा में वैदान्तिक विचारों को लोगों को सिखाया जाना चाहिए। लेकिन फिर उन्होंने भी संस्कृत शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया। वह इस पर जोर देने के लिये पर्याप्त साहसी थे कि -

यहाँ तक कि महान बुद्ध ने भी एक गलत कदम उठाया जब उन्होंने संस्कृत भाषा को जनता द्वारा अध्ययन करने से रोक दिया। नतीजा यह था कि हालांकि उनके महान विचार

तेजी से फैले हुए थे लेकिन उनकी प्रतिष्ठा समाप्त थी। ज्ञान आया लेकिन प्रतिष्ठा नहीं थी , संस्कृति नहीं थी।

यह बहुत कुछ ऐसा है, उदाहरण के लिए अंग्रेजी भाषा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का अध्ययन करना। स्थानीय भाषा में वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा फैलाने से शायद वे तेजी से फैलेगा और व्यापक क्षेत्र को कवर किया जायेगा लेकिन फिर प्रतिष्ठा में कमी होगी। आधुनिक दुनिया में विशेष रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी की दुनिया में , अंग्रेजी और प्रतिष्ठा एक साथ आगे बढ़ते है इस लिए स्थानीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी को आधुनिक सन्दर्भ में समान रूप से जोर दिया जाना चाहिए।

संस्कृत शिक्षा के प्रसार में मिशन का काम दुर्भाग्यवश अन्य शैक्षिक क्षेत्रों में उसके काम की तुलना में बहुत कम है। भाषा और संचार कौशल ऐसे क्षेत्र है जिनके लिए व्यवस्थित तरीके से पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। समय शायद आ गया है जब शैक्षिक कार्यों के इस पहलू को बहुत गम्भीरता के साथ उठाया जाना चाहिए। क्योंकि कम्प्यूटर इण्टरनेट आदि जैसे हाई-टेक उपकरणों के विकास के साथ दुनिया इतनी छोटी हो गई है , कि आज प्रभावी संचार किसी भी शैक्षिक उद्यम में सफलता का आधार बनता है। हमारी युवा पीढ़ी में इसकी कमी है और जब सूचना प्रौद्योगिकी और संचार नवीनतम आधुनिक है तो वर्तमान युग में इन कौशलों में गहन प्रशिक्षण जरूरी है। हालांकि केरल में पलाई और कलाड़ी में संस्कृत शिक्षा प्रदान करने में कुछ काम किया जा रहा है। केरल की तुलना में इस काम के लिए किसी भी बेहतर स्थान की कल्पना नहीं की जा सकती , जो कि महान भास्कर श्री शंकराचार्य का जन्म स्थान है। अपने भ्रमण के दिनों के दौरान स्वामी जी के लिए आश्चर्य की बात थी कि महिलाओं ने संस्कृत में धारा प्रवाह बातचीत की।



संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में रामकृष्ण मिशन
चित्र सं.-5.4.19

5.4.20 भारतीय आदिवासी समुदाय के बीच मिशन के शैक्षिक कार्य

मेघालय में आदिवासी लोगों और अरूणांचल प्रदेश के आदिवासी लोगों के बीच सांस्कृतिक अन्तर है। केरल और मणिपुर के समान मेघालय के आदिवासी समाज भी मातृ सत्तात्मक हैं। यहाँ महिला ही है , जो नियम बनाती है और शासन करती है। वह सभी जिम्मेदारियों को संभालती है , जो कि मैदानी क्षेत्रों में पुरुषों द्वारा उत्पन्न की जाती है। यहाँ शादी के बाद दूल्हा , दुल्हन के साथ रहने के लिए अपना घर छोड़ देता है। पुत्री न कि पुत्र माता-पिता की सम्पत्ति को विरासत में ले लेती है। बच्चे माँ का उपनाम लेते है , न कि पिता का।

सन् 1960 के दशक के दौरान जब रामकृष्ण मिशन ने पहले अरूणाचल प्रदेश के शिलांग जिले (उत्तरी सीमाओं से लगे हुए तिब्बत/चीन) में शैक्षिक और चिकित्सा गतिविधियों का शुभारम्भ किया , तो साक्षरता दर लगभग शून्य थी। इसके अलावा मेघालय के जनजातीय लोगों के विपरीत, अरूणाचल प्रदेश की मायनॉन्ग जनजातियों में पितृसत्तात्मक समाज है। एक तरह की बहुसत्ता का भी प्रचलन था। लेकिन सभी आदिवासी समुदायों में एक विशेषता आम है जो उनकी आधुनिक सादगी और व्यवहार में पूर्ण खुलापन है , वे किसी भी तरह की चतुरता या राजनीतिक चालबाजी से अनभिज्ञ थे और वे इसे दिल की गहराई से पसन्द नहीं करते थे इसलिए उन्हें ईमानदारी का सहज ज्ञान था। अरूणाचल प्रदेश में अलोंग और नरोत्तम नगर में मिशन स्कूल इन जनजातीय लोगों के शैक्षणिक मानकों को बढ़ाने में लम्बा सफर तय कर चुके है।

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में नारायण पुर में जनजातीय लोगों की कहानी और भी दयनीय है। इस जगह को मूल रूप से अबुजमढ़ (शाब्दिक अर्थ है - अज्ञात भूमि) कहा जाता था। अबुजगमढ़ में जनजातीय लोगों को यह तक पता नहीं था कि कपड़ों के साथ अपने शरीर को कैसे ढका जाता है। इस अबुजमढ़ में प्रवेश करना और उनके कल्याण और उत्थान के लिए वर्तमान अबुजमढ़ जनजातीय सेवा एक विशाल शैक्षिक, संस्कृति और चिकित्सा परिसर का निर्माण करना केवल ईश्वर में शाश्वत विश्वास रखने वाले साहसी और पवित्रता से प्रेरित भिक्षुओं का ही कार्य था जिनमें शेर की तरह साहस था और गरीबों और पिछड़ों के लिए

सहानुभूति थी। अबुजमढ़ परियोजना अपने अग्रणी भिक्षु आत्मानन्द को पाकर भाग्यशाली थी जो उस रामकृष्ण मिशन के राजपुर केन्द्र के प्रभारी सचिव थे। दुर्भाग्य से मृत्यु के निर्दयी जबड़ों ने असमय ही उनको छीन लिया था जबकि आदिवासी परियोजना उस समय ठीक आगे बढ़ना शुरू हुई थी। लेकिन उन्हें इन गरीब जनजातियों के मित्र के रूप में याद किया जाएगा जिन्होंने साहसपूर्वक इस परियोजना की शुरूआत की और सेना के जनरल की दक्षता और साहस के साथ इस कार्य को कार्यान्वित (निष्पादित) किया।



भारतीय आदिवासी समुदाय के बीच मिशन के शैक्षिक कार्य
चित्र सं.-5.4.20

5.4.21 डीम्ड विश्वविद्यालय (रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द एजुकेशनल एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट)

एक अन्य संस्थान जो कि शिक्षा के क्षेत्र में रामकृष्ण मिशन के एक शताब्दी प्राचीन आन्दोलन का प्रमुख स्थान (स्थल) है। वह है डीम्ड विश्वविद्यालय जो रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान के नाम से जाना जाता है। इसकी उत्पत्ति को स्वामी जी के भविष्य सूचक उच्चारण में वापस (पुनः) देखा ज सकता है। जिसे उनकी महासमाधि 4 जुलाई सन् 1902 से दो दिन पहले बनाया गया था।

आध्यात्मिक प्रभाव जो बेलूर (मठ) में आया वह पन्द्रह सौ साल तक रहेगा , और यह एक महान विश्वविद्यालय होगा। यह मत सोचो कि मैं कल्पना करता हूँ बल्कि मैं इसे देखता भी हूँ।

आज एक शताब्दी से भी अधिक से पश्चात् एक डीम्ड विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ स्वामी जी के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए एक ठोस कदम शुरू किया है , जिसमें रामकृष्ण मिशन के शैक्षणिक कार्यक्रम को वाटरशेड के रूप में चिन्हित किया गया है।

औपचारिक रूप से इसका उद्घाटन 4 जुलाई 2005 को किया गया था। स्वामी जी ने शायद पहले अपने दिमाग में बुद्ध विश्वविद्यालयों नालन्दा और तक्षशिला के रूप में इसका उल्लेख किया था। अपने विचारों के अनुसार यह विश्वविद्यालय पूर्वी और पश्चिमी दुनिया के सर्वोत्तम तत्त्वों को मिलाकर मानव निर्माण और चरित्र निर्माण की शिक्षा प्रदान करता है। यह कला , विज्ञान और आध्यात्मिक विषयों के अध्ययन में शिक्षा और अनुसंधान के अवसर प्रदान करेगा। इन तीनों विषयों के पूरक और आपसी अन्तःनिर्भर चरित्र को विशेष बल मिलेगा।

यह एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है , जो भारत और विदेशों में रामकृष्ण मिशन के शाखा केन्द्रों के माध्यम से संचालित होता है। यह एक विशेष परिसर में स्थित संस्थान नहीं है। यह संस्थानों का समूह है , उनमें से सभी रामकृष्ण मिशन की शाखाओं से सम्बन्धित है। जिसका मुख्यालय बेलूर मठ में है। इस तरह यह भारत में शिक्षा के क्षेत्र में अपनी तरह का अनूठा प्रयोग करने वाला एक अलग तरह का विश्वविद्यालय है। इसमें चार विशेष प्रमुख क्षेत्र है। जिसमें यह संचालित होता है। इन क्षेत्रों को आमतौर पर भारत के अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा देखरेख या किसी प्रकार जोर अथवा सहयोग नहीं दिया जाता है वे है-

- विकलांगता प्रबन्धन और विशेष शिक्षा
- आदिवासी विकास सहित एकीकृत ग्रामीण विकास
- भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत और मूल्य शिक्षा
- राहत और पुनर्वास सहित आपदा प्रबन्धन

ये क्षेत्र इस विश्वविद्यालय के प्रमुख संकाय है। इन क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक काम कर रहे कुछ शाखा केन्द्र इसके विशिष्ट संकाय केन्द्र है। उदाहरण के लिए रामकृष्ण मिशन विद्यालय , कोयम्बटूर उपर वर्णित पहले मुख्य क्षेत्र के लिए विशेष संकाय केन्द्र है। अन्य क्षेत्रों के साथ भी यही बात है।

भावनाओं और समर्पण की कमी वाले योग्य और कुशल इंजीनियरों और डॉक्टरों के बजाय, सिर हांथ और दिल के साथ सुसंगत रूप से विकसित परिपूर्ण चरित्र के शिक्षित पुरुष और महिलाएं शामिल है। ऐसे पुरुष और महिलाएँ जो शानदार बुद्धि , प्रेमपूर्ण दिल और

कुशल हांथों से सम्पन्न है। आत्म त्याग के बजाय आत्म परित्याग के नये आचारों में शिक्षित है। हमारे देश को अपनी पूर्ण भव्यता (महिमा) में पुनः स्थापित कर सकती है और इस प्रभाव के माध्यम से मानव जाति पूर्ण पुनरूस्थान कर सकती है। यह स्वामी जी की प्रशंसनीय दृष्टियों में से एक था। इन उद्देश्यों की पूर्ति में यह विश्वविद्यालय समर्पित है। इस नये विश्वविद्यालय ने इस तरह धीरे-2 एक नया आन्दोलन स्थापित किया है। इसका उद्देश्य मानव जाति के सम्पूर्ण विकास से कुछ भी कम नहीं है। जिसको केवल समय साबित करेगा। स्वामी जी ने भविष्यवाणी की थी-

शक्ति जिसका यहाँ (बेलूर मठ) से उदय होगा पूरी दुनिया को शक्ति से भर देगी और मनुष्यों के जीवन को विभिन्न माध्यमों (शाखाओं) में बदल देगी।

यह सुनिश्चित करने के लिए इस विश्वविद्यालय के माध्यम से पूरे भूमण्डल (दुनिया) को शिक्षा, सार्वभौमिक सद्भाव और शान्ति के प्रकाश से पूर्ण करने के स्वामी जी के सहस्त्राब्दी दृष्टि को पूरा करने के लिए एक आशाजनक कदम उठाया गया है।



डीम्ड विश्वविद्यालय (रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द एजुकेशनल एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट)
चित्र सं.-5.4.21

5.4.22 विवेकानन्द अनुसंधान केन्द्र

स्वामी जी विज्ञान और धर्म कविता और दर्शन शास्त्र को एक दूसरे से मिलाना चाहते थे जो कि अभी तक असंगत समझे जाते थे। वह वैज्ञानिक स्थिति और धार्मिक विश्वास का मिश्रण चाहते थे। इसलिए नये विश्वविद्यालय के प्रबन्धन बोर्ड ने विवेकानन्द स्कूल ऑफ फंडामेंटल साइंस शुरू की है जिसके तहत एक विवेकानन्द रिसर्च सेन्टर होगा , जो रामकृष्ण विवेकानन्द दर्शन , चेतना अध्ययन , सैद्धान्तिक भौतिकी जैसे मौलिक विज्ञान , कम्प्यूटर विज्ञान और शुद्ध गणित में अनुसंधान करेगा। इसका उद्घाटन भी 4 जुलाई 2005 को हुआ

था। वर्तमान में यह विवेकानन्द के पूर्वजों के घर से संचालित है जो अक्टूबर 2004 में व्यवस्था का नया केन्द्र बना था।

अब हम लगभग अपने वर्णन के अन्त तक पहुँच गये है। मिशन की पूर्ण शाखाओं में ही में छोटी और बड़ी कई शैक्षणिक परियोजनाएँ जो आगे बढ़ी है उन पर चर्चा नहीं की गई है। मठ और मिशन के केन्द्रों की विस्तृत सूची कुछ रूपों में या अन्य में हालांकि वे छोटी भी हो सकती है, में शैक्षणिक कार्य कर रही है। वे इस अनुबन्ध में दी गयी है।



विवेकानन्द अनुसंधान केन्द्र
चित्र सं.-5.4.22

¤ ¤ ¤ ¤ ¤

6.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

विश्व के आध्यात्मिक इतिहास में श्रीरामकृष्ण परमहंस का स्थान अद्वितीय है। उनका जीवन धर्म और आध्यात्म की एक विस्तृत प्रयोगशाला थी। उनके जीवन में सेवाभाव एवं आध्यात्मिक अनुभूति परम स्थान था। भारत में अद्वेतनुभूति प्रतिष्ठित श्री रामकृष्ण परमहंस के नाम पर ही रामकृष्ण मिशन की स्थापना हुई।

प्रयागराज में रामकृष्ण मिशन की परिकल्पना स्वामी विवेकानंद ने की थी। स्वामी विवेकानंद ने दिसम्बर 1890 के अंतिम सप्ताह से जनवरी 1891 ई0 तक एक माह प्रयागराज में बिताए थे। तीर्थ राज प्रयाग में लगने वाले प्रति बारह वर्षों का विश्व प्रसिद्ध विराट धार्मिक आयोजन कुम्भ मेला और प्रतिवर्ष माघ में लगने वाला कल्पवास पूरे भारत में आध्यात्मिक विचारों के प्रसार का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। स्वामी विवेकानंद जी के द्वारा अमेरिका में रहते समय ही प्रयाग में एक केन्द्र स्थापित करने की इच्छा हुई स्वामी विवेकानन्द जी के द्वारा पूरे भारत में पांच केन्द्र बनाने का विचार था जिसमें इलाहाबाद के अलावा कलकत्ता मद्रास बम्बई व अल्मोडा था। प्रचार केन्द्र के रूप में तीर्थ राज प्रयाग स्वामी जी के मन पर विशेष अधिकार जमा रखा था। कोलकाता के शरदचंद्र मिश्र ने वहाँ पारसे बागान में एक रामकृष्ण समिति की स्थापना की थी। 1897 में वे प्रयागराज आए उन्होंने यहाँ अपने कुछ मित्रों के सहयोग से ब्रह्मवादीन नाम एक संस्था बनाई। सन् 1900 ई0 में स्वामी विवेकानंद जी ने विज्ञानानंद जी को एक स्थायी मठ की स्थापना के लिए प्रयागराज भेजा। स्वामी विज्ञानानंद जी रामकृष्ण के परम शिष्यों में से थे।

प्रयागराज आकर वे ब्रह्मवादीन क्लब में रहने ले ब्रह्मवादीन क्लब ही रामकृष्ण मठ तथा मिशन का आश्रम था। 31 जनवरी सन् 1910 ई0 को विज्ञानानंद जी ने प्रयाग के मुट्ठी गंज मुहल्ले में देवेंद्र नाथ बंधोपाध्याय से चार हजार रुपये में एक मकान तथा सड़क के उस पार एक भूखंड खरीदा। मकान दुमंजिला था परंतु बाद में एक कमरे को छोड़कर सारा गिरा दिया गया और नए भवन का निर्माण किया गया है। अक्टूबर 1910 में वहाँ रामकृष्ण मठ तथा मिशन सेवा श्रम के चिकित्सालय की स्थापना हुई। तब से विज्ञानानंद मठ में निवास करने लगे 1919 ई0 में मठ से लगी हुई कुछ जमीन भी खरीद ली गई। 1970 के दसक में भवन की छत

की हालत जर्जर हो गई। फलस्वरूप 1947 में भवन के पुनर्निर्माण का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ और विज्ञानानंद कुटीर का उद्घाटन हुआ। रामकृष्ण मठ में एक मंदिर भी है जिसे स्वामी विज्ञानानंद ठाकुर के घर के रूप में उपयोग किया करते थे। सन् 1978 ई0 में मंदिर के द्वार को बड़ा किया गया तथा नया आकार दिया गया। मठ के शताब्दी वर्ष पूरे होने पर मठ के मंदिर में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ संचालित होती है। विशेष रूप से रामकृष्ण माँ शारदा स्वामी विवेकानंद, स्वामी विज्ञानानंद तथा अन्य महापुरुषों के जन्मतिथि पर उत्सव का आयोजन होता है। मंदिर में प्रतिदिन पूजा आरती तथा प्रार्थना भजन होते हैं। मठ में साधना शिविरों का भी आयोजन होता है मठ में ही स्थित धर्मार्थ चिकित्सालय का संचालन मठ द्वारा किया जाता है। वर्तमान में तीन चिकित्सालय है। चिकित्सालय में नगर के अनेक विशेषज्ञ चिकित्सक सेवा प्रदान करते हैं। इसी मठ में मिशन द्वारा संचालित गरीब बच्चों के समग्र विकास के लिए एक परियोजना सन् 2006 से संचालित है, जिसका नाम है गदाधर अभ्युदय प्रकल्प /(गदाधर-पाठशाला)।

6.2 मठ केन्द्र की गतिविधियाँ

दैनिक पूजा, हनुमान चालीसा, रामनाम और श्यामनम संकीर्तन , भजन और नियमित धार्मिक कक्षाएं, आश्रम परिसर में और बाहर आध्यात्मिक अनुष्ठान और व्याख्यान।

श्री रामकृष्ण, पवित्र माता श्री शारदा देवी, स्वामी विवेकानंद, स्वामी विज्ञानानंद और कुछ अन्य धार्मिक गुरुओं की जयंती मनाई जाती है।

6.3 मिशन केन्द्र की गतिविधियाँ

- पैथोलाजी, फिजियोथेरेपी, ईसीजी और विशेषज्ञ परामर्श सेवाओं के साथ एक धर्मार्थ होम्योपैथिक-कम-एलोपैथिक औषधालय।
- एक पुस्तकालय और एक पढ़ने का कमरा (बच्चों के लिए एक अलग खंड के साथ) , जिसमें 34,304 पुस्तकें और 55 समाचार पत्र और पत्रिकाएँ हैं।
- लड़कों और लड़कियों के लिए साप्ताहिक व्यक्तित्व विकास कक्षाएं।

- माघ मेले में एक शिविर में निःशुल्क चिकित्सा उपचार (इस वर्ष 14,757 बाह्य रोगियों का इलाज किया गया), धार्मिक प्रवचन, एक बुक स्टाॅल, एक प्रदर्शनी, 82 तीर्थ यात्रियों को इस वर्ष समायोजित किया गया था।
- एक कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र जिसने 885 लड़कों और 762 लड़कियों को प्रशिक्षित किया।
- लगभग 100 जरूरतमंदर बच्चों के लिए गदाधर अभ्युदय प्रकल्प कार्यक्रम।
- गरीबों और जरूरतमंदों को भोजन प्रदान करने , कपड़े, हाइजीनिक किट और शैक्षिक किट वितरित करने के माध्यम से कल्याण कार्य।

6.4 गदाधर अभ्युदय प्रकल्प की पृष्ठभूमि

आज के बच्चे - जो प्रौद्योगिकी में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भाग्यशाली हैं और दुनिया भर में व्यापक बदलावों के सम्पर्क में हैं - जीवन के लिए उचित तरीके से सशक्त नहीं हैं। दूसरी ओर, गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक संघर्षों के जबड़े में फंसे भारत में बच्चों का एक बड़ा वर्ग , आधुनिकीकरण के लाभों में प्रवेश की बाधाओं को तोड़ने में असमर्थ है। भोजन, पोषण, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों से वंचित भारत के विशाल झुग्गी-झोपड़ी के बच्चे , सड़क पर रहने वाले बच्चे और ग्रामीण बच्चे इससे वंचित हैं।

6.5 गदाधर अभ्युदय प्रकल्प का शुभारम्भ

पूर्वोक्त सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए , गदाधर अभ्युदय प्रकल्प को अक्टूबर 2010 में स्वामी विवेकानंद के 4 वर्ष लंबे 150 वें जन्म वर्षगांठ समारोह के एक भाग के रूप में लॉन्च किया गया था। यह जरूरतमंद और पिछड़े बच्चों के तीन गुना विकास प्रदान करने का इरादा था - शारीरिक , मानसिक और बौद्धिक तथा तब से यह भारत के विभिन्न हिस्सों में चल रहा है।

श्री रामकृष्ण के बचपन का नाम 'गदाधर' नाम की परियोजना 'गदाधर अभ्युदय प्रकल्प, जो उपेक्षित झुग्गी और ग्रामीण बच्चों की बेहतरी के लिए लागू की जा रही है , जिन्हें अक्सर सड़क के किनारे झोपड़ियों और अत्यधिक अस्वच्छता से लाया जाता है।

6.6 गदाधर अभ्युदय प्रकल्प के उद्देश्य

- पूर्वोक्त लक्षित बच्चों में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना।
- अपने स्कूल के विषयों पर विशेष कोचिंग के साथ उन्हें शिक्षित करने के लिए।
- उनमें स्वच्छता और स्वच्छता की भावना पैदा करना।
- उनके शारीरिक विकास के लिए उनका पोषण करना।
- उन्हें भारत के अच्छे नागरिक तैयार करने के लिए।

6.7 गदाधर अभ्युदय प्रकल्प का कार्यान्वयन

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प एक संयुक्त कार्यक्रम है जिसमें उपरोक्त लक्षित बच्चों (5 से 12 वर्ष की आयु) के शारीरिक , मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए अलग-अलग गतिविधियाँ हैं, जैसा कि नीचे बताया गया है। यह कार्यक्रम प्रतिदिन शाम को लगभग 3-4 घंटे (एक महीने में लगभग 25 दिन) आयोजित किया जाता है।

6.8 शारीरिक विकास के लिए गतिविधियाँ

इस कार्यक्रम में बच्चों को विभिन्न खेलों और अभ्यासों में भाग लेने का मौका मिलता है। उन्हें उसी के लिए खेल वस्तुएँ प्रदान की जाती हैं। सत्र की शुरूआत प्रार्थनाओं से होती है और उसके बाद अभ्यास से। छात्रों को स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बुनियादी प्रशिक्षण दिया जाता है , शौचालय अभ्यास में , सुरक्षित पीने के पानी की आवश्यकता , दांतों की सफाई, हाथ धोना, नाखून काटना, रात में मच्छरदानी का उपयोग करना आदि। रहने वाले क्वार्टर और पर्यावरण को बनाए रखने में सामुदायिक भागीदारी की भावना विकसित करना। स्वच्छ और स्वास्थ्यकर, बच्चों को सामान्य जागरूकता पैदा करके सिखाया जाता है। उनके शरीर के वजन और ऊँचाई आदि की निगरानी के लिए समय-समय पर स्वास्थ्य जाँच का

आयोजन किया जाता है और इससे वे स्वस्थ रहते हैं। जहाँ भी आवश्यक हो , न्यूनतम दवाएँ डॉक्टर की सलाह के अनुसार दी जाती है। प्रत्येक दिन के कार्यक्रम के अंत में , कुपोषण की समस्या का सामना करने के लिए, सभी प्रतिभागियों को पोषक भोजन की खुराक दी जाती है। शारीरिक विकास के एक भाग के रूप में , जीएपी के बच्चों को समय-समय पर निम्नलिखित वस्तुएं प्रदान की जाती हैं: स्कूल बैग , स्कूल की ड्रेस , नोटबुक, पेन, पेंसिल, इरेजर आदि किताबें, छतरियाँ/रेनकोट, जूते, टायलेटरी टायलेट्री आइटम जैसे टूथपेस्ट। टूथब्रश , जीभ-क्लीनर, साबुन, तेल, नाखून-क्लिपर आदि।

6.9 मानसिक विकास के लिए गतिविधियाँ

संगीत, नाटक, जप, पेंटिंग आदि में स्थानीय संस्कृति और परंपरा के अनुसार बच्चों को विभिन्न कलाओं और कौशलों से अवगत कराया जाता है। राष्ट्रीय प्रार्थना को बढ़ावा देने और समग्र जीवन को प्रोत्साहित करने के लिए सार्वभौमिक प्रार्थनाएं सिखाई जाती हैं। बच्चों को सक्षम शिक्षकों के मार्गदर्शन में ध्यान और योग का अभ्यास करने के लिए भी निर्देशित किया जाता है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख मूल्य शिक्षा , जीएपी कार्यक्रम का भी हिस्सा है। साहित्य , धर्म, इतिहास और स्वतंत्रता आंदोलन के क्षेत्र में महान हस्तियों के जीवन को छात्रों को उनके महान गुणों को याद रखने के लिए सिखाया जाता है। समय-समय पर , मूल्य शिक्षा और अन्य प्रेरणादायक विषयों पर फिल्में हमारी राष्ट्रीय विरासत और संस्कृति को उजागर करने के लिए छात्रों को दिखाई जाती हैं। जीएपी के समर्पित शिक्षक उचित दृष्टिकोण और जागरूकता के साथ बच्चों के सही संरक्षक हैं। एक स्वस्थ मानसिक फ्रेम के साथ उपहार में , वे बच्चों में एक स्वस्थ मानसिकता पैदा करते हैं।

वे इसमें मदद करने की कोशिश करते हैं:

- बच्चे का पालन पोषण,
- बच्चे में संस्कारित मूल्य,
- बच्चें के चरित्र को ढालना और अच्छी आदतें सिखाना है।

6.10 प्रवेश प्रक्रिया

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प में प्रयागराज (इलाहाबाद) नगर के गरीबी , अशिक्षा और सामाजिक संघर्षों के जबड़े में फंसे बच्चों का एक बड़ा वर्ग आधुनिकीकरण के लाभों में प्रवेश की बाधाओं को तोड़ने में असमर्थ है। भोजन , पोषण, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों से वंचित इस क्षेत्र के विशाल झुग्गी-झोपड़ी के बच्चे , मलिनबस्ती के बच्चे, सड़क पर रहने वाले बच्चे अध्ययन अध्यापन हेतु आते है। यहाँ प्रवेश की कोई निर्धारित प्रक्रिया नहीं है , इसमें अभिभावक स्वयं संस्थान में सम्पर्क कर अपने बच्चों का प्रवेश करवाते है। प्रवेश में निर्धन, पिछड़े एवं दिव्यांग तथा असहाय बच्चों को प्राथमिकता दी जाती है।

6.11 कक्षा स्तर

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प , प्रयागराज केन्द्र में कक्षा एक से कक्षा आठ तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाता है , जिनकी आयु लगभग 5 वर्ष से 12 वर्ष तक होती है।

6.12 विद्यार्थी गणवेश

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र में बालकों के लिए लाल धारीदार चेक शर्ट और कोकाकोला कलर का पैन्ट तथा बालिकाओं के लिए लाल धारीदार चेक शर्ट एवं कोकाकोला कलर की स्कर्ट और साथ में लैगी गणवेश निर्धारित है। सप्ताह में निर्धारित दो दिन बुधवार और शनिवार को पीली टी-शर्ट एवं कोकाकोला कलर का पैन्ट बालकों के लिए तथा पीली टी-शर्ट एवं कोकाकोला कलर की स्कर्ट तथा साथ में लैगी बालिकाओं के लिए निर्धारित गणवेश है। शीतलकाल में स्वेटर, मोजा, टोपी, जूता भी सभी को पहनना होता है।

6.13 अनुशासन

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र का अनुशासन देखते ही बनता है , यहाँ सभी विद्यार्थी स्वानुशासन में रहकर सभी क्रिया-कलाप सम्पादित करते है।



अनुशासन चित्र संख्या-6.13

6.14 शिक्षक

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र में शामिल शिक्षकों का विवरण निम्न है-

(1) मुख्य आचार्य (महराज जी)

(2) रेखा जयसवाल

(3) अंजना सिंह

(4) आरती विश्वकर्मा

(5) मंजू केशरवानी



शिक्षक चित्र संख्या-6.14

6.15 कार्यावधि

रामकृष्ण मिशन आश्रम प्रयागराज केन्द्र में संचालित गदाधर अभ्युदय प्रकल्प (जीएपी) में बच्चे सभी ऋतुओं में प्रतिदिन सायं 4:00 बजे से लेकर रात 8:00 बजे तक रूकते है। इन चार घण्टों में विद्यार्थियों को केवल एक घण्टे का अध्ययन-अध्यापन कार्य कराया जाता है।

6.16 दिनचर्या

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र की दिनचर्या निम्नवत् है-

6.16.1 कार्यारम्भ

जब विद्यार्थी नियमित रूप से सायं 4:00 बजे गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र में उपस्थित होते है तब वे स्वयं नियमित रूप से अपने अध्ययन-अध्यापन कक्षा कक्ष/परिसर की साफ-सफाई करते है और तदोपरान्त दरी (बिछौना) बिछाते है। यहाँ दो पंक्तियों में अलग दरी बिछाई जाती है , जिसमें एक पंक्ति में बालक तथा दूसरी पंक्ति में बालिकाएँ पूर्ण अनुशासन का पालन करते हुए सभी विद्यार्थी हांथ बांधकर बैठते है। सभी विद्यार्थी पद्मासन में बैठकर आँख बन्द करके ओम का उच्चारण करते है और अपने- 2 भगवान का 15 मिनट तक ध्यान करते है , जिसको जो भगवान पसन्द है। इसके बाद ओमशान्ति! ओमशान्ति! ओमशान्ति! बोलकर ध्यान को समाप्त करते है। ध्यान के पश्चात् निम्न वैदिक मन्त्र का सामूहिक अभ्यास किया जाता है।



कार्यारम्भ चित्र संख्या-6.16.1

6.16.2 प्रार्थना सत्र

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र में निम्नलिखित प्रार्थनाओं का सस्वर गायन कराया जाता है।



प्रार्थना सत्र चित्र संख्या-6.16.2

6.16.2.1 वैदिक मन्त्र

हरिः ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवागं सस्तनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमि। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति।।

हरिः ॐ सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी

समानं मनः सह चित्तमेषाम्।

समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः

समानेन वो हविषा जुहोमि।।

समाना व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

हरिः ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

हरिः ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि।

बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि।

मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।। हरिः ॐ तत्सम्।। श्री रामकृष्णार्पणमस्तु।।

वैदिक मन्त्र के पश्चात् निम्न देशभक्ति गीत का सामूहिक रूप से सस्वर गायन किया जाता है।

6.16.2.2 देश भक्ति गीत

‘हे जन्मभूमि भारत हे कर्म भूमि भारत

हे वन्दनीय भारत, अभिनंदनीय भारत।।

जीवन सुमन चढ़ाकर आराधना करेगे

तेरी जनम-जनम भर हम बन्दना करेंगे।।

हम अर्चना करेगे .... ।। 1 ।।

महिमा महान तू है, गौरव निधान तू है,

तू प्राण है हमारी, जननी समान तू है।।

तेरे लिए जियेंगे, तेरे लिए मरेंगे,

तेरे लिए जनम भर, हम साधना करेगे।।

हम अर्चना करेगे .... ॥ 2 ॥

जिसका मुकुट हिमालय, जग जगमगा रहा है,

सागर जिसे रतन की, अंजुलि चढ़ा रहा है।

वह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे,

उस देश के बिना हम, जीवित नहीं रहेंगे।।

हम अर्चना करेगे .... ॥ 3 ॥

जो संस्कृति अभी तक दुर्जेय सी बनी है,

जिसका विशाल मन्दिर, आदर्श का धनी है।।

उसकी विजय-ध्वजा ले, हम विश्व में चलेंगे,

सुर संस्कृति पवन बन, हर कुंज में बहेंगे।।

हम अर्चना करेगे .... ॥ 4 ॥

शाश्वत स्वतंत्रता का, जो दीप जल रहा है,

आलोक का पथिक जो, अविराम चल रहा है।

विश्वास है, कि पलभर, रूकने उसे न देंगे,

उस दीप की शिखा को, ज्योतित सदा रखेंगे।।

हम अर्चना करेगे .... ॥ 5 ॥

देश भक्ति गीत के पश्चात् श्री गुरू महराज की प्रार्थना सामूहिक रूप से की जाती है।

6.16.2.3 गुरू प्रार्थना

भवसागर-तारण-कारण हे। रविनन्दन-बन्धन-खण्डन हे।।

शरणागत किंकर भीत मने। गुरुदेव दया करो दीनजने।। 1 ।।

हृदिकन्दर-तामस-भास्कर हे। तुमि विष्णु प्रजापति शंकर हे।

परब्रह्म परात्पर वेद भणे। गुरुदेव दया करो दीनजने।। 2 ।।

मनवारण-शासन-अंकुश हे। नरत्राण तरे हरि चाक्षुष हे।।

गुणगान-परायण देवगणे। गुरुदेव दया करो दीनजने।। 3 ।।

कुलकुण्डलिनी-घुम-भंजक हे। हृदिग्रन्थि-विदारण-कारक हे।।

मम मानस चंचल रात्रदिने। गुरुदेव दया करो दीनजने।। 4 ।।

रिपुसूदन मंगलनायक हे। सुख शान्ति-वराभय-दायक हे।।

त्रयताप हरे तब नाम गुणे। गुरुदेव दया करो दीनजने।। 5 ।।

अभिमान-प्रभाव-विमर्दक हे। गतिहीन-जने तुमि रक्षक हे।।

चित शंकित वंचित भक्तिधने। गुरुदेव दया करो दीनजने।। 6 ।।

तव नाम सदा शुभसाधक हे। पतिताधम-मानव-पावक हे।।

महिमा तव गोचर शुद्ध मने। गुरुदेव दया करो दीनजने।। 7 ।।

जय सद्गुरू ईश्वर-प्रापक हे। भवरोग-विकार-विनाशक हे।।

मन जेन रहे तव श्रीचरणे। गुरुदेव दया करो दीनजने।। 8 ।।

श्री गुरू महराज की प्रार्थना के पश्चात् सामूहिक रूप से निम्न स्वदेश मन्त्र का उच्चारण किया जाता है।

6.16.2.4 स्वदेश मन्त्र

हे भारत! तुम मत भूलना कि तुम्हारी नारियों का आदर्श सीता-सावित्री-दमयन्ती है ; मत भूलना कि तुम्हारे उपास्य सर्वत्यागी उमानाथ शंकर हैं ; मत भूलना कि तुम्हारा विवाह , धन और जीवन - इन्द्रिय-सुख के लिए - अपने व्यक्तिगत सुख के लिए - नहीं है ; मत भूलना कि तुम जन्म से ही 'माँ' के लिए बलिस्वरूप रखे गये हो ; मत भूलना कि तुम्हारा समाज उस विराट् महामाया की छाया-मात्र है; तुम मत भूलना कि नीच, अज्ञानी, दरिद्र, चमार और मेहतर तुम्हारा रक्त तथा तुम्हारे भाई हैं। हे वीर! सहस का आश्रय लो। गर्व से कहो कि मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है ; कहो कि अज्ञानी भारतवासी , दरिद्र भारतवासी , ब्राह्मण भारतवासी , चाण्डाल भारतवासी सब मेरे भाई हैं ; तुम भी मात्र कमर में ही कपड़ा लपेटकर गर्व से पुकारकर कहो कि भारतवासी मेरा भाई है ; भारतवासी मेरे प्राण हैं; भारत की देव-देवियाँ मेरे ईश्वर हैं; भारत का समाज मेरे बचपन का झूला , मेरी जवानी की फुलवारी और बुढ़ापे की काशी है , भाई, बोलो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है ; भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है; और रात-दिन कहते रहो कि - ''हे गौरीनाथ! हे जगदम्बे! गुझे मनुष्यत्व दो ; माँ, मेरी दुर्बलता और कापुरुषता दूर कर दो; माँ, मुझे मनुष्य बना दो।''

स्वदेश मन्त्र के पश्चात् निम्न माँ सरस्वती की प्रार्थना का सामूहिक रूप से सस्वर गायन किया जाता है।

6.16.2.5 माँ सरस्वती वंदना (प्रार्थना)

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

अज्ञानता से हमें तार दे माँ।

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

अज्ञानता से हमें तार दे माँ।।

तू स्वर की देवी, ये संगीत तुझसे,

हर शब्द तेरा है, हर गीत तुझसे।

हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे,

तेरी शरण में, हमें प्यार दे माँ।।

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

अज्ञानता से हमें तार दे माँ।

मुनियों ने समझी, गुणियों ने जानी,

वेदों की भाषा, पुराणों की बानी।

हम भी तो समझें, हम भी तो जानें,

विद्या का हमको, अधिकार दे माँ।।

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

अज्ञानता से हमें तार दे माँ।

तु श्वेत वर्णी, कमल पे बिराजे,

हाँथों में बीणा, मुकुट सर पे साजे।

मन से हमारे, मिटा दे अंधेरे,

हमको उजालों का, संसार दे माँ।।

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

अज्ञानता से हमें तार दे माँ।

सरस्वती वन्दना के पश्चात् केन्द्र के सभी विद्यार्थी

माँ शारदा माई की ....जय

श्री गुरू महराज की ....जय

श्री विवेकानन्द महराज की............................जय का जयकारा लगाते है।

6.16.3 उपस्थिति

प्रार्थना सत्र के उपरान्त मुख्य आचार्य के द्वारा सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति ली जाती है। सभी विद्यार्थी यस महराज बोलकर और हाँथ उठाकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते है। पहले बालकों की उपस्थिति ली जाती है तथा बाद में बालिकाओं की उपस्थिति ली जाती है।

6.16.4 कक्षा सत्र



कक्षा सत्र चित्र संख्या-6.16.4

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयाग राज केन्द्र में कक्षाओं को निम्न चार समूहों में बाँटकर अध्ययन-अध्यापन कार्य सम्पन्न किया जाता है-

- **प्रथम समूह -** इस समूह में बच्चों को स्वरों का ज्ञान तथा क से ज्ञ तक व्यंजनों का ज्ञान कराया जाता है। इस समूह में कक्षा एक से दो तक के बच्चे अध्ययन करते है , जिनकी उम्र लगभग 5 वर्ष तक होती है। इस समूह में बच्चों को क्लास वर्क भी कराया जाता है और साफ-स्वच्छ लिखने के लिए सभी बच्चों अभ्यास कराया जाता है। इस कक्षा में सोमवार को ड्राइंग बनाने का भी अभ्यास कराया जाता है।
- **द्वितीय समूह -** इस समूह के विद्यार्थियों को अक्षर बोध हो जाता है , वे मात्राओं का प्रयोग करना सीख जाते है। इस समूह में कक्षा 3-4 तक के विद्यार्थी सम्मिलित होते है। इस कक्षा में मंगलवार के दिन बच्चों को आर्ट (ड्राइंग) बनाने का अभ्यास कराया जाता है।
- **तृतीय समूह -** इस समूह के बच्चों को मात्राओं का ज्ञान कराकर मात्राओं से बने वाक्यों, शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट में मात्राओं से युक्त शब्दों को लिखकर समूह के विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। इसके बाद समूह के प्रत्येक विद्यार्थी से श्यामपट्ट में लिखे वाक्यों एवं शब्दों को बोल-2 कर शुद्ध उच्चारण करवाने का अध्यापक द्वारा प्रया किया जाता है। इस समूह में कक्षा 4 से 5 तक के स्तर के विद्यार्थी सम्मिलित होते है। इस कक्षा में बुधवार को ड्राइंग का भी अभ्यास कराया जाता है।
- **चतुर्थ समूह -** इस समूह के विद्यार्थी कक्षा 6 से 8 तक के स्तर के विद्यार्थी होते है इसमें गणित के छोटे-बड़े सवालों एवं अंग्रेजी का अभ्यास कराया जाता है। इस कक्षा में बृहस्पति तथा शुक्रवार को ड्राइंग बनाने का अभ्यास कराया जाता है। शनिवार के दिन पढ़ाई न कराकर विद्यार्थियों को कक्षा सत्र में अलग-अलग समूहों में बाँटकर कहानी, कविता, अन्त्याक्षरी इत्यादि कार्यक्रम कराये जाते है।

6.16.5 अल्पावकाश

इस अवधि में सभी विद्यार्थी-अध्यापकों की निगरानी में लघुशंका तथा पानी पीने हेतु जाते है।

6.16.6 संध्या आरती

अल्पावकाश के पश्चात् विद्यार्थी पंक्तिबद्ध होकर अपने अध्यापकों की निगरानी में मन्दिर-परिसर में जाकर संध्या आरती में सम्मिलित होते है। संध्या आरती निम्न है-

आश्रम-प्रार्थना

श्रीरामकृष्ण-आरात्रिकम्

खण्डन-भवबन्धन, जगवन्दन, वन्दि तोमाय।

निरंजन, नररूपधर, निर्गुण, गुणमय ।। 1 ।।

मोचन-अघदूषण, जगभूषण, चिद्धनकाय।

ज्ञानांजन-विमल-नयन, वीक्षणे मोह जाय ।। 2 ।।

भास्वर भाव-सागर, चिर-उन्मद प्रेम पाथार।

भक्तार्जन युगलचरण, तारण-भव-पार ।। 3 ।।

जृम्भित-युग ईश्वर, जगदीश्वर, योगसहाय।

निरोधन, समाहित मन, निरखि तव कृपाय ।। 4 ।।

भंजन दुखगंजन, करुणाघन, कर्मकठोर।

प्राणार्पण-जगत-तारण, कृन्तन कलिडोर ।। 5 ।।

वंचन-कामकांचन, अतिनिन्दित इन्द्रिय-राग।

त्यागीश्वर, हे नरवर, देहो पदे अनुराग ।। 6 ।।

निर्भय, गतसंशय, दृढ़निश्चयमानसवान।

निष्कारण-भकत-शरण, त्यजि जाति-कुल-मान ।। 7 ।।

सम्पद तव श्रीपद, भव गोष्पद-वारि यथाय।

प्रेमार्पण, समदरशन, जगजन दुख जाय ।। 8 ।।

नमो नमो प्रभु वाक्य-मनातीत मनोवचनैकाधार।

ज्योतिर ज्योति, उजल हृदिकन्दर तुमि तम भंजन हार ।। 9 ।।

धे धे धे लंग रंग भंग, बाजे अंग संग मृदंग।

गाइछे छन्द भकतवृन्द, आरति तोमार ।। 10 ।।

जय जय आरति तोमार।

हर हर आरति तोमार।

शिव शिव आरति तोमार।।

।। जय श्री गुरु महाराज जी की जाय।।

6.16.7 स्वल्पाहार

संध्या आरती के बाद सभी विद्यार्थियों के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था है , जिसमें बच्चों को पौष्टिक आहार , दलिया, नमकीन, दूध, फल और अंकुरित अनाज दिया जाता है। बच्चे टोली बद्ध होकर अपना भोजन आपस में बाँटते खाते है , जिससे बच्चों में एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव विकसित होता है। भोजन करने से पहले सभी बच्चों द्वारा भोजन मंत्र का सस्वर वाचन किया जाता है। भोजन मंत्र निम्नवत् है-

हरिः ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्य करवावहै।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।



स्वल्पाहार **चित्र संख्या-6.16.7**

6.16.8 प्रच्छालन व्यवस्था

स्वल्पाहार के पश्चात् सभी विद्यार्थी अनुशासन के साथ अपने अध्यापकों की उपस्थिति में पंक्तिबद्ध जाकर हस्त प्रच्छालन करते है। तदुपरान्त पात्र प्रच्छालन भी किया जाता है। प्रयास यह रहता है कि पात्र प्रच्छालन में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रहे जिससे कि वह सुव्यवस्थित और अनुशासित जीवन की शिक्षा प्राप्त कर सके।



प्रच्छालन व्यवस्था चित्र संख्या-6.16.8

6.16.9 शिक्षाप्रद कहानी/गीत/फिल्म सत्र

स्वल्पाहार प्रच्छालन व्यवस्था के बाद समूह का प्रत्येक विद्यार्थी अपने सहपाठियों को महापुरुषों की कहानियाँ तथा गीत , चुटकुला आदि सुनते सुनाते है। इसी सत्र में टी 0वी0 पर डाक्यूमेन्ट्री व प्रेरणादायक विषयों पर फिल्में , हमारी राष्ट्रीय विरासत और संस्कृति को उजागर करने के लिए छात्रों को दिखाई जाती है।



शिक्षाप्रद कहानी/गीत/फिल्म सत्र चित्र संख्या-6.16.9

6.17 प्रशिक्षण तथा सुविधाएँ

गदाधर अभ्युदय प्रकल्प प्रयागराज केन्द्र में कम्प्यूटर प्रशिक्षण , बुनाई और सिलाई प्रशिक्षण, ड्राइंग, शारीरिक शिक्षा की कक्षाओं के साथ प्रारम्भिक शिक्षा , बुनियादी चरित्र निर्माण के लिए नियमित रूप से आयोजित की जाती है। केन्द्र में 7 कम्प्यूटर तथा 5 सिलाई मशीनें प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध है।

इस केन्द्र में ड्रेस , पौष्टिक भोजन, दूध, स्थिर वस्तुएँ और स्वच्छता किट , स्कूल बैग, शीतकालीन वस्त्र , नोटबुक, पेन, पेन्सिल, इरेजर, किताबे, छतरियाँ/रेनकोट, जूते तथा अन्य जरूरतमन्द समान प्रदान किए जाते है। ये सभी सुविधाएँ संस्थान द्वारा निःशुल्क प्रदान की जाती है।



प्रशिक्षण तथा सुविधाएँ चित्र संख्या-6.17

6.18 स्वास्थ्य जाँच

विद्यार्थियों के शरीर के वनज और ऊँचाई आदि की निगरानी के लिए समय- 2 पर स्वास्थ्य जाँच का आयोजन किया जाता है। मिशन के इस आयोजन में डॉ0 पी0 अवस्थी के द्वारा बच्चों की प्रारम्भिक जाँच की जाती है और उन्हें सामान्य इलाज मुहैया कराया जाता है।

6.19 अभिभावक साक्षात्कार



अभिभावक साक्षात्कार चित्र संख्या-6.19



अभिभावक साक्षात्कार चित्र संख्या-6.19

प्रश्न- आपका क्या नाम है ?

उत्तर- विमला केशरवानी।

प्रश्न- आपके बच्चे का क्या नाम है ?

उत्तर- आयुष केशरवानी

प्रश्न- आप इस बच्चे की रिस्ते में क्या लगती है ?

उत्तर- दादी

प्रश्न- आपके परिवार का व्यवसाय क्या है ?

उत्तर- प्राइवेट नौकरी

प्रश्न- आपका परिवार यहाँ कहाँ रहता है ?

उत्तर- नई बस्ती कीटगंज प्रयागराज

प्रश्न- आपका यह बच्चा इस संस्थान में कब से पढ़ने के लिए जा रहा है ?

उत्तर- अभी लगभग 2 माह से

प्रश्न- वर्तमान में आपके बच्चे की आयु कितनी है ?

उत्तर- लगभग 11 वर्ष

प्रश्न- संस्थान में जाने से बच्चे के कार्य व्यवहार में कुछ परिवर्तन हुआ है, कि नहीं?

उत्तर- इसके व्यवहार में कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ है। अभी तो यह छोटा है, लेकिन कभी-2 घर में ये स्वामी जी के द्वारा सिखाये गये ज्ञान की बातों का घर में चर्चा करता है।

प्रश्न- क्या आपका यह बच्चा इस संस्थान के अलावा और कहीं नामांकित है ?

उत्तर- हाँ , महर्षि दयानन्द इंग्लिश मीडियम स्कूल प्रयागराज में कक्षा-4 में नामांकित है।

प्रश्न- क्या आपने स्वयं ही अपने बच्चे को इस संस्थान में नामांकित कराया है या संस्थान के प्रतिनिधि के सम्पर्क से इस बच्चे का नामांकन कराया है?

उत्तर- नहीं , हम स्वयं ही महराज जी से सम्पर्क करके अपने बच्चे को इस संस्थान में नामांकित कराया है?

प्रश्न- इस कोचिंग संस्थान से क्या- 2 सहायता मिलती है।

उत्तर- बच्चे को पढ़ने की सामग्री से लेकर बच्चे को संतुलित आहार एवं दूध भी मिलता है। साथ ही कपड़े आदि भी संस्थान द्वारा प्रदान किये जाते है।

प्रश्न- क्या आपको इस संस्थान में कभी बुलाया जाता है।

उत्तर- हाँ , जब हमारा बच्चा कोई गलती करता है , शरारत करता है तो हमें महराज जी द्वारा बुलाया जाता है।

¤ ¤ ¤ ¤ ¤

7.1 निष्कर्ष

रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट कि रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक दर्शन में शिक्षा की अहम् भूमिका है। शोध कर्त्ता को रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- निषधोत्मक विचार लोगों को दुर्बल बना देते है।
- सारे प्राणियों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना है।
- शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है।
- हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है , जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो।
- मन की एकाग्रता ही शिक्षा का सम्पूर्ण सार है।
- एकाग्रता की शक्ति ही ज्ञान के खजाने की एक मात्र कुंजी है।
- कार्य ध्येय की सिद्धि है और कारण साधन है।
- हमें वही मिलता है, जिसके हम पात्र होते है।
- हमें ऐसी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए , जिससे चरित्र बने, मानसिक बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो, जिससे प्रत्येक मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ हो सके।
- सभी प्रशिक्षणों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना ही है।
- पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने से प्रबल बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न होती है तथा वासनाओं को वश में कर लेने से उत्कृष्ट फल प्राप्त होते है।
- सदैव और सभी अवस्थाओं में मन , वचन और कर्म से पवित्र रहना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है।
- भलाई और बुराई दोनों का चरित्र-गठन में समान स्थान है और कभी- 2 तो सुख की अपेक्षा दुःख ही बड़ा शिक्षक होता है।

- मनुष्य की आत्मा स्वभाव से ही स्वयं प्रकाशित है अतः हमारे लिए प्रकाश का अस्तित्व सदा से ही है।
- सम्पूर्ण शिक्षा तथा समस्त अध्ययन का एकमेव उद्देश्य है। इस व्यक्तित्व को गढ़ना।
- सूक्ष्मतम् को हम आत्मा कहते है और स्थूलतम् को शरीर कहते है। सबसे अधिक शक्ति सूक्ष्म में होती है, स्थूल में नहीं।
- हमारे देश में ज्ञान का दान सदा त्यागी पुरुषों द्वारा ही होता आया है अतः ज्ञान दान का भार पुनः त्यागियों के कन्धों पर पड़ना चाहिए।
- भारतवर्ष की पुरानी शिक्षा प्रणाली वर्तमान प्रणाली से बिल्कुल भिन्न थी। विद्यार्थियों को शुल्क नहीं देना पड़ता था। ऐसी धारणा थी कि ज्ञान इतना पवित्र है कि उसे किसी मनुष्य को बेचना नहीं चाहिए। ज्ञान का दान मुक्त हस्त होकर बिना कोई दाम लिए करना चाहिए।
- गुरू के सम्बन्ध में यह जान लेना आवश्यक होता है कि उन्हें शास्त्रों का मर्म ज्ञात हो , जो शास्त्रों के वास्तविक मर्मज्ञ है, वे ही असल में सच्चे धार्मिक गुरू है।
- प्राचीन धर्मों ने कहा कि 'वह नास्तिक है , जो ईश्वर विश्वास नहीं करता। ' नया धर्म कहता है कि 'नास्तिक वह है, जो स्वयं में विश्वास नहीं करता'।
- जब हृदय और मस्तिष्क का द्वन्द्व उपस्थित हो , तब हृदय का ही अनुसरण करना चाहिए।
- हमारी उन्नति का एकमात्र उपाय यह है कि हम पहले वह कर्त्तव्य करें, जो हमारे हाँथ में है। किसी भी कर्त्तव्य को घृणा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।
- जन शिक्षा के माध्यम से जीवन के हर शैक्षिक पहलू को आध्यात्मिक बनाना चाहिए।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा जन शिक्षा , स्त्री शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया गया है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में देश-विदेश में अनेकों कार्य परिचालित किए जा रहे है। मिशन द्वारा शिक्षण संस्थानों की स्थापना प्रमुख रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े

क्षेत्रों में की गई है। रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित विभिन्न शैक्षिक संस्थानों का विवरण निम्नवत् है-

- रामकृष्ण मिशन द्वारा एक (01) विश्वविद्यालय, एक (01) कला और विज्ञान कालेज, एक (01) संस्कृत कॉलेज, एक (01) अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाएँ, एक (01) शारीरिक शिक्षा के कालेज तथा एक (1) संस्कृत विद्यालय संचालित है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा दो (02) पालिटेक्निक कालेज , दो (02) जूनियर तकनीकी एवं औद्योगिक विद्यालय, दो (02) इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर, दो (02) ग्रामीण विकास प्रशिक्षण संस्थाएँ तथा दो (02) राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान केन्द्र की भी स्थापना की गयी है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा चार (04) जूनियर बेसिक प्रशिक्षण संस्थाएँ तथा चार (04) कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा आठ रात्रिकालीन विद्यालय/प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की स्थापना की गयी है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा बारह (12) उच्च माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की गयी है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा चैदह (14) जूनियर हाईस्कूल/मिडिल स्कूल की स्थापना की गयी है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा पच्चीस (25) माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की गयी है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा पैतालिस (45) व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा पचास (50) प्राथमिक विद्यालय , 50 अन्य शिक्षण केन्द्रों की स्थापना की गयी है।

- रामकृष्ण मिशन द्वारा इक्यावन (51) छात्रावास/स्टूडेन्ट्स होम की स्थापना की गयी।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा एक सौ सात (107) अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गयी।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा एक सौ तैंतीस (133) शिशु सदन संचालित है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा दो सौ पन्द्रह (215) कोचिंग सेन्टरों की स्थापना की गयी है।

इस प्रकार मिशन द्वारा 734 विविध शैक्षणिक संस्थान/प्रकल्प संचालित है, जिनमें लगभग एक लाख से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं।

- रामकृष्ण मिशन द्वारा समय-समय पर निम्न व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं-
  - दुग्ध, मुर्गीपालन, बत्तख पालन, बकरी पालन आदि
  - मत्स्य पालन, पक्षी पालन, मधुमक्खी पालन, रेशम कीट पालन आदि
  - कृषि बागवानी, पुष्पों का अध्ययन आदि
  - कार्बनिक खेती, जैविक खाद आदि
  - मशरूम की खेती
  - फसलों की देखभाल
  - कृषक प्रशिक्षण एवं अनुकूलन
  - फसल चक्र
  - शिल्प कला
  - कटाई, सिलाई, डिजायनिंग (नमूना), कढ़ाई करना आदि
  - मोटर ड्राइविंग
  - मोटन वाहन सेवा और मरम्मत
  - वेल्डिंग, बाइंडिंग निर्माण करना आदि

- ➢ राजमिस्त्री गिरी, प्लम्बरिंग आदि
- ➢ काष्ठ कर्म, छत की मरम्मत, फ्रेमिंग आदि
- ➢ घरेलू उपकरणों के मरम्मत का काम
- ➢ इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रानिक सामानों की रिपेयरिंग
- ➢ तार मिस्त्री एवं मोटर बाँधना आदि
- ➢ भौतिक चिकित्सा/अस्पताल/वार्ड/ओटी सहायक
- ➢ बेसिक कम्प्यूटर आपरेशन्स
- ➢ बेसिक कम्प्यूटर हार्डवेयर
- ➢ वाणिज्यिक कला और पेंटिंग
- ➢ फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी
- ➢ अन्य

उपर्युक्त व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत कुल 615 बैचों में लगभग 35 हजार व्यक्ति लाभान्वित हो चुके हैं।

- रामकृष्ण मिशन द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक ईकाइयाँ जैसे-बालक संघ , ज्ञानवाहिनी आदि कार्यरत है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा सांस्कृतिक कैम्पस के अन्तर्गत निम्न इकाईयाँ कार्यरत हैं-
  - ➢ व्यक्तित्व विकास आदि में 26 ईकाइयाँ संचालित है।
  - ➢ योगाध्यान आदि में 24 ईकाइयाँ संचालित है।
  - ➢ बच्चों के कैम्प (छुट्टियों के समय में शामिल) में 114 ईकाइयाँ संचालित है।
  - ➢ मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में 326 ईकाइयाँ संचालित है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा सांस्कृतिक कैम्पस के अन्तर्गत शैक्षिक क्षेत्र (विज्ञान , साहित्य आदि) में 33 तथा अन्य क्षेत्रों में कार्यशाला , संगोष्ठी तथा सेमिनार आयोजित किए जाते है।

- रामकृष्ण मिशन द्वारा ग्रामीण तथा आदिवासी लोगों की सेवा के लिए 8 श्रव्य-दृश्य इकाईयाँ संचालित है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा ग्रामीण तथा आदिवासी लोगों की सेवा के लिए 28 सार्वजनिक पुस्तकालय तथा 47 स्कूल/कालेज पुस्तकालयों की स्थापना की गयी।

इस प्रकार मिशन द्वारा 801 सांस्कृतिक शिविर, सेमीनार, कार्यशाला इत्यादि के माध्यम से लगभग 80 हजार से अधिक व्यक्ति लाभान्वित हुए है।

- रामकृष्ण मिशन द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में संचालित पिछड़े एवं सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत गदाधर अभ्युदय प्रकल्प शैक्षिक उत्थान हेतु एक अभिनव योजना है जिसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नवत् है-
    - सत्र की शुरूआत परिसर की साफ-सफाई तथा प्रार्थनाओं से होती है।
    - विद्यार्थियों को स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जैसे-शौचालय अभ्यास, सुरक्षित पीने के पानी की व्यवस्था , दाँतों की सफाई, हाँथ धोना, नाखून काटना, रात में मच्छरदानी का उपयोग करना आदि।
    - गदाधर अभ्युदय प्रकल्प द्वारा विद्यार्थियों में अपने रहने वाले क्वार्टर और अपने आस-पास के पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में सामुदायिक भागीदारी की भावना विकसित की जाती है।
    - गदाधर अभ्युदय प्रकल्प में प्रत्येक दिन के कार्यक्रम के अन्त में कुपोषण का सामना करने के लिए सभी विद्यार्थियों को पौष्टिक भोजन , दूध, फल आदि प्रदान किए जाते है।
    - गदाधर अभ्युदय प्रकल्प के विद्यार्थियों को समय-समय पर निम्न वस्तुएँ निःशुल्क प्रदान की जाती है-

- स्कूल बैग
- छतरियाँ
- साबुन
- स्कूल ड्रेस
- रेनकोट
- तेल
- नोटबुक
- जूते
- नाखून क्लिपर
- पेन
- टूथपेस्ट
- पेंसिल
- किताबें
- टूथब्रुश
- इरेजर
- जीभ क्लीनर
- अन्य जरूरत मन्द समान आदि

➢ गदाधर अभ्युदय प्रकल्प में विद्यार्थियों का अनुशासन देखते ही बनता है , वे स्वानुशासन में रहकर सभी क्रियाकलाप सम्पादित करते है।



सामग्री वितरण चित्र संख्या-7.1

7.2 शैक्षिक उपादेयता

- रामकृष्ण मिशन द्वारा स्त्री शिक्षा , जन शिक्षा, धार्मिक शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया है। रामकृष्ण मिशन द्वारा स्त्री शिक्षा, जन शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा पर बल दिया जाना आज पूर्णरूपेण प्रासंगिक है क्योंकि जब तक इस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था सुसंगठित एवं सुचारू रूप से नहीं होगी तब तक शिक्षोन्नति एवं राष्ट्रोन्नति की कोई सम्भावना नहीं है।

- रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक दर्शन इस विश्व को समस्त उत्पीड़नों से मुक्त कर सम्पूर्ण मानव जाति को सुखी जीवन बिताने का मार्ग प्रस्तुत कर सकता है।
- रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक दर्शन को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए।
- गदाधर अभ्युदय शैक्षिक प्रकल्प का यह मानना है कि सभी बच्चों में कुछ न विशेष गुण होता है, उसको प्रकट करने का अवसर इन बच्चों को मिलना चाहिए।
- गदाधर अभ्युदय प्रकल्प में सत्र की शुरूआत परिसर की साफ-सफाई से की जाती है। यह एक अच्छी परम्परा है। वर्तमान हमारे प्रधानमंत्री जी द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। स्वयं साफ-सफाई करने के कारण विद्यार्थियों में स्वच्छता के प्रति सही दृष्टिकोण का निर्माण होगा। इस परम्परा को प्रत्येक विद्यालय द्वारा अपनाये जाने की आवश्यकता है।
- गदाधर अभ्युदय प्रकल्प में प्रत्येक दिन के कार्यक्रम के अन्त में कुपोषण का सामना करने के लिए सभी विद्यार्थियों को पौष्टिक भोजन , दूध, फल आदि प्रदान किए जाते है। इससे प्रेरणा प्राप्त कर मिड-डे-मील योजना में सुधार कया जाना चाहिए। साथ ही अन्य गैर अनुदानित विद्यालयों में भी इस प्रकार का पौष्टिक स्वल्पाहार विद्यार्थियों को प्रदान किया जाना चाहिए।
- गदाधर अभ्युदय प्रकल्प के विद्यार्थियों को समय-समय पर निम्न वस्तुएँ निःशुल्क प्रदान की जाती हैं-

  - स्कूल बैग
  - छतरियाँ
  - साबुन
  - स्कूल ड्रेस
  - रेनकोट
  - तेल
  - नोटबुक
  - जूते
  - नाखून क्लिपर
  - पेन
  - टूथपेस्ट
  - पेंसिल
  - किताबें
  - टूथब्रुश
  - इरेजर
  - जीभ क्लीनर
  - अन्य जरूरत मन्द समान आदि

इससे प्रेरणा प्राप्त कर प्रशासन द्वारा परिषदीय विद्यालयों में उपर्युक्त निःशुल्क सामग्री वितरण की सूची को समृद्ध किया जाना चाहिए।

- गदाधर अभ्युदय प्रकल्प में प्रार्थना सत्र में वैदिक मन्त्र , देश भक्ति गीत, गुरू प्रार्थना, स्वदेश मंत्र तथा सरस्वती वन्दना का गायन प्रतिदिन किया जाता है इससे प्रेरणा प्राप्त कर अन्य विद्यालयों में भी समय- 2 पर वैदिक मंत्र एवं स्वदेश मंत्र इत्यादि का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

7.3 अध्ययन के सुझाव

- आज की परिस्थिति में स्वामी विवेकानन्द के विचारों पर आधारित रामकृष्ण मिशन की शिक्षाएँ तथा उनका सन्देश हमारे लिए कितना मूल्यवान है , इसे आंकना सहज नहीं है। हमारे राष्ट्रीय जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं, ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका हम हमें उनकी शिक्षाओं में न मिल जाता हो-वे समस्यायें चाहे किसी व्यक्ति की हों , समाज की हों अथवा देश की हों।
- रामकृष्ण मिशन शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्था है जो विशेषकर गरीब , ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्र के विद्यार्थियों को सफलतापूर्वक मार्गदर्शन कर रही है। भारत सरकार द्वारा 'सर्वशिक्षा अभियान' संचालित किया जा रहा है। रामकृष्ण मिशन विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से लगभग एक लाख से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा दान देकर सर्व शिक्षा अभियान सहभागिता निभा रहा है।
- देश के चारित्रिक विकास एवं विश्वबन्धुत्व से प्रेरित इस रामकृष्ण मिशन की संस्थाएँ देश के कोने-कोने में स्थापित की जानी चाहिए जिससे हमारे राष्ट्र का निर्माण सही अर्थों में और ठीक ढंग से हो सके।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा स्थापित संस्थाएँ शिक्षा के क्षेत्र में नित-नूतन आयाम गढ़ रही है, अतः मिशन के शिक्षण संस्थानों (विश्वविद्यालय , महाविद्यालय, शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान, संस्कृत विद्यालय- महाविद्यालय , उच्च माध्यमिक विद्यालय , माध्यमिक

विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय इत्यादि) की अच्छाइयों/विशेषताओं को अन्य शिक्षण संस्थानों द्वारा अंगीकृत किया जाना चाहिए।

- रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित गदाधर अभ्युदय प्रकल्प वंचित समूहों के क्षेत्र में अधिकाधिक खोले जाने की आवश्यकता है।
- शोधकर्त्ता की यही धारणा है कि रामकृष्ण मिशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अप्रतिम है। रामकृष्ण मिशन के शैक्षिक प्रयासों को अधिकाधिक विस्तारित किए जाने की आवश्यकता है इस हेतु सरकार एवं समाज का अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है, ताकि देश में भारतीय जीवन मूल्यों से मुक्त आधुनिक शिक्षा का स्वप्न स्वीकार किया जा सके।

7.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों एवं अन्य शिक्षण संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन।
- भावी शोध में रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित अन्य गदाधर अभ्युदय प्रकल्पों का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित अन्य शिक्षण संस्थानों/ प्रकल्पों का गहन अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में रामकृष्ण मिशन जैसी सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्यरत अन्य संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया जा सकता है। यथा-
  - चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान
  - विश्व जागृति मिशन का शैक्षिक योगदान
  - ISKCON का शैक्षिक योगदान
  - विवेकानन्द केन्द्र का शैक्षिक योगदान इत्यादि

¤ ¤ ¤ ¤ ¤

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) रोमां रोलां: विवेकानन्द , अनु0-सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन अज्ञेय एवं रघुवीर सहाय (2019). इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

(2) रोमां रोलां: विवेकानन्द की जीवनी , अनु0-डॉ0 रघुराज गुप्त (2015). कोलकाता: अद्वैत आश्रम।

(3) रोमां रोलां: स्वामी विवेकानन्द जीवनी और विचार , अनु0-एस0एम0 चाँद (1999). जयपुर: श्याम प्रकाशन।

(4) स्वामी विवेकानन्द (2016). शिक्षा. नागपुर: रामकृष्ण मठ

(5) स्वामी तेजसानन्द: रामकृष्ण संघ आदर्श और इतिहास , अनु0-स्वामी आत्मानन्द (2003). नागपुर: रामकृष्ण मठ

(6) स्वामी रंगनाथानन्द: आधुनिक भारत के निर्माण में शिक्षकों का कर्त्तव्य और दायित्व, अनुवादक - डॉ0 केदारनाथ लाभ (2014). नागपुर: रामकृष्ण मठ।

(7) स्वामी अपूर्वानन्द: श्रीरामकृष्ण संक्षिप्त जीवनी तथा उपदेश , अनु0-स्वामी विदेहात्मानन्द (2018). नागपुर: रामकृष्ण मठ

(8) अग्रवाल, तनूजा (1998). विशिष्ट समूहों की शैक्षिक उपलब्धि के मनोसामाजिक संज्ञानात्मक तथा असंज्ञानात्मक कारक-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. पी-एच 0डी0 (शिक्षा) शोध-प्रबन्ध , दयाल बाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा <http://hdl.handle.net/10603/207692>

(9) कुमारी, मंजू (2005). मलिन बस्तियों में निवास करने वाले विशिष्ट जाति समूह की लड़कियों का शैक्षिक व्यावसायिक स्तर तथा उनकी शिक्षा के प्रति अभिभावक अभिमत. पी-एच 0डी0 (शिक्षा) शोध प्रबन्ध , दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा <http://hdl.handle.net/10603/207595>

(10) कुमार, दीपक (2008). स्वामी विवेकानन्द की सामाजिक इंसाफ की अवधारणा और उसका प्रभाव-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. पी-एच 0डी0 (इतिहास) शोध-प्रबन्ध , चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ <http://hdl.handle.net/10603/114218>

(11) गुप्ता, सत्येन्द्र (2005). बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षणिक योगदान का अध्ययन , पी-एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी <http://hdl.handle.net/10603/13596>

(12) सिंह, रेनू (2008). भारत में छत्रपति शाहू जी महराज का शैक्षणिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षणिक उत्थान में पी-एच 0डी0 (शिक्षा) शोध-प्रबन्ध , बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी <http://hdl.handle.net/10603/12262>

(13) दास, राम (2014). उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के सन्दर्भ में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों का अध्ययन. पी-एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) शोध-प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

<http://hdl.handle.net/10603/42968>

(14) मेहता, सत्यप्रकाश (2009-11). स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता पी-एच 0डी0 (विद्या वाचस्पति शिक्षा) शोध-प्रबन्ध, श्री जगदीश प्रसाद झाबर मल टिबरे वाला विश्वविद्यालय , विद्यानगरी, झुंझनूं राजस्थान <http://hdl.handle.net/10603/8852>

(15) द्विवेदी, भानु प्रताप (2007). बदलते शैक्षिक परिवेश में बौद्ध-शिक्षा दर्शन की उपादेयता का अध्ययन. पी-एच 0डी0 (शिक्षाशास्त्र) शोध-प्रबन्ध , वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर <http://hdl.handle.net/10603/179726

(16) भटनागर, मोहित किशोर (2007). विवेकानन्द के दर्शन में नैतिक मूल्य के स्वरूप का विश्लेषण. डी0फिल0 शोध-प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

(17) वर्मा, चन्दा (1997). रामकृष्ण विवेकानन्द दर्शन में अद्वैत की भूमिका डी 0फिल0 (संस्कृत) शोध-प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

(18) गुप्ता, नीलेश (2013-14) रामकृष्ण मिशन का शिक्षा में योगदान एम 0एड0 उपाधि हेतु अप्रकाशित लघु शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

(19) मिश्रा, सुषमा (2012). स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रीय , राजनीतिक विचारों का अध्ययन : वर्तमान युवा शक्ति के विशेष सन्दर्भ में पी-एच 0डी0 (राजनीति शास्त्र) शोध-प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय, कानपुर

(20) रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम इलाहाबाद

<https://translate.googleusercontent.com/translate_c?depth=1&hl=hi&nv=1&prev=search&rurl=translate.google.com&sl=en&sp=nmt4&u=https://belurmath.org/ramakrishna-math-and-ramakrishna-mission-sevashrama-allahabad/&xid=17259,15700002,15700023,15700186,15700191,15700256,15700259,15700262,15700265&usg=ALkJrhh2C22z3Om-KXXhWcjXYrEyeIqjng>

(21) रामकृष्ण परमहंस का जीवन परिचय जन्म विवाह मृत्य इत्यादि

<https://www.vedicaim.com/2018/02/ram-krishna-paramhans-jivani.html?m=1>

(22) रामकृष्ण का जीवन परिचय और जयंती 2019

<https://www.deepawali.co.in/ramakrishna-paramahamsa-biography-jayanti-hindi.html>

(23) MAED-06 (N) शिक्षा में सामाजिक मुद्दे. उ 0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय , इलाहाबाद PDF

<https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=http://www.uprtou.ac.in/other_pdf/MAED-06(N).pdf&ved=2ahUKEwijsKH704_kAhXGgI8KHY6WC5kQFjAAegQIAhAB&usg=AOvVaw0-yZqVAofF7ptl8EPQiDtw>

(24) Educational Services-Belur Math-Ramakrishna Math and Ramakrishana Mission < https://belurmath.org/education-services/>

(25) भारतीय शिक्षा का इतिहास-विकीपीडिया

<https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%25E0%25A4%25AD%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25B0%25E0%25A4%25A4%25E0%25A5%2580%25E0%25A4%25AF_%25E0%25A4%25B6%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%2595%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25B7%25E0%25A4%25BE_%25E0%25A4%2595%25E0%25A4%25BE_%25E0%25A4%2587%25E0%25A4%25A4%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%25B9%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25B8&ved=2ahUKEwiWuYGx1Y_kAhXHfisKHew2Av8QFjAAegQIAhAB&usg=AOvVaw0NBriKz1nIdcqpxUDGau3z>

(26) रामकृष्ण मिशन- विकीपीडिया

<https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%25E0%25A4%25B0%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25AE%25E0%25A4%2595%25E0%25A5%2583%25E0%25A4%25B7%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25A3_%25E0%25A4%25AE%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%25B6%25E0%25A4%25A8&ved=2ahUKEwiluo3R1o_kAhXWdCsKHQG2AjwQFjAAegQIBxAC&usg=AOvVaw0QUW4NjHHKxLyLPJsJ8zJx>

(27) शैक्षिक का हिन्दी में मतलब Raftaar शब्दकोश के अनुसार

<https://shabdkosh.raftaar.in/Meaning-of-%E0%A4%B6%E0%A5%88%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BF%E0%A4%95-in-Hindi>

(28) योगदान का हिन्दी में मतलब Gyan App

<https://gyanapp.in/dictionary/hindi-hindi/73997/%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%97%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%A8>

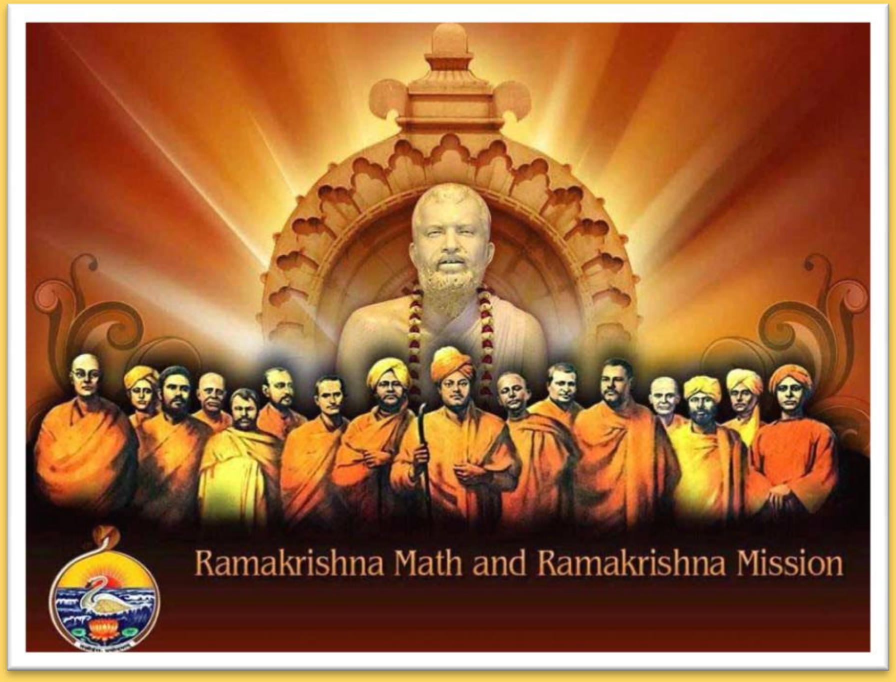
(29) वर्णनात्मक अनुसंधान के प्रकार और लक्षण

<https://hi.thpanorama.com/articles/ciencia/investigacin-descriptiva-tipos-y-caractersticas.html>

(30) वर्णनात्मक अनुसंधान विधि PDF शोध गंगा

<http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/29975/12/12_chapter%205.pdf>

रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान



जो मनुष्य बिना किसी स्वार्थ के दूसरों के लिए कार्य करता है,

वह वास्तव में स्वयं का भला करता है।

—रामकृष्ण परमहंस

ISBN 978-93-5659-166-0